[illegible] विगेरे [illegible]

[illegible]

देव मन्दिरात् नाम नेला कला: पवनी। गोनायने, [illegible]

नाग विद्वान पुरुषो देखवामां आवता नथी अने तेज कारणथी पाश्चात्य विद्वानोनी भूगोलसंबंधीनी समज जैनदर्शनशास्त्रोनी भूगोलसंबंधीनी समजथी विरुद्ध थतां अति संतोषकारक समाधान थइ शकतुं नथी. पाश्चात्योनी शोधो साधकोने श्रद्धाहीन बनावी दे छे. जैनदर्शनानुयायी भूगोलसंबंधी पोतानी समजमां दृढ थतां अर्थात् पोतानी समज आप्त प्रणीत आगमानुसार छे एवी तेमनी दृढ श्रद्धा थतां तेवी समज बीजाओनी थाय तेवुं करवा पाश्चात्य विद्वानो जैन ग्रंथमात्र प्रकाश करता नथी. अथवा जे कांइ प्रकाश वर्तमानमां तेओना देखवामां आवे छे ते यत्‌किंचित् मात्र छे. आवा अतिगहन विषयनी जैन सिद्धांतानुसार सत्य समज मेळववाथी दृढ श्रद्धा वाळाए पुस्तक छपावी प्रगट करी ज्ञान संपादन थइ तेवा प्रयोगो अभ्यास करवानी जरुर छे परन्तु आ विषयनां जैनीओना ज्योतिष गणितना विरुद्ध ना अल्प संख्यामां देखवामां आवे छे ते अति खेदकारक छे.

जैनमां ज्योतिषना ग्रंथो जेवा के ज्योतिष्करंड, लग्नशुद्धि, मुहूर्त मुक्तावली, नारचन्द्र, ज्योतिषसार,

नो रचेलो ग्रंथ आटलो स्वल्प होय एम अंतःकरण कबुल करतुं नथी. ते ग्रंथ वाराही संहिता करतां पण अति विस्तारवालो होवो जोइए. अनेक रत्न ग्रंथो जेम काल माहात्म्यथी नाश पाम्या छे तेम आ ग्रंथनी पण तेवी दशा थइ होय तेम जासे छे. श्रीजद्रबाहु संहिता नामना ग्रंथनी महत्वता अति छतां आ प्रसिद्ध थयेला जाषांतररूप ग्रंथनी महत्वता जो जनसमुदायने अल्प लागे तो तेनो दोष पंचमकालने शिर छे.

श्रीजद्रबाहु संहिता नामनो ग्रंथ मूल साथे जाषांतर एवी रीते प्रसिद्ध करवानी सूचना मने अनेक जिज्ञासुर्ज तरफथी थइ अने ते ग्रंथ प्रसिद्ध तेवीजरीते करवो एवो में निश्चय पण कर्यो. दरमीयान तपास करतां श्रावक हीरालाल हंसराजे मने जणाव्युं के श्रीजद्रबाहु संहिता नामनो ग्रंथ तेने प्राप्त थयो छे अने मूल सहित जाषांतरनो ग्रंथ छपावाशे. मजकुर हीरालाले तेनी पासेना ग्रंथनुं जाषांतर करी मारी उपर छपाववा सारु मोकल्युं, परंतु साथे मूल ग्रंथ नहीं होवाथी में तेनी पासे मूल ग्रंथनी मागणी करी. जे मागणीनी अवगणना करी तेणे मने मूल

मने मूलग्रंथनी मदद आपशे तो तेनो आभार मानी मूल ग्रंथसाथे भाषांतर एवी रीते बीजी आवृत्ति प्रसिद्ध करीश.

मुंबई
संवत१९५५ ली० प्रसिद्धकर्त्ता.
फागणवद २.



तीर्थने स्वर्गने अन्यदर्शनीओना तीर्थनो आश्रय करी शकशो नहीं. ते दिव्यज्ञान सर्व प्राणीओने सुख क-रनारुं छे, तेमां पण परकीय पिंड उपर आजीविका चलावनारा भिक्षुओने तो विशेषे करीने सुख करना-रुं थइ पडशे. वली द्वादशांगी घणां विस्तारवाली छे अने भिक्षुओ (साधुओ) तो अल्पबुद्धिवाला थवा-ना छे तेथी तेओना उपकार माटे पण आप ते दि-व्यज्ञान कही संभलावशो. उपर बतावेलां सघलां कारणोने आप ध्यानमां लेइने जेम सुखेथी स्पष्ट रीते समजी शकाय अने जेथी शिष्योने हितकारी थाय एवुं श्रीवीतराग प्रभुए कहेलुं निमित्त ज्ञान अमोने कृपा करी कहो के जे निमित्त ज्ञानमां नीचे लखेली बाबतोनुं स्पष्ट विवेचन आवी जाय.

उल्कापात, परिवेष, विजलीओ, वादला, संध्या-राग, वरसाद, वायु, वृष्टि, गंधर्वनगर, गर्भो, यात्रा-उत्पात, ग्रहोनी चाल, ग्रहयुद्ध, वातावरण, स्वप्नवि-चार, मुहूर्तो, तिथिओ, करणो, निमित्तज्ञान, शुकन-ज्ञान, पाकज्ञान, ज्योतिषज्ञान, कालज्ञान, वास्तुज्ञा-न, ऐंद्रज्ञान, लक्षणज्ञान, व्यंजनज्ञान, चिन्हज्ञान-

लग्नविधि, औषधो, सर्वनिमित्तोनुं बलाबल, विरोधज्ञान अने पराजयज्ञान.

उपरनी बाबतोनुं दिव्यज्ञान अमोने संजलावशो एटले सर्वने अपूर्व लाज थशे.

ते सांजली चौदपूर्वधारी (केवली प्रजु समान जाणनारा) एवा श्रीजद्रबाहुस्वामिए कह्युं के, हे जिक्षुर्ज आगामी कालमां साधुर्ज तथा श्रावकोना हितने माटे हुं तमोने उपयोगी थाय तेटली बाबतोनुं दिव्यज्ञान एकावन अध्यायो रचीने कहीश, ते तमो समताथी सांजलजो.

इति नैग्रंथके जद्रबाहुके निर्मिते ग्रंथसमुच्चयो नाम प्रथमोऽध्यायः १

अध्याय २ जो.

श्रीजद्रबाहु स्वामिनो प्रत्युत्तर.

श्रीजद्रबाहु स्वामिए शिष्योने कह्युं के, हे जिक्षुर्ज, तमोए मने श्रीअरिहंत प्रजुए कहेला निमित्त ज्ञाननु स्वरूप कहेवाने कह्युं, तो तेहुं तमोने हवे प्रगटरीते विस्तारथी कहुं छुं, ते तमो शमता पूर्वक यथाविधि सांजलजो. जे वस्तुमां तेना मूल स्वजावथी

अथवा तारा, ग्रह, विजली, तथा मेघ धनुष्यनी साथे उल्काना विकारो कहेवायछे अने तेना पडवाथी शुभाशुभ फलप्राप्त थायछे. तेमां तारानुं प्रमाण नानुं होय छे. ग्रहनुं तेथी बमणुं होयछे. विजली विशाल, कुटिल तथा झबुका मारती होयछे. मेघधनुष्य अर्धचंद्रना आकारनुं होयछे अने उल्का पडती वखते एकदम चित्कारना अवाजथी वृद्धि पामेछे. तेओमांथी तारानुं फल एक चतुर्थांश थायछे, ग्रहनुं फल अरधुं थायछे, तथा उलूका, मेघधनुष्य अने विजलीनु संपूर्ण फल थायछे.

उल्काना पडवा उपरथी फल.

उल्का जो अगाडीना भागथी, मध्य भागथी तथा पाछलना भागथी पडे तो अनुक्रमे अगाडीना मध्यना तथा छेडाना देशनो विनाश करेछे. आकाशना मध्य भागमांथी जो उल्का पडे तो तेने उत्तम नजाणवी. पण मध्य भागमांथी शरु थइने पाछी जो तीर्छी पडे तो तेने उत्तम जाणवी.

उल्काना वर्ण उपरथी निपजतुं फल.

विविध जातना रंगोवाली उल्का पडे तो ते पछी तेनु अहित करेछे. श्यामरंगनी के लालरंगनी पडे

अथवा तारा, ग्रह, विजली, तथा मेघ धनुष्यनी साथे उल्काना विकारो कहेवायछे अने तेना पडवाथी शुभाशुभ फलप्राप्त थायछे. तेमां तारानुं प्रमाण नानुं होय छे. ग्रहनुं तेथी बमणुं होयछे. विजली विशाल, कुटिल तथा जबुका मारती होयछे. मेघधनुष्य अर्धचंद्रना आकारनुं होयछे अने उल्का पडती थकी एकदम चिल्कारना अवाजथी वृद्धि पामेछे. तेउमांथी तारानुं फल एक चतुर्थांश थायछे, ग्रहनुं फल अरधुं थायछे, तथा उल्का, मेघधनुष्य अने विजलीनु संपूर्ण फल थायछे.

उल्काना पडवा उपरथी फल.

उल्का जो अगाडीना भागथी, मध्य भागथी तथा पाछलना भागथी पडे तो अनुक्रमे अगाडीना मध्यना तथा छेडाना देशनो विनाश करेछे. आकाशना मध्य भागमांथी जो उल्का पडे तो तेने उत्तम नजाणवी. पण मध्य भागमांथी शरु थइने पाछी जो तीर्छी पडे तो तेने उत्तम जाणवी.

उल्काना वर्ण उपरथी निपजतुं फल.

विविध जातना रंगोवाली उल्का पडे तो ते पृथ्वीने अग्नि करेछे. श्यामरंगनी के लालरंगनी पडे

उल्कार्डनी शुभ फल आपनारी आकृतिर्ड.

कमल, लक्ष्मीदेवी, वृक्ष, चंद्र सूर्य, नंदावर्त्त, कलश, स्वस्तिक (साथीर्ड) ध्वज, पताका, मत्स्य-कूर्म, घोडो, हाथी, शंख, वाजित्र, छत्र, सिंहासन-रथ, तथा मुकुट एटली आकृतिवाली उल्कार्ड शुभ फल आप छे. उपर जणावेली आकृतिवाली उल्का जो श्वेत, लाल, अने पीलारंगनी थइ विजली, गर्जना अथवा मेघ वृष्टिनी साथे मंगल, बुध, गुरु अने रविवारे पडेतो ते उत्तम वृष्टि, आरोग्यता, अने पुंष्कल धान्यने उत्पन्न करे छे, अहिं अपवाद एटलो के, उपर जणावेली कोइपण आकृतिवाली उल्का जो अशाढ शुक्र पंचमीने दिवसे सूर्यास्त समय पडे तो ते वर्षमां भयंकर दुकाल पडे छे तेविषे कह्युंछे के॥

" आसाढ्व पढम पख्खस्स पंचमीए दीएणे"
" दिणयरासत्त समए सुजाकारावि पडंती "
" उक्का भयावद्द दुभिख्खदा " ॥ १ ॥

उल्काथी थता अकस्मात.

कोइपण दिवसे संध्याकाले श्वेतरंगनी अने वहाणना जेवी आकृतिवाली उल्का जो रोहिणी नक्षत्रने स्पर्श करी दक्षिण दिशामां पडे तो ते रात्रे

मुद्रमां कल्पांत काल जेवुं तोफान थइ घणां व-
ाणोनो विनाश थाय. वली तेवीज आकृतिवाली
ामरंगनी उल्का जो पुष्य नक्षत्रनो स्पर्श करी
श्चिमदिशामां पडे तो समुद्रमां मध्यम प्रकारनुं
ोफान थाय,

उल्काथी थतुं वर्ण जातिने अशुज फल.

वैशाख शुक्ल पूर्णिमाने दिवसे मध्यान्हकाले के-
रवर्णी अने मुशलाकृति उल्का जो आकाशना
ध्य जागमांथी पडे तो ब्राह्मण जातिना मनुष्योने
ाथे घणुं संकट आवी पडे. कोइपण दिवसे अस्त-
ामता सूर्यने मयुरपक्षीनी आकृतिवाली रक्तवर्णी
ल्का जो ताम्रन करे तो ते देशमां सर्व जातिना
ोको उपर महामारीनो उपद्रव थाय.

उल्काथी थतुं समाइ उपर अशुज फल,

घणे पक्षना युद्धमां जेना सैन्य उपर लीला रंग-
नी, खड्गनी आकृतिवाली उल्कापडे तो ते सैन्यना
ेनापतिनो तत्काल वध थाय छे. वली ते वखते
ीला रक्तवर्णनी उल्का जेना सैन्यमां पडे ते से
न्यना राजानो शत्रु घात करे छे. जेना सैन्यमां लीला
रंगनी पणी उल्काउ पडे तेना सैन्यमां रोगनो

महान् उपद्रव उत्पन्न थाय छे. जो सैन्यमां काकप
क्षीनी आकृतिवाली श्यामरंगनी उल्का पडे तो जा
णवुं के, सलाह थशे नही. जो धनुष्यना आका
जेवी धूम्रवर्णी उल्का सैन्यना अग्र जागे पांच धनुष्
सुधीना प्रदेशमां पडेतो, ते उत्तम जाणवी, तेथी ते
सैन्यना नायकनो जय थाय छे. जो अश्वना जेवी
आकृतिवाली लालरंगनी उल्का सैन्यमां कोइ अश्
उपर पडे तो जाणवुं के, सैन्यना सर्व अश्वोनो वि
नाश थशे जो नाना बालक जेवा आकारनी उल्क
पडे तो ते राजाने बंधन प्राप्त थाय छे.

उल्काउनां विविध फल.

श्यामरंगनी उल्का जे माणसना जन्म नक्षत्रने
ताडना करे, ते माणसनु जयंकर व्याधिथी मृत्
थाय. जयंकर प्राणीउना आकारवाली उल्का जे मा
णसने जे आकारनी देखाय, ते आकारना प्राणीथी ते
माणसने घणो जय थाय छे जे नगरनी आसपास
दशेदिशाउ तरफ उल्काउ जम्या करे, ते नगरने
तेना राजासहित दश दिवसोनी अंदर नाश थाय
छे. उपर कहेली खराब आकृतिवाली पण उल्काउ

ध्यान्ह काले सूर्यनी आसपास अनुक्रमे लाल, ली
अने पीलो परिवेष थाय तो ते राज्य उपर लुटा
ओनी धाम आवीपडे, तेमां संशय नथी. सूर्यनी आ
सपास पंचरंगी परिवेष देखायतो ते देशमां घणी ग
योनो विनाश थाय. जो चोरस आकारनो जुदारंग
परिवेष थाय तो अफद विगेरे श्यामरंगनी वस्तुओ
एक वर्ष सुधी भगणो जाव रहे. जो विकस्वर थयेल
कमलना जेवो गुलाबी रंगनो परिवेष देखाय तो
वर्षमां कपासनो पाक एटलो वधो उतरे के तेनो जा
अरधो थइ जाय. सूर्यनी आसपास थयेला श्याम
रंगी परिवेषनी अंदर जो एक अथवा तेथी वधा
ताराओ दृष्टिए पडे तो जाणवुं के, ते देशनो एकम
सनी अंदर भूमिकंपथी विनाश थशे. सूर्यना उद
वखते पीलारंगनो परिवेष देखाय अने ते वृद्धिपामी
मध्यान्हकाल सुधीमां वेवगो थइ जायतो जाणवुं के
ते प्रदेशमां शिशिर ऋतुनो पाक निष्फल थशे. सूर्यनी
आसपास त्रिकोणाकार परिवेष होय तो ज्येष्ठमासमा
सूर्यना तीव्रतापथी घणां प्राणीओनो विनाश थाय. सू
र्यनी उत्तर दिशाए परिवेषनो भाग वधारे होय त
जाणवुं के, उत्तर दिशानो वायु तरत वृष्टि करावशे

अने दक्षिण दिशाए परिवेषनो जाग वधारे होय तो ते चातुर्मासमां जलवृष्टि नही थतां रुधिर अथवा पाषाणनी वृष्टि थाय, अने लोकोनो एटलो वधो विनाश थाय के, ते देशमां वस्तीनो चोथो जाग अवशेष रहे; सूर्यनी आसपास अर्धचंद्रना जेवी आकृतिवालो लाल रंगनो परिवेष होय तो ते चातुर्मासमां पाकेलां धान्योनो क्षुद्रजंतुर्जथी विनाश थाय एम सर्वज्ञ प्रनुए कहेलु छे. सूर्यनी आसपास कांगरावाला किल्ला जेवो सोनेरी रंगनो परिवेष थाय तो ते यथावर्षमां छिदल धान्योनो जाव वमणो रहे जो लीला रंगनो परिवेष सूर्यना बिंबने आछादित करीने सूर्यने कांखोपाडे तो जाणवुं के, म्लेछो तरफथी आर्य लोकोने मोटो जय थशे, श्याम रंगनो परिवेष लंब गोलाकृति रही सूर्यने वींटी राखे तो जाणवुं के, ते देशमां जूतपिशाच विगेरे दुष्ट देवोनो मोटो उपद्रव थशे.

आ उपर कहेलो सूयनो परिवेष प्राये करीने वैशाखमासनी कृष्ण अमावास्याए सूर्योदय वखते जोवो.

इति नैमॅत्तिक जद्रबाहु निर्मिते परिवेषलक्षणो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

परिवेषविषे वराहमिहिरना विचार.

(परिवेषने उत्पन्न करनारा देवताओ,)

रक्तवर्णनो परिवेष इंद्र करेछे, नीलवर्णनो परिवे
यमराज करेछे, जरा फीका रंगनोश्वेत परिवेष वर
करेछे, कपोतवर्णी परिवेष निर्ऋति (राक्षस) करे
मेघवर्णी परिवेष वायु करेछे, कावरा रंगनो परिवे
ईशानदेव करेछे, लीलारंगनो परिवेष पितामह (ब्रह्म
करेछे, श्वेतवर्णनो परिवेष पण वरुण करेछे अने म
रना कंठ जेवा रंगनो परिवेष कुबेर करेछे. जे परिवे
क्षणे क्षणे उत्पन्न थइ लय थइ जाय ते वायुनो करेल
छे अने तेनुंफलपण अल्प होयछे.

ऋतुने उद्देशीने परिवेषनां शुभफल.

शिशिर ऋतुमां नीलवर्णनो परिवेष उत्तम छे,
संतमां विचित्र रंगनो परिवेष उत्तम छे. ग्रीष्मऋतुम
रूपेरीवर्णनो परिवेष श्रेष्ट छे. वर्षाऋतुमां नेलवर्णी
रिवेष उत्तम छे, शरदमां कुधीआरंगनो परिवेष श
म छे, अने हेमंतमां जलना जेवा रंगनो उत्तम
तेमज जो अखंड वर्तुलाकार अने स्निग्ध निर्मल परि
वेषहोय तो तेथी सुकाल अने सर्वनुं कल्याण थाय

परिवेपनी अंदर आवेला ग्रहोनुं फल.

परिवेप मंमलमां जो शनि आवे तो कांग विगेरे क्षुद्र धान्योनो विनाश करे, घंटोलीआ साथे वृष्टि लावे, अने वृक्षादिक तथा कृषिकार लोकोनो नाश करे. जो परिवेपमां मंगल आवे तो नाना बालकोने सेनापतिर्उने तथा सैनिकोने व्याकुल करे, अने अग्निनो जय करे, जो परिवेपमां बृहस्पति आवे तो पुरोहित, मंत्रीर्उ अने राजार्उने पीमा करे, जो परिवेपमां बुध आवे तो, मंत्रीर्उ, स्थावर पदार्थो अने सहीआनो घणो वधारो थाय अने वृष्टि सारी थाय. जो परिवेपमां शुक्र आवे तो युद्धयात्रा करवाने इछिनारा क्षत्रीर्उने तथा राजानी पटराणीने पीमा थाय अने डुकाल पडे. जो परिवेपमां केतु आवे तो डुर्भिक्ष पडे, अग्नि, मृत्यु, राजा, अने शस्त्रोथी जय उपजे अने जो परिवेपमां राहु आवे तो गर्भनेजय, रोगचालो अथवा राजाने जय थाय ठे. आ शिवाय जो परिवेपमां घणा ग्रहो आवेतो ते ग्रह युद्ध कहेवायठे अने तेनां जुदां जुदां फलो थाय ने.

तिथिक्रमथी परिवेपनां फल.

पम्वाने दिवसे परिवेप थाय तो ब्राह्मणोनो नाश

करे, बीजने दिवसे क्षत्रियोनो, त्रीजने दिवसे वैश्योनो अने चोथने दिवसे शूद्रोनो नाश करे छे. पांचमने दिवसे थयेलो परिवेष महाजननुं अशुभ करे छे, छठने दिवसे नगरनुं, सातमने दिवसे कोशभंडारनुं, अष्टमीए युवराजनुं अने नवमी, दशमी अने एकादशी ए राजानुं अशुभ करे छे. बारशने दिवसे परिवेष थाय तो नगरने घेरो थाय, तेरशने दिवसे सैन्यमां आकुलता थाय, चौदशे राणीने पीडा करे अने पूर्णिमाए राजाने पीडा करे छे.

अध्याय ५ मो.

। विद्युत् लक्षण. ।

श्रीभद्रबाहु स्वामि कहेछे· हे शिष्यो, हवे हुं तमोने विद्या प्रवाद पूर्वनेअनुसारे विद्युत् लक्षण कहीश.

। विजलि उपरथी वृष्टिसंबंधी ज्ञान ।

पूर्व दिशामां श्वेत कमलना रंगसरखी विजलि थाय अने तेसमये ते दिशा तरफ वादलांओ होय, तो जाणवुं,के उत्तमवृष्टि थशे पश्चिमदिशामां जो लीला रंगनी विजलि थाय तो अति वृष्टिथी मोटी रे-

१ प्राये करीने अषाढशुदी पंचमीनी सायंकाले आविजलीओ जोवायछे.

जो जयंकर गर्जनाउं थाय तो त्रण दिवसनी अंदर घणी वृष्टि थाय.

वरुतुने लइने विजलिउंनुं लक्षण

शिशिर रुतुमां लाल अने पीलारंगनी विजलिउं थाय तो तरत मेघवृष्टि थाय. वसंतरुतुमां लीला अनेश्वेत रंगनी विजलिउं थाय तो वंध्यास्त्रीनी पेठे कांइ पण वृष्टि नथाय. ग्रीष्मरुतुमां लीला रंगनी मधना जेवा रंगनी, त्रांवा सरखा रंगनी अने श्वेतरंगनी विजलिउं थाय तो आवती वर्षारुतुमां मेघवृष्टिने अटकावे ठे. शरदरुतुमां गमे ते रंगनी विजलिउं थाय तथापि वृष्टि थती नथी. हेमंत रुतुमां श्याम तथा ताम्ररंगनी विजलि जलरहित जाणवी पण जो तेमां लाल अने लीला रंगनी विजलि थाय तो तेथी पक्षीउंनो संहार थाय ठे. वसंतरुतुमां गर्जनासहित केशरिआरंगनी विजली थाय तो ते रुतुमां समुद्रनी अंदर जयंकर तोफान थाय अने तेथी घणां वहाणो विनाश पामे.

सूर्य चंद्र विगेरे ग्रहो उपर विद्युल्लक्षण

जो विजलि चंद्रबिंबमांथी नीकली अथवा बिंबनो स्पर्शकरी अभ्ररहित आकाशमां पीला रंगथी

वादलाउंनुं लक्षण कहुं ते सांजलो. सूर्योदय वखते उत्तरदिशामांथी प्रसार थतां स्निग्ध वादलांउ मालम पडे तो जाणवुं के, तत्काल वरसाद थशे. तेवी-रीते पूर्व तथा दक्षिण दिशाना वादलां पण उत्तम वृष्टि आपेछे, ए निःसंशय वात छे. सघलां वादलांउ काला, पीलां, रातां अथवा श्वेत रंगनां होय तो ते उत्तम अने वृष्टि करनारां जाणवां वली ते वादलांउकोइ पण पशुना जेवी आकृतिवालां होय अथवारंग बेरंगी के जलबिंदुउथी युक्त होय तो तत्कालवृष्टिकरे छे. पक्षीना आकारवालां, तथा मनुष्योना आकारवालां वादलांउजणाय तो डुकाल पडे छे. रथ, हयीआर अथवा हाथीना जेवी आकृतिवालां वादलांउ जणाय तो जयंकर लमाइ थाय छे, ध्वजा, पताका, घंट, तथा तोरण जेवां वादलांउ थाय तो उत्तम वृष्टि थाय छे. मांस जक्षण करनारा तथा उग्रदांतवाला पशु अने पक्षीना आकारनां वादलांउ जणायतो रुधिरनी वृष्टि थाय छे. जालुं, धनुष्य, खड्ग, तथा चक्रना जेवी आकृतिवालां वादलांउ थाय तो जयंकर लमाइथी मनुष्योनो संहार थाय छे. कोइ पण जातिनां वृक्षनी आकृतिवालां वादलां जणायतो अतिवृष्टिथी पाकनो

श्याम रंगना वादलाउना मध्यभागमां जो मनुष्यना आकारनुं चिन्ह मालम पडे तो त्रण दिवसमां अवश्य वृष्टि थाय. संध्याकाले सूर्यास्त समये जो पश्चिमदिशामां रंगबेरंगी वादलां मालमपडेतोआठ पोहोरनी अंदर वृष्टि थाय. सूर्यास्त समये जो सूर्य श्यामरंगना वादलांउथी आच्छादित थयो होय अने ते वादलां जो तेसमये स्थिर रहेलां मालमपडे तो तेज रात्रे जरुर वृष्टि थाय. जो वादलांउ वायु विना उतावली गतिथी होमनां जोवामांआवे तो एक मुहूर्त्तमांज वरसाद थाय. जलथी भरेला पण गर्जनाविनानां वादलांउ अल्प वृष्टि करेछे. श्वेत-रंगनां निर्मल वादलांउ जो दक्षिण दिशामांथी आवता मालुम पडे तो पन्नरदिवसमुधी वृष्टि थाय नही. पीलारंगनुं मच्छना जेवा आकारनुं वादलुं अग्निदिशामांथी उत्पन्न थइ आकाशनो मध्यभाग सुधी नहीं पोहोचनां पाछुं जो तेज दिशामां चाल्युं जायतो वर्षारुतुमां विलकुल वर्षाद नहीं थतां शरदरुतुमां घणो थाय. सिंदुरना रंग सरखुं वादलुं उत्तर दिशामांथी उत्पन्न थइ जो दक्षिणमां जतुं देखाय तो ते वृष्टिमांथी भयंकर रोग उत्पन्न थाय, श्यारंगनां वाद-

लां पश्चिम दिशामांथी उत्पन्न थइ जो पूर्व दिशामां जाय अने ते वादलांने जोइ जो कुंतरांउ ते तरफ जसवा लागे तो जाणवुं के बराबर बे माससुधी वृष्टि थशे नहीं. लालरंगनां वादलांउ दक्षिण दिशामांथी उत्पन्न थइ जो पूर्वदिशामां चाल्यां जाय अने त्यां पोहोचता पेहेला जो ते वादलांउनो रंग बदलाइ जायतो वावेलां धान्योनो उंदर आदिकथी विनाश थाय. जो जलचरेलां वादलांउ पर्वतसाथे अथडाया छतां पण वृष्टि करे नहीं तो जयंकर अनावृष्टि थाय. जे रात्रे ठेक संध्याकालथी श्यामरंगनुं वादलुं सतरुपिना ताराउने आच्छादित करीने घणी रातसुधी तेमनुं तेमरहे तो ते रात्रे जयंकर गर्जना साथे विजली पडे तथा प्राणीउनो विनाश थाय.

इति नैमित्तिके जद्रबाहुनिर्मित्ते अभ्र लक्षणो नाम षष्ठोध्यायः ॥ ६ ॥

अध्याय ७ मो.

। संध्या लक्षण. ।

श्रीजद्रबाहु स्वामी कहे छे. हे शिष्यउ, हवे हुं तमोने संध्यानुं लक्षण कहीश.

१ आ संध्या प्रायेकरी अशाड शुदी बीजने दिवसे जोवाय छे.

सूर्योदय वखतनी संध्यानुं लक्षण

सूर्योदय वखते पूर्वदिशामां पंचरंगी संध्या थाय तो आठ पोहोरनी अंदर उत्तम वृष्टि थाय. उत्तर दिशामां श्वेतरंगनी संध्या थाय तो ते मासमां बील-कुल वृष्टि नथाय. सूर्योदय वखते पूर्वदिशामां लाल-रंगनी संध्या देखाय तो तेज दिवसना मध्याह्न काले जरुर वरसाद थाय. जो दक्षिण दिशामां पीली संध्या थाय तो तेज रात्रे भयंकर वृष्टि थाय. पश्चिम दिशामां श्यामरंगनी संध्या थाय तोजाणवुं के, चातुर्मासमां अनुकूल वृष्टि थशे नहीं, सामान्यरीते सूर्योदय वखते जो कोइ पण रंगनी संध्या अग्नि खुणमां थाय तो अग्निनो भय थाय, नैरूत्य दिशामां थाय तो राज्यने भय थाय, वायव्यदिशामां थाय तो वृष्टिनो नाश करे अने इशानदिशामां थाय तो उत्तम फल आपे.

सूर्यास्त वखतनी संध्यानुं लक्षण.

सूर्यास्त समये उत्तम प्रकारना सोनेरी रंगवाली थयेली संध्या उत्तम प्रकारनी वृष्टि आपे छे. पश्चिम

---

१ सूर्योदय तथा सूर्यास्त समये अग्रभागमां जेटलां वादलांओ कांतिवालां तेजस्वी थयां होय तेटलांज वादलांओने संध्या जाणवी

दिशामां मूग रंगनी संध्या सर्व जातनां धान्योनो नाश करे छे. सूर्यास्त समये आकाशना मध्यभागमां थयेली पीला रंगनी संध्या सात दिवसनी अंदर वृष्टि लावे छे. सूर्यास्त समये पंचरंगी संध्यानी अंदर जो सूर्य आछादित थयो होय तो जाणवुं के, तत्काल वृष्टि थाशे. सूर्यास्त काले सूर्यनी आसपास जो परिवेष होय अने पीलारंगनी संध्या पूर्वदिशामां खीलेली होय तो जाणवुं के, वरसादथी प्रलयकाल थशे. केसरीआरंगनी संध्यानी अंदर सूर्यनां किरणो जो आछादित थयेलां होय तो तेज रात्रे घणों वरसाद थाय. सूर्यना अस्तकाले सूर्य जो लीला रंगनी संध्याथी आछादित थयो होय तो अति वृष्टिथी धान्योनो पाक विनाश थइ जाय. सूर्यना अस्तसमये सर्वदिशाउने तेजस्वी बनावती सुवर्णरंगी संध्या चलके तो तेज रात्रे घणी सारी वृष्टि थाय. जो संध्यानो रंग धूम्रना जेवो होय अने तेनी अंदर घणां छिद्रो होय तो ते संध्या राजाने भयंकर थाय छे जो संध्या लुखी तथा विकारवाली होय तो तेथी अनावृष्टि,

लक्षण रोग, राज्यजय, तथा दुकाल उत्पन्न थाय छे, पूर्ण लक्षण वाली विजली गर्जना अने संध्या लक्षण उत्तम पाकने सूचवे छे.

इति नैर्ग्रंथिके, भद्रबाहुके निमित्ते संध्या लक्षणो नाम सप्तमोऽध्याय. ॥ ७ ॥

अध्याय ८ मो.

। मेघ लक्षण. ।

श्रीभद्रबाहु स्वामी कहे छे, हे भिक्षुको, हुं तमोने पूर्वने अनुसारे मेघोनुं लक्षण कहीश.

जो पूर्वदिशामां अंजन सरखो मेघ देखाय तो ते मासमां उत्तम प्रकारनी वृष्टि थाय. जो मेघ पीला पुष्प सरखो देखाय तो ते मेघथी थयेली वृष्टि विविध प्रकारना रोगने उत्पन्न करे. जो पश्चिम दिशामां लाल रंगनो मेघ देखाय तो मंद मंद वरसाद पडीने खेतीने सारो फायदो करे. दक्षिण दिशा-

१ उत्तम प्रकाशवाली विजली वीशयोजन सुधी प्रकाशे छे, गर्जना ते नाथी जरावधारे दूर संभलाय छे अने संध्या पांचयोजन सुधी देखाय छे. तेवी विजली, गर्जना अने संध्या पूर्ण कहे वाय छे

२ आ मेघनुं लक्षण प्राये करीने आशाड शुद पूनमे अथवा. जेठ शुद पूनमे जोवुं.

चीनालाओ तथा मेघो जयंकर शब्दो करे ते मेघथी जयंकर मरकी उत्पन्न थाय छे. आकाशमां चडेला जे मेघने जोइ मांसजक्षण करनारा पक्षीओ शब्द करे ते मेघमांथी रुधिर वर्षे छे. जे मेघनो आकार दांतावाला करवत्त जेवो होय तेवा मेघथी अनावृष्टि, जयंकर डुकाल तथा मरणो नीपजे छे. जे मेघ सूर्यने आच्छादित कर्याविना वृष्टि करे ते मेघ अल्प जल आपी तुरत नष्ट थाय छे. जे मेघमांथी रुधिर, धूल, धूम तथा रेती वर्षे, ते मेघो मनुष्योनो मोटो संहार करनारा छे. जे देशमां मेघो खारुं, कम्बुं, अथवा डुर्गंधी जल वरसावे ते देशनो तत्काल विनाश थाय छे. जे मेघने चडेलो अथवा वर्षतो जोइ मयुरो शब्द करे तो ते मेघ उत्तम प्रकारनी वृष्टि आप्या विना चाल्या जता नथी. जे मेघो विजलीओवाला-सुगंधी तथा गंजीरगर्जना वाला थइने वरसेछे, ते मेघो सुकाल करे छे. संध्या वखते मेघनां वादलांओ जे वस्तुओ नारंग तथा आकृतिवाला होय ते रंगनीवस्तुओनो जाव अमधो थाय छे. आ प्रमाणे मेघनुं लक्षण जाणवुं.

इति नैर्ग्रंथिके, जद्रबाहुके मेघलक्षणो
वर्णनो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अध्याय ९ मो.

। वायुलक्षण.।

श्रीजद्रबाहु स्वामी कहेछे के, हे भिक्षुको, हुं तमने वायुनुंलक्षण कहुं छुं, ते सावधानपणे सांजलो. प्राणीडे ना पुण्यने अनुसारे आ जगतमां वायु प्रवर्त्ते छे. ते पोताना वहनथी वृष्टि, जय, कुशलता तथा राजानो जय पराजय करेछे. जे वायु स्थिर अने सुगंधी आपनारा होय ते उत्तम गणायछे. दक्षिण दिशामांथी जो मंदवायु आवता होय तो वरसादनो गर्ज सारो बंधायछे. ते गर्ज ज्येष्ठ मासमां परिपक थइ आषाढ मासमां उत्तम वृष्टि आपेछे. आशाढ शुदी पूनेमने दिवसे जो पूर्व तरफनो वायु होय अने ते वायु जो आखो दिवस वाया करेतो जाणवुं के, तेजरात्रे सारो वरसाद थाय अने ते वरसाद थया पछी तरतज बीजो वाववां के,जेथी उपद्रवविना सर्व धान्य सारी रीते पाके. जोतेज दिवसे प्रजातथी अरधा दिवस सुधी ते वायु वाय तो जाणवुं के, पनर दिवससुधी वरसाद थशे नहीं. अशाढी पूर्णिमाए जो दक्षिण दि

१ आ वायुनुं लक्षण प्रायेकरीने वैशाखशुदी त्रीजने दिवसे जोवुं

शानो वायु होय तो कांइपण वीज वाववुं नहीं अने ते वायु ब्राह्मण तथा क्षत्रियोने पीमाकारी थायछे. वली ते वायुने जोइ व्यापारीओए पोतानुं धान्य वेची नाखवुं नहीं पण तेनो संग्रह करवो कारणके, ते वायु दुकाल, मृत्यु, व्याधि अने जय उपजावे छे.

अशाढसुदी पूर्णिमाए जो उत्तर दिशानो वायु होय तो सर्व प्रकारनां वीज वाववा. तेथी उत्तम प्रकारनुं धान्य निपजशे. कारण के, ते वायुथी कल्याण सुकाल, आरोग्यता अने घणुं जल वर्सावनारा मेघो थशे. अशाढसुदी पूर्णिमाए जो पूर्व अने दक्षिण दिशानो वायु होय तो राजानुं मृत्यु थाय अने धान्य अल्प उगे. जो तेज दिवसे इशान दिशानो वायु होय तो अनेक जंतुउथी धान्योनो नाश थाय, चोरोनी वृद्धि थाय अने धूली उडवाथी पृथ्वी नराइ जाय, माटे सर्व वस्तुउनो त्याग करी मात्र धान्योनोज संग्रह करवो. वली तेवा वायुथी राज्योनी पायमाली थाय, शेहेरो उजम थाय अने सघली पृथ्वी हाकाउं तथा हाम्पींजरोथी नराय. अशाडसुदी पुनमने दिवसे जो नैरुत्य दिशानो वायु होय तो मांस तथा मछरोनो मोटो उपद्रव थाय. जो पूर्व अने उत्तर

दिशानो वायु होय तो सारीरीते बीज वावर्या जेवी ते बीजो सारीरीते समृद्धि पामे छे. (साधारणरीते पण पूर्व तथा उत्तर तरफनो वायु श्रेष्ठ कहेलो छे. इशाननो वायु मध्यम छे अने बाकीना सघळी दिशा उना वायु कनिष्ठ प्रकारना छे.) दक्षिण तरफना वायुने जो पूर्वनो वायु हणे तो धान्य वाववुं नहीं पण तेनो संचय करवो केमके तेवा वायुथी दुकाळ, अनावृष्टि, रोग तथा माणसोनो संहार थाय छे. ज्यारे चारे दिशाना वायुउ एकी वेळाये जोरथी वाय तो अल्पवृष्टि. धान्योनो नाश अने व्याधि उत्पन्न थाय छे. वळी ते वायुउ जो परस्पर एक बीजानो विघात करतां वाय तोपण उपर वर्णवेली थावतो थाय छे.

सामान्य प्रकारना वायुनुं लक्षण.

पूर्वदिशानो वायु एकदम कठोर थइ सात दिवसो सुधी वायतो ते वरसादने नहीं लावतां उलटो भय उत्पन्न करे छे. वळी तेवो वायु कील्ला, खाइउ, शस्त्रो तथा राज्योनो विनाश करे छे. सातरात्रि अने अग-धादिवस सुधी जो तेवो वाय तो मोटा भयने सूच-वे छे. जो पूर्व दिशामां संध्या खीली होय अने दक्षिण दिशानो वायु वातो होय तो मोटुं भय उ-

त्पन्न करे छे. राजाना सैन्यना प्रयाण वखते जो वायु सन्मुख वाय अने धूलि उडाडे तो ते सैन्यनो नाश थाय छे. दक्षिणदिशामांथी जो मुरुदानी दुर्गंधिवालो वायु वायतो जाणवुं के, मोटो दुकाल पडशे अने अग्निनो जय थशे. सुसवाट शब्द करतो पूर्वनो वायु जो धूलिने जमावतो वायतो जाणवुं के, जल नी रेल आवी देशनो विनाश थशे. अकाले गर्जनानी साथे जो जयंकर वायु वायतो जाणवुंके, राजाउनो तथा लोकोनो क्षय थशे. धूल अने राखने उडाडना रो वायु धान्योनो नाश करी जय आपे छे. पक्षिउना क्रूर शब्दो साथे जो जयंकर वायु वायतो जाणवुं के, तीड विगेरेना उपद्रवथी धान्योनो विनाश थशे. इशान दिशामांथी जो वंटोलीउ वायु चडी आवे तो ते वायु जयंकर रूप पकडी वृक्षोनो विनाश करी समुद्रनो अत्यंत क्षोज करी वृष्टिने लावे. पश्चिम दिशामां वातो मांगलिक वायु जो इशान दिशामां धूलि उडाडे तो जाणवुं के करानो वरसाद पडशे. दक्षिण दिशामांथी आवतो वायु जो धूमाडा सहित वाय तो तेज रात्रे मात्र वरसादना छांटा थाय. पूर्व दिशामांथी वाता वायुनी साथे जो लालरंगना ज-

जलबिंदुओ पडे तो जयंकर लडाइ थइ घणां प्राणी ओनो विनाश थाय. नैरुत्य दिशामांथी आवेलो वायु जो जलबिंदुओने लावे तो चीलकुल वृष्टिज थाय नहीं. शांत अने सुगंधि वायु जो उत्तर दिशामांथी आवे अने साथे जो लीला रंगना जलबिंदुओ पडे तो महामारीनो रोग उत्पन्न थाय. जे वायु नैरुत्य दिशामांथी उत्पन्न थइ मेघाडंबरने तोडी नाखे, ते वायु जयंकर डुष्कालनी निशानी बतावे छे. सर्व प्रकारनां उत्तम लक्षणवाला मेघोने पण नैरुत्य दिशानो वायु प्राये करीने निष्फल करे छे.

आर्द्रा नक्षत्रमां जो विजलीना चमकारा साथे वायव्य दिशानो वायु वायतो बोंहोतेर दिवस सुधी वृष्टिज पडे नहीं.

इति नैमेयिके जद्रबाहुके नैमित्तिके वात-
लक्षणो नाम नवमोऽध्याय. ॥ ए ॥

अध्याय १० मो.

(जलबिंदु लक्षण.)

मूल नक्षत्र संपूर्ण यथाथाद जो जलबिंदुओ पडे तो उत्तम प्रकारनी वृष्टि थाय. अशाढ मासना शुक्ल पक्षमां अने ज्येष्ठ मासना कृष्ण पक्षमां जो

जलबिंदुओ नपडे तो जाणवुं के, बेमास सुधी उत्तम वृष्टि थशे नहीं. जेठमासनी शुक्ल पक्षनी बीजनेदिवसे विजलीओना चमकारा तथा गर्जना साथे जो जलबिंदुओपडे तो अढीमास सुधी बीलकुल वृष्टि न थाय. जो उतरा नक्षत्रनी अंदर शनिवारे जलबिंदुओ पडे तो एटलुं धान्य नीपजे के पशुओने खवरावतां पण ते खुटे नहीं. आर्द्रा नक्षत्रमां शनिवारे थयेली वृष्टि सात दिवस सुधी अविछिन्न पणे वरसे छे पण पछी एक मास सुधी वृष्टि थती नथी. कृतिका नक्षत्रमां जो रविवारे जलबिंदुओ पडे अने साथे जो धूलि उडे तो जाणवुं के, भयंकर दुकाल पडशे. रोहिणी नक्षत्रमां मंदपवन साथे जो वृष्टि थाय तो सुकाल थाय अने तेथी लोको सुखी थाय. आर्द्रा नक्षत्रमां पडेला जलबिंदुओ जो तेल जेवा चीकणा तथा दुर्गंध आपनारा होय तो महामारीनो उपद्रव थइ घणां प्राणीओनो विनाश थशे. श्रवण नक्षत्रमां थयेली वृष्टि धान्यनी उत्तम नीपज करे छे पण तेमां चोरोनो उपद्रव तथा विविध प्रकारना रोगोनी उत्पत्ति थाय छे. मूल नक्षत्रमां जो रुधिर जेवा बिंदुओ आकाशमांथी पडे, तो भयंकर लडाइ

थइ घणां जीवोनो विनाश थाय. ज्येष्ठ मासमां शु-
क्रवारने दिवसे सूर्यास्त समये जो लीलारंगना जल-
बिंदुर्जनी वृष्टि थाय तो जाणवुं के, मग आदिक
लीली वस्तुर्जना नाव एकदम घटी जशे. ज्येष्ठ मा-
समां बुधवारने दिवसे प्रजातमां जो लीला रंगना
अने कराजेवा मोटा जलबिंदुर्जपडे तो जाणवुं के,
कपासनो सघलो पाक निष्फल जशे. पूर्वाषाढा नक्ष-
त्रमां श्यामरंगना जलबिंदुर्जपडे, तो श्यामरंगना धा-
न्योनो तथा गोलनो नाव बमणो थाय. उत्तरा नक्ष-
त्रमां गुरुवारे जो करांनी वृष्टि थाय तो जाणवुं के,
वर्षाऋतुनो पाक निष्फल जशे. आषाढ शुदी बीजने
दिवसे संध्याकाले जो लीला रंगनी वृष्टि थाय अने
ते दिवसे जो शनिवार होय तो वरसाद घणो थाय
अने घणा दिवस सुधी सूर्य अदृष्ट रहे. अश्विनी
नक्षत्रमां शनिवारे सूर्योदय काले जो वृष्टि थाय तो
सुकाल थइ घणां धान्य नीपजे. नरणी नक्षत्रमां ज-
लबिंदुर्जनी साथे सूक्ष्म मत्स्यो (मांठला) पडे तो
लमाइथी अथवा महामारीथी प्राणीर्जनो मोटो सं-
हार थाय अने तेमांथी कोइ विरलोज माणस जी-
ववा पामे. नरणी नक्षत्रमां रविवारे मध्याह्न काले

ज़ो लालरंगना जलबिंदुर्ड पडे तो तेजलबिंदुर्ड क्षुद्र उपद्रवने उत्पन्न करे छे.

जे वर्षमां श्रावण मास अधिक होय, ते वर्षमां पेहेला श्रावण मासमां जो वृष्टि थाय तो चारे मासमां सारी वृष्टि थाय. पुनर्वसु नक्षत्रमां केशरीआ रंगना जलबिंदुर्ड पडे तो धान्य घणुं पाके पण व्याधिनो उपद्रव बलवान् थाय. पुष्य नक्षत्रमां मोती सरखा श्वेत जलबिंदुर्ड पडे तो वृष्टि अल्प थाय. अश्लेषा नक्षत्रमां जो चोसठ आढक[1] जेटलुं पाणी पडे तो अतिवृष्टि थाय अने तेथी धान्योनो विनाशथवा साथे व्याधिर्ड उत्पन्न थाय तथा साधुर्डने मोटुं संकट आवी पडे. मघानक्षत्रना प्रारंभमांज जो वृष्टि थाय तो धान्योनी सारी नीपज थाय अने पुर्वा फाल्गुनीमां जो वृष्टि थाय तो सर्वत्र आरोग्यता रहे. श्रवण नक्षत्रमां सात दिवससुधी जो वृष्टि थाय तो धान्योनो पाक सारो उतरे अने व्यापारीर्डने सुखसंपत्ति वधे. उत्तरा फाल्गुनीमां जो सात आढक जेटली वृष्टि थाय तो सुकाल, तथा आरोग्यता थाय. लोको दानेश्वरी तथा साधुर्ड धर्मशीलवाला थाय.

१ आढक-एकजातनुं माप छे. जेने गुजरातमां माणुं कहे छे.

चित्रा नक्षत्रमां जो मार्दीन स्थादक, तेटलुं पाणी वर्षे तो सारूं. निंभड ज्ञानना धान्य थाय. स्वाति- नक्षत्रमां जो संध्याकाले वृष्टि थाय तो सर्व प्रकारनुं धान्य थाय; पण त्यारपछीथी आपत्ति थाय. अनुराधा नक्षत्रमां जो कालनी वृष्टि थाय तो नीच विशेष शुद्र संतुष्टथी भार्योनो विनाश थाय. ज्येष्ठा नक्षत्रमां जो- मन स्थादक जेटलुं पाणी वर्षे तो अग्निनो उपद्रव थाय.

इति भद्रबाहुकृत निमित्ते वर्षा लक्षणोनाम
दशमोऽध्यायः ॥ १०॥

अध्याय ११ मो.

। गंधर्वनगर लक्षण ।

श्री भद्रबाहु स्वामी कहेछे-हे शिष्यो. हुं तमोने गंधर्वनगरनुं[१] स्वरूप कहीश. ते सावधान थइ सांभळो. ब्रासंगना गधर्वनगरथी जो दिशाओ प्रकाशित थइ होय तो नगरना मारवानो उत्पात थाय. जो दी- क्षारंगथी दिशाओ प्रदीप्त थइ होय तो प्राणीओने मृत्यु करनारा व्याधिओ उत्पन्न थाय. जो कालारंगनुं गंधर्वनगर थाय तो शूद्रजातिना लोकोने नाश उ-

१ आकाशमां वादळाओनो स्वाभावीक नगरना जेवी आकृति देखाय छे ते गंधर्वनगर कहेवाय छे.

त्पन्न करे. जो पूर्वदिशामां श्वेतरंगनुं गंधर्वनगर थाय तो राजानो विजय थाय अने नगरना लोको धनपात्र थाय. सर्वदिशाउमां जो गंधर्वनगर थाय तो सर्व जातिना लोको वच्चे परस्पर क्लेश उत्पन्न थाय. तेमां जो पीलारंगनुं गंधर्व नगर थाय तो धान्यानो विनाश थाय. मजीठना रंगनुं थाय तो चोरनो उपद्रव वधे अने भूरारंगनुं थाय तो दुकालनो भय थाय. पश्चिमदिशामां जो कील्ला अने तोरण सहित गंधर्व नगर थाय तो राजानो विजय थाय. आकाशमां पुरुपना आकारनुं जो गंधर्व नगर देखाय तो भयंकर पवननां तोफानथी तथा विजलीउना पडवाथी प्राणीउनो विनाश थाय. धूमाडावाला अग्निना आकारनुं जो गंधर्वनगर देखाय तो लोकोने अत्यंत भय थाय. तुटेलुं फाटेलुं अथवा छिद्रवालुं जो गंधर्वनगर देखायतो पृथ्वीपर चोरलोकोनो उपद्रव घणो थाय. जो दक्षिणदिशामां लीलारंगनुं गंधर्वनगर देखाय तो शत्रुउथी राजानो विनाश थाय. जो दावानल सरखुं प्रगट गंधर्वनगर थाय तो अवश्य जाणवुं के, शत्रु तरफथी राजाना नगरने घेरो थाय. उत्तरदिशामां थयेलुं सोनेरी रंगनुं गंधर्वनगर

जो एकादस लुटीने फाटी जाय तो राज्यनी पायमाली थाय. जो दक्षिण दिशामां गुलाबी रंगनुं गंधर्वनगर देखायतो राजाने घणा विस्तारवाली भूमि प्राप्त थाय. जे दिशामां ध्वज तथा पताकावालुं गंधर्वनगर देखाय ते दिशाना राजाना राज्यनी वृद्धि थाय. जो गंधर्वनगर श्वेतरंगनां वादलाउथी मिश्रित थयेलुं होय, तेम जो विजलि अने वरसाद सहित होयतो जलनी मोटी रेलथी देशनो विनाश थाय. जो पश्चिम दिशामां सूर्यास्त समये पंचरंगी रंगनुं गंधर्व नगर देखाय तो तेज रात्रे सारो वरसाद पडे. जो सघली विदिशाउमां गंधर्वनगर देखायतो सर्व वर्णने नयंकर संकर (वर्णसंकरपणुं) थाय. जो अनेक रंगनुं गंधर्वनगर होय तो सघलां राज्यो, नगरो अने गामो क्षोन पामे. मोटा मोटा संग्रामो थाय, तथा रुधिरना कादव थाय. एवुं सर्वज्ञ प्रनुनुं वचन छे. लालरंगनुं गंधर्वनगर क्षत्रियोने जय आपे छे. पीला रंगनुं गंधर्वपुर वैश्योने हणे छे. श्यामरंगनुं गंधर्व नगर शूद्रोनो विनाश करे छे अने श्वेतरंगनुं गंधर्व नगर ब्राह्मणोनो विनाश करे छे. जो वनना आका-

१ विदिशा एटले खूण.

एवुं गंधर्वनगर आकाशना मध्यभागमां देखाय तो पृथ्वीदेश अरण्य जेवो थइ जाय ते निःसंशय छे.

इति नैमंथिके भद्रबाहुके निमित्ते गंधर्वनगर वर्णनो नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अध्याय १२ मो.

। गर्भ लक्षण ।

श्रीभद्रबाहु स्वामी कहे छे– हे भिक्षुओ, हुं तमोने सुखकारी एवुं गर्भनुं लक्षण कहीश; वली ते गर्भनुं लक्षण बीजाए आपेली वस्तुओपर आजीविका चलावनारा भिक्षुओने-साधुओने विशेषे करीने उपकारी छे.

प्राये करीने मेघनो गर्भ मागशिर मासमां ज्येष्ठा अने मूल नक्षत्रमां बंधाय छे. दिवसे बंधाएलो गर्भ प्राये करीने रात्रे वर्षे छे अने रात्रे बंधाएलो गर्भ दिवसे वर्षे छे दरेक गर्भ घणुं करीने सातमे सातमे दिवसे परिपक्वपणाने पामे छे. संध्याकाले पूर्व दिशामां थयेलो गर्भ पश्चिम दिशामां वृष्टि आपे छे अने पश्चिम दिशामां थयेलो गर्भ पूर्वदिशामां वृष्टि आपे छे. त्रण माससुधी गर्भोनुं आधान थाय छे, त्रण माससुधी गर्भोनुं अवधारण थाय छे, त्रण मास परिप-

ऋतामां जाय छे अने त्रण मास वर्षे छे. हे निर्मळो शीतलपवन, विजळी, गर्जना तथा परिवेष ए सघळां गर्भनां उपसाधनो छे. ते गर्भ शुभ अने अशुभ एवा बे प्रकारना छे. उल्कापात, जोसबंधगर्जना, धूलिवृष्टि, ग्रहोनुं युद्ध, चंद्र सूर्यनुं ग्रहण, धुमवृष्टि, तेलवृष्टि, घृतवृष्टि, सुरावृष्टि, अस्थि (हाडकानी) वृष्टि क्षारवृष्टि, लाक्षावृष्टि, वसा (चरबीनी) वृष्टि, मधुवृष्टि, अंगारवृष्टि, नखवृष्टि, केशवृष्टि, मांसवृष्टि, रुधिरवृष्टि अने कादववृष्टि-आ सघळां गर्भोना विनाशना चिन्हो छे. ते सघळाउं भद्रा नयना आपनारा जाणवा. कार्तिक, पोष, चैत्र, वैशाख, श्रावण अने आश्विन मासमां बंधाएलो गर्भ उत्तमवृष्टि आपे छे. जे गर्भो हस्त नक्षत्रमां रहाइने पुष्य नक्षत्रमां देखाय ते गर्भो अश्विनीमां परिपक्व थइ पाछळथी शोजनिक थाय छे.

आर्द्रा, अश्लेषा, ज्येष्ठा तथा मूळ नक्षत्रमां जे गर्भो बंधाय ते गर्भो तत्काळ वरसे छे. विशाखा नक्षत्रमां उत्पन्न थयेला गर्भो कृत्तिका नक्षत्रमां मंद मंद वर्षे छे. स्वाति नक्षत्रमां बंधाएला गर्भो भयंकर वृष्टि करे छे. पूर्व उत्तर अने इशान दि-

छोडी दिव्यज्ञानने जाणनारा निमित्तिआउने पूछीने प्रयाण करवुं के जेथी विजयनी प्राप्ति थाय.

ग्रह, नक्षत्र, करण, तिथिउ, मुहूर्तो, स्वरज्ञान लक्षण तथा सामुद्रिक-व्यंजन आदिकना निमित्तपूर्वक करेलु प्रयाण मंगलकारी थाय छे. जे राजा निमित्तज्ञाननो अनादर करी प्रयाण करे ते जेम मदोन्मत्तहाथी सिंहनी गर्जना सांभली मदरहित थइ जाय तेम उत्साह भंग थइ पराजय पामे छे.

प्रयाण वखतना लक्षणो.

प्रयाण वखते जो हाथीउ पोतानी सामान्यगतिथी उलटी रीतनी गति करे अथवा दुष्ट स्वरथी गर्जना करेतो ते राजाना प्रधाननो वध थाय छे तेमज घोडाउपण जो स्वरभंग करे तो राजाना मुख्य प्रधाननुं मृत्यु थाय छे. जो हाथी सजलमेघना जेवी कठोर गर्जना करे तो अवश्य राजानुं मृत्यु थाय. शंखना जेवी गर्जना करे तो विजय थाय अने गधेडाना जेवी गर्जना करे तो पराजय थाय छे. शूर अने शस्त्रधारी पटलना योधाउ जो प्रयाण समये परस्पर क्लेश करे तो राजा तथा प्रधाननो वध थाय छे.

ठोडी दिव्यज्ञानने जाणनारा निमित्तिआउने पूछीने प्रयाण करवुं के जेथी विजयनी प्राप्ति थाय.

ग्रह, नक्षत्र, करण, तिथिउ, मुहूर्त्तों, स्वरज्ञान लक्षण तथा सामुद्रिक-व्यंजन आदिकना निमित्त-पूर्वक करेलु प्रयाण मंगलकारी थाय ठे. जे राजा निमित्तज्ञाननो अनादर करी प्रयाण करे ते जेम मदोन्मत्तहाथी सिंहनी गर्जना सांजली मदरहित थइ जाय तेम उत्साह जंग थइ पराजय पामे ठे.

प्रयाण वखतना लक्षणो.

प्रयाण वखते जो हाथीउ पोतानी सामान्यगतिथी उलटी रीतनी गति करे अथवा दुष्ट स्वरथी गर्जना करेतो ते राजाना प्रधाननो वध थाय ठे तेमज घोडाउपण जो स्वरजंग करे तो राजाना मुख्य प्रधाननुं मृत्यु थाय ठे. जो हाथी सजलमेघना जेवी कठोर गर्जना करे तो अवश्य राजानुं मृत्यु थाय. शंखना जेवी गर्जना करे तो विजय थाय अने गधेडा ना जेवी गर्जना करे तो पराजय थाय ठे. शूरा अने शस्त्रधारी पेदलना योधाउ जो प्रयाण समये परस्पर क्लेश करे तो राजा तथा प्रधाननो वध थाय ठे.

सेनापतिनुं शुभ लक्षण.

जे सेनापति थोडुं बोलनारो, गौरकांतिवालो, सरल, डाह्यापणवालो अने जमणा हाथमां जवना चिन्हवालो होय ते विजय अपावे छे.

सेनापतिनुं अशुभ लक्षण.

श्यामरंगनो, विकारवाली आकृतिवालो, डावी तरफ आवर्त्तना चिन्हवालो तथा जाज्वल्यमान प्रकृतिवालो सेनापति होय तो घणो जय अपावे छे.

(प्रयाण वखते मशालोनुं लक्षण.)

सेनाना अग्रभागमां रहेली मशालना दीपकनी शिखा जो पीलारंगनी होय अथवा श्याम अने लालरंगनी होय तो ते सेना पराजय पामे छे, जो ते शिखा श्वेत रंगनी अथवा केशरीआ रंगनी होय तो ते सेनानो विजय थाय छे.

(प्रयाणनां सामान्य लक्षणो.)

जे घोडाउपर सेनापति स्वार थयो होय, ते घोडो प्रयाण वखते जो दक्षिणदिशा तरफ मुखराखी हेषारव करे तो सैन्यनो पराजय थाय पण जो पूर्वके इशानदिशा तरफ मुख राखी हेषारव करे तो जय थाय छे. प्रयाण वखते जो राजा परिवार अथवा मंत्री प्रत्ये

कोप करे तो प्राये करीने ते राजानुं मृत्यु था
छे. प्रयाण वखते जो अकस्मात् राजानो मुगट प
जाय तो सैन्यनो अवश्य विनाश थाय. जो ते स
येज हाथी, वाजिओना नादथी चमकीने, आमते
दोडवा लागे तोपण सैन्यनो विनाश थाय छे. प्रय
ण वखते उंदर, नोळीओ, कुतरो, सुअर अने पतं
डावी बाजुथी आवीने आडा उतरी जमणी बा
जायतो राजाने मोटुं संकट आवी पडे. प्रयाण सम
ये सैन्यना अग्रभागमां घणी मक्षिका उडती माळु
म पडे अथवा जो सर्प फेण चडावी सन्मुख आव
तो जोवामां आवेतो ते सैन्यनो विनाश थाय छे. प्र
याण वखते जो अचानक मेघवृष्टि थाय अथवा धू
के धूलिनी वृष्टि थाय तो सैन्यनो वध थाय छे. ज
राजानी सेनाना प्रयाण समये मांस भक्षण करनार
पक्षीओ भयंकर स्वरो करे तो अवश्य ते राजानी से
नानो भंग थाय छे. जो प्रयाण वखते सैन्यना को
पण भाग उपर अकस्मात् उल्का आवीने पडे त
ते राजाए तेदिवसे बीलकुल प्रयाण करवुं नहीं. ज
सेनाना प्रयाण समये निर्घात सहित भूमिकंप था
तो सेनाए प्रयाण करवुं नहीं कारणके ते सेनान

अवश्य संहार थाय छे. प्रयाण वखते जो पाषाणनो वरसाद थाय तो घणो जयंकर संग्राम थइ घणा जीवोनो वध थाय छे. जो ते समये प्रतिकूल वायु थाय अने पाषाण सहित धूलनी वृष्टि थाय तो शत्रुनो जय थाय छे. ते समये जो दक्षिण दिशानो वायु वाय तो शत्रुनी सेनानो पराजय थाय छे. हीन अंगोवाला, जटाधारी, नपुंसको तथा चांडालो जो प्रयाण समये सन्मुख आवता मालम पडेतो अवश्य सेनानी मोटी हार थाय. दीक्षालीधेला एवा नग्न माणसने सन्मुख आवतो जोइ जे राजा अमंगल माने तेने अमंगलज थाय अने जे राजा मंगल माने तेने मंगलज थाय छे. तेवा दीक्षितने जो दुःख आपे तो राजाने दुःख थाय, तेनाउपर आक्रोश करे तो वध बंधन थाय, तेने ताडन करे तो मृत्यु थाय अने तेने जो रोवरावे तो राजाने देशपार जवुं पमे. जो राजा तेवा यतिनी पूजा करे तो लाज थाय तेथी तेवा दीक्षित साधुने राजाए प्रयाण समये महा मंगलकारी जाणवो. वली तेवा साधुने जे राजा आदर मानथी नगरमां प्रवेश करावे, ते राजा शत्रु नगरनो स्वामी थाय छे. प्रयाण समये सैन्यनी पताकाउ जो ऊर्ध्व

भागमां उडती मालुम पडे तो ते काले प्रयाण करवुं नहीं, कारणके, ते पराजयने सूचवनारी छे. सैन्यना प्रयाण काले लश्करी उंट जो हाथीने जोइ नाशवा लागे अथवा नाच करवा लागे तो तेराजाना मंत्रीनो शत्रुथी वध थाय छे. प्रयाण समये भांगेलुं, बलीगयेलुं अथवा सारथिविनानुं गाडुं जो सन्मुख आवतुं मालुमपडे तो तेकाले प्रयाण करवुं कल्याणकारी नथी. सैन्यना प्रयाण समये आकाशमां थती विजली जो सूर्यनां कीरणोने भेदी भयंकर गर्जना करावेतो ते सेनानो शत्रुथी विनाश थाय छे. सैन्यनुं प्रयाण थया बाद जो ते सैन्यमांथी कोई मनुष्य अथवा पशु पाछुं वले तो ते प्रयाण निष्फल थाय छे. सैन्य प्रयाण करतुं होय तेसमये जो राजा पोताना वाहनपरथी पडीजाय तो ते प्रयाण निंदनिक थाय छे. जे राजाना सैन्य ध्वज विगेरेमां मांस भक्षण करनारा पक्षीओ छुपाई बेसे ते राजाना सैन्यनो भयंकर वध थाय छे. जे राजा प्रयाण समये वारंवार मुहूर्त बदलाव्या करे ते राजाने परसैन्यथी बंधन थाय छे. प्रयाण करतां राजाना रथनुं धोंसरुं अथवा कांइपण साधन जो भांगीजाय तो जाणवुं के, तेराजानो वध

भागमां उडती मालुम पडे तो ते काले प्रयाण करवुं नहीं, कारणके, ते पराजयने सूचवनारी छे. सैन्यना प्रयाण काले लश्करी उंट जो हाथीने जोइ नाशवा लागे अथवा नाच करवा लागे तो तेराजाना मंत्रीनो शत्रुथी वध थाय छे. प्रयाण समये भांगेलुं, बलीगयेलुं अथवा सारथिविनानुं गाडुं जो सन्मुख आवतुं मालुमपडे तो तेकाले प्रयाण करवुं कल्याणकारी नथी. सैन्यना प्रयाण समये आकाशमां थती विजली जो सूर्यनां कीरणोने भेदी भयंकर गर्जना करावेतो ते सेनानो शत्रुओथी विनाश थाय छे. सैन्यनुं प्रयाण थया बाद जो ते सैन्यमांथी कोई मनुष्य अथवा पशु पाछुं वले तो ते प्रयाण निष्फल थाय छे. सैन्य प्रयाण करतुं होय ते समये जो राजा पोताना वाहनपरथी पडीजाय तो ते प्रयाण निंदनिक थाय छे. जे राजाना सैन्य ध्वज विगेरेमां मांस भक्षण करनारा पक्षीओ छुपाई बेसे ते राजाना सैन्यनो भयंकर वध थाय छे. जे राजा प्रयाण समये वारंवार मुहूर्त्त बदलाव्या करे ते राजाने परसैन्यथी बंधन थाय छे. प्रयाण करतां राजाना रथनुं धोंसरुं अथवा कांइपण साधन जो भांगीजाय तो जाणवुं के, तेराजानो वध

भागमां उडती मालुम पडे तो ते काले प्रयाण करवुं नहीं. कारणके. ते पराजयने सूचवनारी छे. सैन्यना प्रयाण काले लश्करी ऊंट जो हाथीने जोइ नाशवा लागे अथवा नाच करवा लागे तो तेराजाना मंत्रीनो शत्रुथी वध थाय छे. प्रयाण समये नांगेलुं. वलीगयेलुं अथवा सारथिविनानुं गाडुं जो सन्मुख आवतुं मालुमपडे तो तेकाले प्रयाण करवुं कल्याणकारी नथी. सैन्यना प्रयाण समये आकाशमां थती विजली जो सूर्यनां कीरणोने तेडी भयंकर गर्जना करावेतो ते सेनानो शत्रुथी विनाश थाय छे. सैन्यनुं प्रयाण थया बाद जो ते सैन्यमांथी कोइ मनुष्य अथवा पशु पाछुं वले तो ते प्रयाण निष्फल थाय छे. सैन्य प्रयाण करतुं होय ते समये जो राजा पोताना वाहनपरथी पडीजाय तो ते प्रयाण निंदनिक थाय छे. जे राजाना सैन्य ध्वज विगेरेमां मांस तक्षण करनारा पक्षीओ बुपाइ बेसे ते राजाना सैन्यनो भयंकर वध थाय छे. जे राजा प्रयाण समये वारंवार मुहूर्त्त बदलाव्या करे ते राजाने परसैन्यथी बंधन थाय छे. प्रयाण करतां राजाना रथनुं धोसरु अथवा कांइपण साधन जो भांगीजाय तो जाणवुं के. तेराजानो वध

थशे. राजाना प्रयाण समये जो तेना शरीरनुं कांइ पण सुवर्णनुं आभूषण गुम थाय तो जाणवुंके, तेनुं सैन्य शत्रुर्उथी लुंटाशे.

(नक्षत्रो उपरथी प्रयाणनुं फल.)

विशाखा, रोहिणी अने उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां करेलुं प्रयाण विजय आपतुं नथी. पुष्यनक्षत्रनी साथे जो सूर्यनो योग होय अने ते समये जो राजाए प्रयाण कर्युं होय तो सैन्यनो विनाश थाय ठे. रेवती नक्षत्र साथे जो सूर्यनो योग थयो होय ते समये जो प्रयाण कर्युं होय तो ते सर्व प्राणीउने अशुनठे, तेमांपण विशेषे करीने राजाने तो अशुनजठे

जे राजा प्रयाण करतो ठतो मार्गे आवेला जिन मंदिरोमां महोत्सव करे तेराजाना सर्वविघ्नो दूरनाशे ठे अने तेने विजय मलेठे. जे राजाना प्रयाण समये वस्त्रादिक पमे तो ते राजानो सैन्यसहित वध थाय ठे.

सर्व शुकनोमां स्वरज्ञान (स्वरोदय) मुख्य ठे माटे ते स्वरज्ञान पूर्वक करेलु प्रयाण अवश्य विजय आपे ठे. प्रयाण समये जो वृक्ष उपर अकाले फल फुल आवेलां मालम पमे तो ते प्रयाण विजयनो

नंग करे छे. प्रयाणकाले जो राजानां वाहनके व-स्त्रोउपर श्वान आवी विष्टामूत्र करे तो ते राजानो निश्चे वध थाय छे, तेमां संशय नथी. प्रयाणकाले जो कोइ रजस्वला स्त्री सन्मुख आवती मालम पडे तो राजानो पराजय थाय छे. प्रयाण समये जो श्वान नूमिमां कांइ अनाज अथवा पकान्न दाटतो मालुम पमे तो ते राजानो सैन्यसहित विनाश थाय छे. जो प्रयाण करतां मार्गमां राजानो पुरोहित मृत्यु पामे अथवा छत्र नांगी जाय के अग्निविना ज्वाला वल-ती देखाय तो ते राजानो विनाश थाय छे. कोइ म-नुष्य अथवा पशु पोताना जाति स्वरने त्यजीने सै-न्यनीवच्चे बोलवा लागे तो ते सैन्यमां विविध जात-ना रोगोनो उपद्रव प्रगट थाय. प्रयाण करती से-नामां जो कलह जागी उठेतो तेमांथी अवश्य बीजा अथवा त्रीजा नागनो नाश थाय. प्रयाण करती से-नानां मनुष्योमां जो आंखोनी व्याधि उत्पन्न थाय तो तत्काल ते सेनानो अग्निथी विनाश थाय छे पण ते समये जो राजा देवोनुं, वृद्धोनुं तथा ब्रह्मचारी-उंनुं पूजन करे तो तेउना तपना प्रनावथी ते उपद्रव शांत थइ जाय छे. जो सैन्यना हाथी, घोमा, रथो

विगेरेमां जो उत्पातो थाय तो राजानुं बंधन थाय अने सैन्यनो वध थाय. प्रयाण करती सेनाना अग्रभागमां जो कागडाउनुं टोळुं शब्द करतुं आकाशे उडतुं मालम पडे तो सैन्यनो विनाश थाय. प्रयाण करतां राजाना रथ उपर जो घुवड पक्षी आवीने बेसे तो राजानुं मार्गमांज मृत्यु थइ जाय छे.

प्रयाण समये जो राजा अभक्ष्य पदार्थोनुं भोजन करे तो राजानो घात थाय छे जो सैन्यनी अंदर रहेला पशुउ परस्पर लडवा लागे तो ते सेनानो अवश्य शत्रुउथी संहार थाय. जे सैन्यनां शस्त्रो ज्वालायमान थाय अथवा नमी जाय के म्यानमाथी बाहार नीकली पडे ते सैन्यनो विनाश थाय छे. जे वखते सन्मुख वायु वातो होय ते समये प्रयाण करवाथी पराजय थाय छे. संध्याकाले युद्धना उपकरणोमां जो वर्णविनानां वादलाउ देखाय तो जाणवुं के. तत्काल मोटो रणसंग्राम थशे. पीला, राता अथवा लीला रंगनां वादलाउ जो शस्त्रोमां देखाय तो शत्रुना सैन्यथी ते सैन्यनो विनाश थाय. सैन्यना प्रयाण वखते जो तेनी अंदर कागडाउ, गीधो, शीयालो तथा बीजां मांसभक्षी प्राणीउ देखाय तो

मोटो जय आवी पमे. घुवमो, बिलामाउ, अथवा उंदरो सैन्यनी आसपास जो मालुम पमे तो निश्चयथी सेनानो वध थाय. सैन्यना पमाव वखते जो सर्व घोडाउ जमि उपर आलोटवा लागे तो त्रण दिवसनी अंदर सैन्यनो विनाश थइ थाय. सैन्यनी अंदर कोइ घोमी त्रण पगवाला बच्चाने जन्म आपे तो ते सैन्यनो निश्चयथी विनाश थाय. जे सैन्यना घोमाउनां मुखअश्रुवालां अने दीननावालां देखाय अथवा ते घोमा जो पगथी जमिने खणता मालुम पमे तो सैन्यनो मोटो संहार थाय. जो सैन्यना घोमाउ वारंवार पोताना कानो उंचा करीने हेषारव करे तो तुरत रणसंग्राम थाय छे. जो घोमाउ घास खाय नहीं तथा पाणी पीये नहीं अने आमतेम दोमादोड करे तो तत्काल अग्निनो जय थाय. जो घोडाउ गर्विष्टपणे क्रौंच पक्षी जेवा मधुर शब्दो वारंवार करे तो ते राजानो जय सूचवे छे. वाजीत्रोना नाद सांजलीने जो हेषारव करे तोपण राजानो जय थाय छे. घोमाउने तैयार करतीवेलाए जो तेउ युद्धनी इछाथी प्रयाण माटे चपलता बतावे तो खरेखर राजानो जय थाय छे. चालतीवेलाए जो घोमाउ पो-

ताना पगोने जमीन साथे घसीने चाले तो मोटो जय उत्पन्न थाय. प्रयाण वखते अश्वोना मुख उपरनो जाग तेजस्वी देखाय तो राजाने तुरत विजय प्राप्त थाय छे. घोमाउना मुखमांथी तथा अपान द्वारमांथी अग्निनी ज्वालाउ नीकलती मालुम पमे तो मोटो जय उत्पन्न थाय. घोमाउना मुखमांथी जो श्याम रंगनुं फीण नीकले तो तत्काल तेना स्वामीनो वध थइ जाय छे. जो घोमाना स्कंधप्रदेशमांथी ज्वालाउ नीकलती देखाय तो सेनापति मोटा जयमां आवी पडे जो कोइ घोमो पोतानी केशवालने चावतो मालम पडेतो अवश्य शत्रुना सैन्यनो विनाश थाय. जो कोइ अश्व पोतानुं पुंठकुं चावतो जोवामां आवे तो प्रधान सहित राजानो वध थाय. जो घोडो पोताना पग घसेतो सैन्यनी मोटी हार थाय. जो सैन्यमां कोइ हाथी पोतानी सुंढमां घोडानुं पुंठकुं पकमे तो जरुर राजानो वध थाय. जे राजाना सैन्यना हाथीउ आंखोमां अश्रु लावी रुदन करे ते राजानो अवश्य वध थाय. जे राजाना हाथी अथवा घोमाना मुखमांथी रुधिरना बिंदुउ पमता देखाय ते राजानो पराजय थाय. प्रयाण समये जो कोइ हाथी-

नुं मृत्यु थइ जाय, तो राजानो पराजय थाय. मार्गमां चालतां जो हाथी आकडानां पत्रो खातो जाय तो सैन्यनो पराजय थाय. घोडाओ जो वारंवार मधुर स्वरे हेषारव करे, आगलना जमणा पगथी जो जूमिने खोतरे अने हाथीओ गंजीर गर्जना करे तो निश्चयथी राजानो जय थाय. हाथीना अग्रदंत उपर जो पीलां, रातां तथा श्वेतरंगां पुष्पो देखाय तो राजानो अवश्य जय थाय. जो हाथीओ पोतानी शुंढने वारंवार आकाश तरफ उगालता मालम पडे तो पण राजानो विजय थाय. मद करता हाथीओ नीचे पडेला पोताना मदने शुंढथी उपाडी जो चाटवा लागे तो राजानो अथवा महामात्यनो निश्चे वध थाय छे. मार्गे चालता हाथी जो पथरा उपाडी फेंकवा लागे तो ते सैन्यनो पराजय थाय.

इति नैमंथिके, जद्रबाहुके निमित्ते यात्राविधि वर्णनो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अध्याय १४ मो.

। उत्पातस्वरूप. ।

जद्रबाहु स्वामी कहे छे. हे जिक्षुको, हवे हुं तमोने उत्पातोनुं स्वरूप कहीश.

मूल प्रकृतिमां जे विपर्यास (उलटापणुं) थाय ते उत्पात कहेवाय छे. जो शीतल ऋतुमां अत्यंत ताप पडवा लागे तथा तापवाली ऋतुमां अत्यंत शीत पडवा लागे तो जाणवुं के, त्यारथी नवके दशमे मासे मोटो जय उत्पन्न थशे. जलमां रहेनारा मत्स्यादि जंतुउ जो स्थलउपर रम्या करे तो जाणवुं के, वार वर्षो सुधी घणो जयंकर डुकाल पडशे. वनमां रहेनारा पशुउ जो नगरमां आवी वसे अने नगरना पशुउ जो वनमां आवी वसे तो ते वर्षमां बीलकुल घासचारो न थाय.

चंद्रनो उदय थया छतां पण जो समुद्रनी अंदर जरती न आवे तो जाणवुं के, एकवर्ष सुधी वरसादनुं बिंडुपण पडशे नही. सूर्यने जोइ घुवडपक्षी जो शब्द करवा लागे तथा आसपास उडवालागे तो सर्व प्रकारनां धान्योनो विनाश थाय. जो अचानक जिनप्रतिमा हसती मालुम पडे तो महामारीनो जयंकर उपद्रव थाय. जे देशमां पक्षीउ, पशुउ तथा मनुष्यो जो विपरीत मार्गथी प्रसूति करतां मालुम पडे तो छमाससुधी ते देशनी प्रजाने जय थाय अने राजानुं मृत्यु थाय. जो मदिरानो, रुधिरनो, अस्थिनो

तथा अंगारानो वरसाद थाय तो चारे प्रकारनो भय उत्पन्न थाय. आकाशमां ऊडतां पक्षीओ जो बेभान थइ पृथ्वी उपर पडवामांडे तो कल्पांतकाल जेवो दावानल प्रगट थाय. जो नगरमां इंधण विनानो अग्नि बल्या करेतो छमासनी अंदर ते नगरना राजानो विनाश थाय. वृक्षोमांथी जो रुधिरनी धाराओ करवा मांडे तो जाणवुं के, क्षुद्रदेवताओनो उपद्रव थशे. जो वडनुं वृक्ष फलरहित थइ पत्रो सहित श्याम रंगनुं थइ जाय तो आठ दिवसनी अंदर तेनी आसपास सो योजन सुधीनी भूमिमां कंप थाय अने तेथी घणां नगरोनो विनाश थइ जाय. जो शीयालानी ऋतुमां आंबाना वृक्ष उपर मोर आवे तोआवता वर्षमां जरूर दुकाल पडे. अश्वविगेरे पशुओ जो पोतानी विष्टा खावा लागे तो त्रण वर्ष सुधी दुकाल पड्या करे. विजातीय पशु पक्षीओ जो विजातीय पशुपक्षीओनी साथे मैथुन करतां देखाय तो सर्व पाकनो विनाश थइ घणां मनुष्योनो संहार थइ जाय. चंद्रना बिंबमां धनुष्य चक्रावेला मनुष्यनुं चित्र जो मालुमपडे तो मोटो भयंकर रणसंग्राम थाय. दग्ध थयेला वृक्षउपर जो पत्रपुष्पो उगतां जणाय तो घणां

पट्टीतनो विनाश थाय. कोइपण देवनी प्रतिमा जो वारंवार आसनपरथी खसीने वांकी अथवा विपरीत मुखवाळी थाय तो ते नगरना लोको दिनदिन प्रत्ये निर्धन थतां जाय. जो जिन प्रतिमाना मुखमांथी धुंवाडा नीकळतां मालमपडे तो ते ७ मासनी अंदर ते नगरनो अग्निथी विनाश थइ जाय.

घीलाडा अथवा कुतरा जो घास खातां मालुमपडे तो महामारीनो उपद्रव थाय. जो रात्रे शीयालीआ नगरनी अंदर जिनमंदिरनी सन्मुख मुख करी जयशब्दो करे तो जाणवुं के, एक मासनी अंदर ते नगरनो जलथी अथवा परचक्रथी विनाश थशे. जे नगरमां ब्राह्मणो यज्ञमां पशुहिंसा करे, ते नगरना लोको थोडा वखतमां निर्धन थइ जाय छे. जे देशमां जलाशयोमां रहेला जलचर जंतुओ पोतानी मेळे अंदर मृत्यु पामता देखाय तो ते देशमां ७ वर्षसुधी जयंकर दुकाळपडे. जे मकाननी अंदर रात्रे गीत अने वाजित्रोनानाद संजळाय, ते मकाननी अंदर रहेवाथी शरीरनो विनाश थाय छे. जो वावेला वीजथी विपरीत जातिनुं धान्य उगी नीकळे तो वे वर्षसुधी वीवृष्टि थाय नही.

इंद्रनी प्रतिमा जो मस्तक विनानी देखायतो ते देखनार माणस फक्त त्रण माससुधी जीवी शके छे जे माणसने हाथे जिनप्रतिमानुं मस्तक छेदाइजाय ते माणस निर्धन थइ अढार मासनी अंदर असाध्य व्याधिथी मृत्यु पामे छे. वासुदेवनी प्रतिमाना उपकरणो जो जांगी जाय तो प्रजादुःखी थाय अने चार मासनी अंदर राजानो वध थइ जाय. जो कामदेवनी प्रतिमा तेना आसन उपरथी खसीजाय तो वेश्याउने मोटो जय उत्पन्न थाय. जो महालक्ष्मीनी प्रतिमानी आंखोमांथी अश्रुउंपडता देखाय तो राज्यनो विनाश थइ लोको घणां दुःखी थाय. श्मशानजूमिमां अथवा आकाशमां जो मस्तक विनानो पुरुष फरतो मालुमपडे तो जयंकर मरकी फाटीनीकले अने घणां जीवोनो संहार थाय. जो ब्रह्मानी प्रतिमा उलटा मुखवाली देखाय तो कारीगरोने ७ माससुधी जय उत्पन्न थाय. महाकालीनी जिव्हा जो खंडित थयेली मालम पडेतो जयंकर रणसंग्राम थइ घणां जीवोनो वध थाय. काष्टनी पुतली जो नृत्य करवा लागे तो गर्जिणी स्त्रीउंना अकाले मृत्यु थाय. उदय पामतो सूर्य मध्यजागमां जो छिद्रवालो देखाय तो एक मासनी

पाणी जो एकदम उष्ण थइ उछाला मारवा लागे तो जूमिकंप थइ घणा जीवोनो विनाश थाय. जो हरिण, मनुष्यना जेवी जाषा बोली जायतो जाणवुं के, एक वर्षसुधी वरसाद पमशे नहीं. वीलाकाडे उंदरो ने जोइ जो जय पामी जाय तो रोगनी उत्पत्ति थाय' जे नगरना देवालयना शिखरमांथी धूमामा नीकलता मालुम पडे ते नगरनी प्रजा त्रण वर्षसुधी जयंकर व्याधिथी दुःखी थाय. जिनमंदिरनो बंधावनार माणस जो लंपट गुरुने हाथे प्रतिष्ठा करावे तो संघने मोटोजय थाय. जो शिवा (साहुमी) जिनमंदिरमां दाखल थइ जिनमूर्त्तिनी आशातना करे तो नगरमां जयंकर अग्निनो उपद्रव थाय. जिन मंदिरना शिखरमां जो धुवम पक्षी वास करीने रहे तो ७ वर्षसुधी वृष्टिज थाय नहीं. धुमकेतुनी पुंछमीने छेडे जो कोइ तारो लटकतो देखाय तोते देशमां दश वर्षसुधी महामारीनो जयंकर उपद्रव थाय. तेमां बीलकुल संशय नहीं.

जलमां रहेलुं मत्स्य जो अट्टहास करवा लागे तो त्रण वर्षसुधी जलनुं एक बिंदुपण पडे नहीं जलमां पमेली वृक्षनी छाया जो पाछी हठे नहीं, तो ते गा-

मना लोकोने मोटो जय उत्पन्न थाय. महादेवना लिंगमांथी जो कमलनुं पुष्प नीकलेलुं देखाय तो घणी स्त्रीऊंनुं मृत्यु थाय. रात्रे आम्र वृक्ष उपर जो अग्निना नमका देखाय तो अति वृष्टिथी पाकनो विनाश थाय. जो सर्प मुखने पाछल राखी पुछमानो जाग फेणनी जेम उंचो करी चालवा लागे तो घणो जयंकर नूमिकंप थाय. एकी साथे धूलिनी वृष्टि, उल्कापात तथा जयंकर अदृश्य धमाकाउं थाय तो ते राज्यनी पायमाली थाय. शुक्लपक्षना पमवाने दिवसे जो चंद्रनुं मंमल वलया सरखा आकारवालुं देखाय तो नूमिनुं भ्रमण थइ तेपरना सर्व प्राणीउंनो पंदर दिवसनी अंदर विनाश थइ जाय. जो बीजना चंद्रनां बंने शृंगो सरखां देखाय तो अल्पवृष्टि थाय अने तेने लीधे लोकोने सामान्यपणे दुःख उत्पन्न थाय. देवमंदिरपर चमावेली पताका जो तेज दिवसे पमी जाय तो ते नगरना लोको निर्धन थइ जाय. वगामयाविना जो वाजिंत्रो वागवा लागे तो राजाने जय उत्पन्न थाय. जो रोहिणी नक्षत्रमां नूमिकंप थाय तो ठ माससुधी प्रजाने पीमा थाय.

श्री जद्रस्वामी कहे ठे-हे निकुंज, एवी रीते उत्पा-

तो ज्यां थतां होय ते देशने त्यजीने बीजा देशमां विहार करवो.

इति नैर्ग्रंथिके भद्रबाहुके निमित्ते उत्पात कांडनामा चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अध्याय १५ मो.

। ग्रहचार लक्षण. ।

श्री भद्रबाहु स्वामी कहे छे-हेशिष्यो, हवे हुं तमोने ग्रहचारनुं लक्षण कहीश.

। शुक्रचारनुं फल ।

मध्यरात्रे आकाशना मध्य भागमां जो शुक्रनो तारो आवे तो प्रजातमांज भूमिकंप थाय. सूर्यने आश्रय करीने रहेलो शुक्र जो आकाशमां देखाय-तो सर्व प्राणीओने जय थाय. जो अकाले शुक्रनो उदय थाय अने अनियमित रीते गमे त्यारे अस्त थाय तो त्रण वर्षसुधी प्रजाने तथा राजाने भय थाय. जो मूलनक्षत्रमां शुक्रनो योग थाय तो बिलकुल वर्षाद पडे नहीं. जो शुक्रनो तारो श्वेतरंगनो अने निस्तेज देखाय तो मध्यम प्रकारनुं धान्य पाके. शुक्रनी चालमां जो राहु आवी आवे तो अतिवृष्टि थइ धान्योनो नाश थाय. जो वर्षाऋतुमां कृति-

था, गंडिपो, अने विमानो वडिये पृथ्वी व्याप्त होय तो व्याधि, अनावृष्टि अने धान्योनो विनाश थाय अने मेघ नक्षत्रोनी उपरे जो पृथ्वी व्याप्त होय तो दुकाल थाय. जो गंडिपो नक्षत्रनी माथे पृथ्वीनुं व्यापन थाय तो थोडो जय उत्पन्न थाय. जो वराह पृथ्वी व्यापे अने [illegible] पाणी पडे तो थोडी वृष्टिनो उदय थाय जेथी पृथ्वी आर्द्र. जो पृथ्वी सघळी [illegible] लागतुं पेटे [illegible] तो आगली पाक आवे नहीं।

इति श्रीप्रतिबद्धे भद्रबाहुके निमित्ताधिकार पुस्तके

[illegible] नाम [illegible]ऽध्याय ॥ १५ ॥

अध्याय १६ मो

। शनिचारनो भाग ।

श्री भद्रबाहु स्वामी कहे छे के हवे हुं तमोने शनिचारना भागनुं स्वरूप कहीश।

शनिचारना भाग जो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जो शनिचार [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तो [illegible] थाय

शनिचारना भागनुं फळ

शनिनो [illegible] जो [illegible] [illegible] [illegible]

थाय, पांडु तथा लालरंगनो देखायतो जय उत्पन्नकरे, पीलारंगनो होय तो व्याधि उत्पन्न करे, लीलारंगनो देखायतो शस्त्रसंबंधी कोप करे अने श्यामरंगनो देखायतो नदीउं सुकाइ जाय तथा वृष्टिनो प्रतिबंध करे.

। शनि उपरथी जन्मनुं फल. ।

जे नक्षत्रमां शनिनो उदय थाय अथवा अस्त थाय ते नक्षत्रमां जेनो जन्म थयो होय अने ते जो उंच स्थानमां होय तो ते माणस घणां नगरोनो राजा थाय तेमां संशय नथी.

शनिग्रहने जो राहु ग्रस्त करे तो महामारीनो उपद्रव थाय. शनिनी गति जो सतरूपिनी अंतरमां होय तो श्यामरंगनी वस्तुउं घणी मोंघी थाय. जो अश्लेषा नक्षत्र साथे शनिनो योग होय अने ते रात्रिना पाछला भागमां जो गर्जना थाय तो सर्व देशोनुं डुकाल संकट दूरथइ जाय. आर्द्रानक्षत्रनी साथे जो शनिनो योग होय अने साथे जो पश्चिम दिशानो वायु होय तो एक वर्ष सुधी वृष्टि न थाय.

इति श्री नैमंथिके भद्रबाहुके निमित्ते शनैश्चर चारवर्णनो नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अध्याय १७ मो.

। बृहस्पतिनो चार. ।

श्री भद्रबाहु स्वामी कहे छे के हे शिष्य, हवे हुं तमोने बृहस्पतिना चारनुं स्वरूप कहीश.

(बृहस्पतिना ताराना वर्णोनुं फल.)

जो बृहस्पतिनो तारो कपिल रंगनो देखाय तो धननो नाश थाय. श्यामरंगनो देखायतो अतिवृष्टि थाय, पीलारंगनो होयतो व्याधि तथा भयने उत्पन्न करे, पांडुरंगनो होय तो उत्तम वृष्टि करे, लीलारंगनो देखायतो मध्यम वृष्टि करे, लालरंगनो होयतो रणसंग्राम थाय अने धुम्र रंगनो होयतो जलनी उत्पत्तिने अटकावे.

बृहस्पति नक्षत्रो साथे गतिनुं फल.

स्वाति नक्षत्रना ताराथी उत्तरदिशामां जो बृहस्पतिनी गति होय तो अग्निनो भय उत्पन्न थाय, चोरोनुं प्रबल थाय अने वावेला बीजो उगे नहीं. बृहस्पतिनो तारो जो हंमेशना करतां ह्रस्व (टुको) देखायतो दुर्भिक्ष पडे. कांति विनानो देखायतो व्याधि उत्पन्न करे अने विवर्ण देखायतो पापनो उदय थाय तथा फल फुलनी अछत थाय.

पुष्य नक्षत्रनी साथे जो बृहस्पतिनो योग (गुरुपुष्ययोग) होय अने ते समये जो जलबिंदुओ पडे तो त्रण प्रकारना (इतिना) जयनो विनाश थाय अने सर्व प्रजा सुखी थाय. विशाखा, कृतिका, मघा, रेवती, अश्विनी, श्रवण तथा भाद्रपद नक्षत्र साथे जो बृहस्पतिनो योग होयतो उत्तम वृष्टि थाय. ज्येष्टा, मूल, रोहिणी तथा अश्लेषानी साथे जो बृहस्पतिनो योग होयतो मध्यम प्रकारनी वृष्टि थाय. हस्त, अनुराधा अने पुनर्वसु साथे जो बृहस्पतिनो योग होय तो सर्व प्रजा दुःखी थाय अने धान्योनो विनाश थाय. वैशाख शुक्ल पूर्णिमाने दिवसे पश्चिम दिशामां बृहस्पतिना ताराने जो वादलाओ आच्छादित करे तो सर्व प्रकारना रसवाला पदार्थोनो वमणो भाव थाय.

इति नैर्ग्रंथिके भद्रबाहुके निमित्ते बृहस्पतिचार वर्णनो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अध्याय १८ मो.

(बुधना चारनुं फल.)

श्रीभद्रबाहु स्वामी कहेछे– हे मुनिओ, हुंतमोने बुध ग्रहना चारनुं स्वरूप कहुं, ते सांभलो.

सौम्य, मिश्र, संक्षिप्त, तीव्र, घोर, पापिक अने दुर्ग एवी सात प्रकारनी गतिओ बुधना तारानी होय छे. तेओमांथी सौम्य, मिश्र तथा संक्षिप्त ए त्रण प्रकारनी गतिओ शुभ कहेवाय छे अने बाकीनी सघली गतिओ उत्तरोत्तर अनिष्ट कहेवाय छे.

उपर कहेली शुभ गतिथी जो बुधनो योग स्वाति नक्षत्रनी साथे होय तो प्रजामां उत्तम प्रकारनी संपत्ति थाय छे. उत्तर भागमां चालतो बुध उत्तम जाणवो, मध्य भागमां चालतो मध्य जाणवो तथा दक्षिण भागमां चालता बुधने अधम जाणवो. जो बुधनो तारो अति स्थूल देखाय तो धान्योना मूलने वधारे छे. जो ते ताम्ररंगनो देखाय तो शस्त्रोनो प्रकोप करे छे. जो बुध, गुरु, शुक्र अने मंगलना मार्गने रुंधे अने दीप्तिवंत जणाय तो घणो भयंकर रणसंग्राम थाय. जो बुध शुक्रना उत्तर मार्गने अने चंद्रना दक्षिण शृंगने हणे तो राजा, सेनापति तथा नगरना लोकोनी कोइ पण क्रिया सिद्ध न थाय. जो बुध शुक्रना दक्षिण मार्गने अने चंद्रना उत्तर शृंगने हणे तो रोग अने अग्निनो भय उत्पन्न थाय. जो

बुध शुक्रनी साथे अथवा तेनी आगल उभो रहे तो मेघमां घणुं जल भराय.

इति नैर्ग्रंथिके भद्रबाहुके निमित्ते बुधचार वर्णनो नाम अष्टादशोऽध्याय ॥ १८ ॥

अध्याय १९ मो.

(केतुना चारनुं फल.)

श्रीभद्रबाहु स्वामी कहेछे–हे शिष्यो, हवे हुं तमोने केतुना चारनुं स्वरूप कहीश.

धूमकेतुनी साथे जो बीजो धूमकेतु उगेलो देखाय तो प्रजानो विनाश थाय. धूमकेतु पोतानी शिखाओने जे दिशा तरफ लंबावे ते दिशाना लोकोमां भुखमरो विगेरेनी पीडा उत्पन्न थाय. जो धूमकेतु पोतानी कांतिथी शुक्रने हणे तो राजाने भय उत्पन्न थाय. धूमकेतु चंद्र तरफ दोडतो मालुम पडे तो मेघ अल्पजल आपे छे जो धूमकेतु सप्तऋषि मांहेला कोइपण ताराने पोतानी पुंछडीथी स्पर्श करे तो लोकोमां महामारीनी पीडा जोसथी चाले. जो धूमकेतु पोतानी शिखाओथी बृहस्पतिने हणे तो गृहस्थ लोकोना घणां मृत्यु थाय. जो धूमकेतुने छेडे वे शीगडाओनो आकार देखाय तो घणां पशुओनो संहार

थाय. जो धूमकेतुने एकथी वधारे पुछडीउं होय तो भयंकर दुकाळ पडे. धूमकेतुनी पुछडी जो पंच रंगी होय तो पांच वर्षोसुधी एवो भयंकर दुकाळ पडे के तेथी कोइ विरलाज प्राणी जीवी शके. जो धूमकेतुनी पुंछडी वलयना सरखा आकारनी होय तो शत्रु राजा आवी ते देशने पायमाल करे.

इति नैर्ग्रंथिके भद्रबाहुके निमित्ते धूमकेतुचार वर्णनो नाम एकोनविंशतितमोऽध्यायः ॥१९॥

अध्याय २० मो.

(ग्रहयुद्धनु स्वरूप.)

श्रीभद्रस्वामी कहेछे—हे शिष्यो, हुं तमोने ग्रह-युद्धनु स्वरूप कहीश ते श्रवण करो.

श्वेत वर्णनो ग्रह जो श्वेत वर्णवाळा ग्रहने हणे तो ब्राह्मणोने घणी पीडा थाय. पीळारंगनो ग्रह जो पीळा रंगना ग्रहने हणे तो वैश्योने घणुं दुःख थाय. श्याम वर्णनो ग्रह जो श्यामवर्णना ग्रहने हणे तोशूद्रोने मोटो भय थाय. गुरु अने बुधनु जो युद्ध थाय तो प्रवास करनारा प्राणीओने भय थाय.

(ग्रहोनुं स्वामित्व)

जळनो स्वामी शुक्र छे, धान्यनो स्वामी गुरु छे,

सुखदुःखनो स्वामी मंगल छे, केतु फलफुलनो स्वामी छे, बुध चलचित्तोनो स्वामी अने सूर्य सर्वनो स्वामी छे. जो शुक्र अने गुरु वच्चे युद्ध थाय तो दुकाल पडे, शुक्र अने मंगल वच्चे युद्ध थाय तो जयंकर रणसंग्राम थाय अने केतु तथा बुध वच्चे युद्ध थाय तो रोगनी उत्पत्ति थाय.

ग्रहोनी जातिसंज्ञा.

शुक्र अने चंद्र स्त्री संज्ञावाला छे अने बाकीना सघला ग्रहो पुरुष जातिनी संज्ञावाला छे.

इति नैर्ग्रंथिके भद्रबाहुके निमित्ते ग्रहयुद्ध वर्णनो नाम विंशतितमोऽध्यायः ॥ २० ॥

अध्याय २१ मो.

(स्वप्नानुं स्वरूप.)

श्रीभद्रबाहु स्वामी कहेछे—हे मुनिओ, हुं तमोने स्वप्नानुं स्वरूप कहुं ते सांजलो.

जेनामां श्लेष्म वधारे होय तेवा जीवो जल, कमल, धान्य, मणि, मोती तथा प्रवालाना स्वप्नो जुवे छे. जेनामां पित्त प्रबल होय तेवा जीवो स्वप्नामां राता अने पीला द्रव्यो जुवे छे.

योनिने छेदाएली जुवे, तेणीने पोताना स्वामी तरफथी लाभ मले छे. जे माणसनुं मस्तक स्वप्नमां छेदाय छे तेने एक हजार सोनामोहोरोनो लाभ मले छे अने घणा उत्तम प्रकारना जोगोने जोगवे छे. जे माणस स्वप्नमां धनुष्य चमावे तेने डव्यनो लाभ तथा शत्रुनो नाश थाय छे. जे स्वप्नामां हाथी उपर चडी आजूपणो धरी परदेश सीधावे, तेने घणी समृद्धि प्राप्त थाय. जे माणस स्वप्नमां देवोनुं, साधुर्उनुं अने ब्राह्मणोनुं दर्शन करे तेनो तुरत विजय थाय छे. जो स्वप्नामां माणस कुवानुं पाणी जीव्हाथी चाटीने पीवे तो ते महा बुद्धिवान् थाय छे. जे माणस स्वप्नमां स्मशानमां जइ सुकाकाष्टपर अथवा सुकावृक्षपर चडे ते घणुं दुःख पामे छे. जे स्वप्नामां मधनुं जक्षण करे ते माणस निर्धन थइ दुःखी थाय छे. जे माणस स्वप्नमां आंबाना फलोनुं जक्षण करे तेनुं क्षुधाथी मृत्यु थाय छे. जे पुरुष स्वप्नमां चांमालणी साथे प्रीति करे छे तेना सौजाग्यनी वृद्धि थाय छे, पण जो तेणीनी साथे संजोग करे तो घणो दरिद्री थाय छे. जे माणस स्वप्नमां पक्षीर्उने मैथुन सेवता जुवे तेनां संतानो मृत्यु पामे छे. जे पुरुष स्वप्नमां वीणा

वगाडे, तेने अत्यंत रूपवती तथा कुलीन स्त्री मले छे. जे माणस स्वप्नमां विष पान करे ते लांबु आयुष्य जागवे छे. जे माणस उंट उपर चढीने दक्षिण दिशामां जाय,तेनुं तत्काल मृत्यु थाय छे. जे माणस स्वप्नमां अट्टहास्य करे तेना द्रव्यनो विनाश थाय छे. सूर्योदय समये स्वप्नमां जे माणसना जमणा पगने अंगुठे जो श्वेतरंगनो सर्प डंखमारे तो ते माणसने अकस्मात् घणुं द्रव्य मले छे.जो माणस स्वप्नमां गधेडो, सुकर, उंट अथवा पाडा उपर वेसी जोजन करे तो तेनुं पंदर दिवसनी अंदर मृत्यु थाय छे. जे माणस स्वप्नमां मुशल लइने खांडवा लागे तेनुं द्रव्य अने यश बंने नष्ट थइ जाय छे. जे माणस स्वप्नमां हरिण उपर स्वारी करे तेनी सर्व मिलकत अग्निथी जस्म थइ जाय छे. जे माणस स्वप्नमां पकावेला मांसनुं जक्षण करे तेने जयंकर व्याधि उत्पन्न थाय छे. जो स्वप्नमां वमन थाय तो मृत्यु थाय छे अने जो जुलाब थाय तो धननी हानि थाय छे. जे माणस स्वप्नमां माथापर छत्र धरे छे तेनी स्त्रीनो विनाश थाय छे. जे माणस स्वप्नमां गायन करे छे तेने प्रजातमांज रुदन करवुं पडे छे. स्वप्नमां जे

राज्यासनपर बेसे तेने कारागृहनुं बंधन थाय छे.
माणस स्वप्नमां तलाव के नदी जुवे छे, तेने शोव
तुर थइ विदेश गमन करवुं पडे छे. जेने स्वप्ना
आसन, शयन, वाहन, घर, धन अने आजूषण म
छे, ते हंमेशा सुखी थाय छे. जे माणस स्वप्नामां
णगारेला हाथी, घोडा तथा बलदोने जुवे, तेनो य
वृद्धि पामे छे. जे माणस स्वप्नमां पताका, तरवा
लाकडी अथवा जालुं जुए छे तेने वनवास सेवव
पडे छे. जे माणस स्वप्नामां मूत्रके विष्टा करे छे ते
सारुं जोजन प्राप्त थाय छे जे माणस स्वप्नमां वीर्य
ना कंशथी शोक करे नहीं तेने द्रव्य अने कीर्ति
बंने प्राप्त थाय छे. जे माणस स्वप्नमां प्रीतिथी खा
जल पीवे ते शोकथी निर्मुक्त थाय छे. जे माण
स्वप्नामां लालरंगनी करेण तथा लालरंगनां कमल
मस्तकपर धारण करे तेना द्रव्यनी वृद्धि थाय छे. जे
माणस स्वप्नमां श्यामवर्णी घोडा उपर प्रयाण करे
ते माणसने व्यापारमां घणो लाज न थाय. जे माण
स स्वप्नमां वडना वृक्ष उपर चडे तेने जूत पिशाच
आदिकनो जय उत्पन्न थाय छे.

जयंकर आंखोवाली अने श्यामरंगनी स्त्री स्वप्न

मां ध्यावी जेने उत्तर अथवा दक्षिण तरफ खेंची जाय ते माणसनुं सात दिवसमां मृत्यु थाय छे. जे माणस स्वप्नामां जटाधारी, मुंडित तथा मलीन वस्त्रो-वाला मनुष्यने जुवे तेने अत्यंत भय प्राप्त थाय छे. स्वप्नमां कागडो अथवा कोकिल पक्षी जे माणस-ना मस्तकपर विष्टा करे तेनां यशनो विनाश थाय छे. स्वप्नमां जो श्वेतपुष्पनी माला धारण कराय तो शुभ फल थाय छे. जे माणस स्वप्नामां बेलनी गाडी-मां बेसी पूर्व अथवा उत्तर दिशामां जाय छे तेने द्र-व्यनो घणो लाभ थाय छे. जे माणस स्वप्नामां पर्व-तना शिखरउपर बेसे ते निरोगी थइ पृथ्वीनो जोक्ता थाय छे. जे माणस मृत्तिकानां हस्तीपर बेसी समुद्र-मां स्नान करे ते थोडी मुदतमां राजा थाय छे. जे माणस स्वप्नमां वृक्षोनी शाखाउने अने फलोने पा-डेछे, तेनां संताननो क्षय थइ जाय छे. जे माणस स्व-प्नामां श्वेत अथवा लीलारंगना वस्त्रो पेहेरे छे अ-थवा अग्निथी दाझे छे तेने कदिपण लक्ष्मी छोडती नथी. दाझेलुं तेल, मृत्तिका अने दूध जो स्वप्नामां दे-खाय तो उत्तम पण तेनु भोजन उत्तम नही. जो स्वप्नमां शरीरना अंग, उपांग, केश तथा नखोनी वृद्धि थाय

तो ते उत्तम जाणवी. जो स्वप्नमां उत्तम प्र
धान्योथी तथा फलफुलोथी खोबो भराय त
मोटी लक्ष्मी मले छे. जे माणस स्वप्नमां शण
कुमारिकाने जुवे तेने उत्तम स्त्री मले छे. जे
णस स्वप्नमां तीक्ष्ण शस्त्रोथी पर्वतोने तोडी
तेनो तुरत राज्याभिषेक थाय. जे पुरुष स्वप्नम
ताने स्त्री रूप थयेलो जुवे अने स्त्री पुरुष रूप
ली जुवे तो ते स्त्रीपुरुष पोतांना कुटुंबनी वृद्धि
थाय छे. जे राजा अथवा राजकुमार स्वप्नमां
धनधान्यनी चोरी करनाररूपे जुवे तेना रा
मोटी वृद्धि थाय छे. जे माणस स्वप्नमां रु
स्नान करे तेने थोडा वखतमां घणी लक्ष्मी म
स्वप्नमां जे माणसनी जिह्वा कोइपण रीते
तेना यश तथा द्रव्यनी तत्काल वृद्धि थाय छे.

जो उपर कहेला अनिष्ट स्वप्नो आवे तो
शांतिने माटे देवगुरुनी पूजा करवी, कायाने
करवी तथा उपवास करवो.

इति नैमित्तिके भद्रबाहुके निमित्ते स्वप्नाध्या
नामा एकविंशतितमोऽध्यायः ॥ २१ ॥

अथ द्वितीय स्तबकः

अध्याय २९ मो.

। चार राशिउनुं स्वरूप. ।

मेषः	वृषः	मिथुनः	कर्कः	सिंहः	कन्याः
तुलाः	वृश्चिकः	धनुः	मकरः	कुंभः	मीनः

राशिउनुं लक्षण.

उपर प्रमाणे चार राशिउ छे. तेमांनी दरेकराशि प्राये करीने १३५ घडीनी होय छे दरेक नक्षत्र साठ घडीउनुं होय छे अने तेना चोथा जागने चरण कहे छे. एवानव चरणो एकठा मळ्याथी एकराशि थाय छे.

दरेक राशिउना वर्ण.

(१) मेषराशि आराशिनो रंग रातो होय छे अने तेनो आकार घेटाजेवो होय छे.

(२) वृषजराशि–आराशिनो रंग धोळो होय छे अने तेनो आकार गोधाना सरखो होय छे.

(३) मिथुनराशि–आराशिनो रंग पोपटना रंग सरखो होय छे तथा जेना हाथमां गदा अने वीणा

तो ते उत्तम जाणवी. जो स्वप्नमां उत्तम प्रकारना धान्योथी तथा फलफुलोथी खोबो भराय तो तेने मोटी लक्ष्मी मले छे. जे माणस स्वप्नमां शणगारेली कुमारिकाने जुवे तेने उत्तम स्त्री मले छे. जे मा- णस स्वप्नमां तीक्ष्ण शस्त्रोथी पर्वतोने तोडी पाडे तेनो तुरत राज्याभिषेक थाय. जे पुरुष स्वप्नमां पोताने स्त्री रूप थयेलो जुवे अने स्त्री पुरुष रूप थयेली जुवे तो ते स्त्रीपुरुष पोतांना कुटुंबनी वृद्धि माटे थाय छे. जे राजा अथवा राजकुमार स्वप्नमां पोताने धनधान्यनी चोरी करनाररूपे जुवे तेना राज्यनी मोटी वृद्धि थाय छे. जे माणस स्वप्नमां रुधिरथी स्नान करे तेने थोडा वखतमां घणी लक्ष्मी मले छे. स्वप्नमां जे माणसनी जिह्वा कोइपण रीते छेदाय तेना यश तथा द्रव्यनी तत्काल वृद्धि थाय छे.

जो उपर कहेला अनिष्ट स्वप्नो आवे तो तेनी शांतिने माटे देवगुरुनी पूजा करवी, कायाने शुद्ध करवी तथा उपवास करवो.

इति नैमंथिके भद्रबाहुके निमित्ते स्वप्नाध्याय नामा एकविंशतितमोऽध्यायः ॥ २१ ॥

प्रथमः स्तवकः समाप्तः

अथ द्वितीय स्तबकः

अध्याय २२ मो.

। बार राशिओनुं स्वरूप. ।

मेषः	वृषः	मिथुनः	कर्कः	सिंहः	कन्याः
तुलाः	वृश्चिकः	धनुः	मकरः	कुंभः	मीनः

राशिओनुं लक्षण.

उपर प्रमाणे बार राशिओ छे. तेमांनी दरेकराशि प्राये करीने १३५ घडीनी होय छे दरेक नक्षत्र साठ घडीओनुं होय छे अने तेना चोथा भागने चरण कहे छे. एवानव चरणो एकठा मळवाथी एकराशि थाय छे.

दरेक राशिओना वर्ण.

(१) मेषराशि आराशिनो रंग रातो होय छे अने तेनो आकार घेटाजेवो होय छे.

(२) वृषभराशि–आराशिनो रंग धोळो होय छे अने तेनो आकार गोधाना सरखो होय छे.

(३) मिथुनराशि–आराशिनो रंग पोपटना रंग सरखो होय छे तथा जेना हाथमां गदा अने वीणा

छे एवो पुरुष अने वीणावाली स्त्री एम स्त्री पुरुषना जोडलाना आकारनी आराशि होय छे.

(४) कर्कराशि–आराशिनी आकृति करचलानाजेवी होय छे अने तेनो रंग जंबू फल जेवो होयछे

(५) सिंहराशि–आराशिनो रंग बुखरो होय छे अने आकार सिंहना सरखो होय छे.

(६) कन्याराशि–आराशिनो रंग विविध प्रकारनो होय छे अने तेनो आकार वाहनपर बेठेली क्रोधातुर कुमारिका सरखो होय छे.

(७) तुलाराशि–आराशिनो रंग कालो अने आकार त्राजवा झाली बेठेला पुरुष सरखो होय छे.

(८) वृश्चिकराशि–आराशिनो रंग सुवर्ण सरखो पीलो अने तेनो आकार विंछी जेवो होय छे.

(९) धनराशि–आराशिनो रंग पीलो होय छे अने तेनो आकार घोडापर बेठेलो पुरुष जेना हाथमां धनुष्य चडावेलु होय छे अने जेना पग देखाता नथी तेना जेवो होय छे.

(१०) मकरराशि–आराशिनो रंग जगवो तथा आकार मगरमच्छना जेवो होय छे.

(११) कुंजराशि–आराशिनो रंग भुरो अने तेनो आकार जेना स्कंधपर घडो रहेलो ठे एवा पुरुष सरखो होय ठे.

(१२) मीनराशि–आराशिनो रंग मत्स्यना रंग जेवो अने तेनो आकार सामसामा उपराउपर वेठेला मत्स्य सरखो होय ठे.

राशिउना चर स्थिर अने द्विस्वजाव.

मेष, कर्क, तुला अने मकर ए चार राशिउ चर ठे. वृषज,सिंह,वृश्चिक अने कुंज ए चार राशिउ स्थिर ठे. मिथुन, कन्या, धन अने मीन ए चार राशिउ द्विस्वजाव ठे.

ते ते राशिमां थयेला जन्मनुं फल.

चर राशिमां जन्मेलो माणस चपल स्वजावनो होय ठे. स्थिर राशिमां जन्मेलो माणस शांत प्रकृतिवालो होय ठे अने द्विस्वजाव राशिमां जन्मेलो माणस शांत अने चपल होय ठे.

राशिउना उदय उपरथी जेदो.

ते बारे राशिउमांथी मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक अने कुंज ए ठए राशिउनो मस्तकथी उदय

छे एवो पुरुष अने वीणावाली स्त्री एम स्त्री पुरुषना जोडलाना आकारनी आराशि होय छे.

(४) कर्कराशि–आराशिनी आकृति करचसनाजेवी होय छे अने तेनो रंग जंबू फल जेवो होयछे

(५) सिंहराशि–आराशिनो रंग धुखरो होय छे अने आकार सिंहना सरखो होय छे.

(६) कंन्याराशि–आराशिनो रंग विविध प्रकारनो होय छे अने तेनो आकार वाहनपर बेठेली क्षोधातुर कुमारिका सरखो होय छे.

(७) तुलाराशि–आराशिनो रंग कालो अने आकार त्राजवा झाली बेठेला पुरुष सरखो होय छे.

(८) वृश्चिकराशि–आराशिनो रंग सुवर्ण सरखो पीलो अने तेनो आकार विंछी जेवो होय छे.

(९) धनराशि–आराशिनो रंग पीलो होय छे अने तेनो आकार घोडापर बेठेलो पुरुष जेना हाथमां धनुष्य चडावेलु होय छे अने जेना पग देखाता नथी तेना जेवो होय छे.

(१०) मकरराशि–आराशिनो रंग जगयो तथा आकार मगरमच्छना जेवो होय छे.

(११) कुंजराशि–आराशिनो रंग भुरो अने तेनो आकार जेना स्कंधपर घडो रहेलो ठे एवा पुरुष सरखो होय ठे.

(१२) मीनराशि–आराशिनो रंग मत्स्यना रंग जेवो अने तेनो आकार सामसामा उपराउपर बेठेला मत्स्य सरखो होय ठे.

राशिउना चर स्थिर अने द्विस्वजाव.

मेष, कर्क, तुला अने मकर ए चार राशिउ चर ठे. वृषज, सिंह, वृश्चिक अने कुंज ए चार राशिउ स्थिर ठे. मिथुन, कन्या, धन अने मीन ए चार राशिउ द्विस्वजाव ठे.

ते ते राशिमां थयेला जन्मनुं फल.

चर राशिमां जन्मेलो माणस चपल स्वजावनो होय ठे. स्थिर राशिमां जन्मेलो माणस शांत प्रकृतिवालो होय ठे अने द्विस्वजाव राशिमां जन्मेलो माणस शांत अने चपल होय ठे.

राशिउना उदय उपरथी जेदो.

ते बारे राशिउमांथी मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक अने कुंज ए ठए राशिउनो मस्तकथी उदय

थाय छे अने दिवसे ते प्रबल होय छे. तेउने "शीर्षोदयराशि" कहे छे.

मेष, वृष, कर्क, धन अने मकर ए पांचे राशिओ पृष्ठ भागथी उदय पामे छे अने रात्रे तेउनुं प्राबल्य होय छे. तेउने पृष्ठोदय राशि कहे छे. मीन राशिने उभयोदयराशि कहे छे. कारण के, तेनुं दिवसे तथा रात्रे पण प्राबल्य होय छे.

तेउनां शुभाशुभ फल.

उपर वर्णवेली शीर्षोदय राशिमां दिवसे जन्मेलो माणस रूपवान थाय छे अने ते राशिमां जो दिवसे विदेशगमन करे तो अवश्य कार्यनी सिद्धि थाय छे. पृष्ठोदय राशिमां रात्रे जन्मेलो माणस बलीवान् अने विद्यावान थाय छे अने ते राशिमां रात्र करेलुं विदेशगमन अवश्य सफल थाय छे. उभयोदय राशि (मीन) मां दिवसे अथवा रात्र जन्मेला पुरुष सुखी थाय छे अने ते राशिमां दिवसे अथवा रात्र करेलुं प्रयाण शुभफल आपे छे.

उपर कहेली राशिओमांथी कइ राशि कइ दिशा तरफ बलवान् छे ते नीचेना यन्त्रथी जाणी लेवुं.

पूर्व
मेष १
सिंह ५
धन ९

उत्तर. कर्क ४ वृश्चिक ८ मीन १२

मकर १० कन्या ६ वृष २ दक्षिण

मिथुन. ३
तुला. ७
कुंभ. ११
पश्चिम.

उपरना यंत्रमांथी जे राशिनो चंद्र जे दिवसे होय ते राशिनी दिशातरफ प्रयाण करवाथी उत्तम फल प्राप्त थाय छे, तेमज जमणी तरफ ते राशिनो चंद्र होय तोपण प्रयाण करवाथी उत्तम फल प्राप्त थायछे.

ते राशिनो चंद्र डावा हाथ तरफ अथवा पृष्ठ भाग तरफ होय तो धननो विनाश तथा आपत्ति थायछे.

इति नैग्रंथिके भद्रबाहुकेनिमित्ते राशिवर्णनो नाम प्रथमोऽध्याय (१)

अध्याय २ जो.

(नक्षत्रोनुं स्वरूप.)

श्रीभद्रबाहुस्वामी कहे छे–हे भिक्षुकं, हुं तमोने नक्षत्रोनुं स्वरूप कहीश. ते नक्षत्रो अठ्यावीश छे तेनुं यंत्र नीचे प्रमाणे छे.

नक्षत्रोनुं यंत्र.

(१)अश्विनी	(८)पुष्य	(१५)स्वाति	(२२)अभिजित्
(२)भरिणी	(९)अश्लेषा	(१६)विशाखा	(२३)श्रवण
(३)कृत्तिका	(१०)मघा	(१७)अनुराधा	(२४)धनिष्ठा
(४)रोहिणी	(११)पूर्वाफा	(१८)ज्येष्ठा	(२५)शतभिषा
(५)मृगशिर	(१२)उत्तरा	(१९)मूल	(२६)पूर्वाभाद्र
(६)आर्द्रा	(१३)हस्त	(२०)पूर्वाषाढा	(२७)उत्तराभाद्र
(७)पुनर्वसु	(१४)चित्रा	(२१)उत्तराषा	(२८) रेवती

जे माणसनो जन्म मूल नक्षत्रमां थयो होय तेनुं फल नीचे प्रमाणे छे–

मूल नक्षत्रनी प्रथमनी पांच घडी सुधीमां जेनो जन्म थाय तेनी उपर बाप दादा विगेरेनी प्रीति वधे छे. छथी नव घडीसुधीमां जो जन्म थयो होय तो पितानुं मृत्यु थाय. दशथी अढार घडीसुधीमां जन्म थयो होय तो पोतानी भुजाना बलथी घणुं द्रव्य उपार्जन करे. ओगणीशथी छवीश घडीसुधीमां जन्म थयो होय तो ते तुच्छमतिवालो थाय. सत्यावीश अने अठ्यावीश घडीनी वच्चे जो जन्म थयो होय तो पांच महाहत्या करनारो थाय. ओगणत्रीशथी छत्रीश घडी सुधीमां जन्म्यो होय तो धर्मात्मा थाय. साडत्रीशथी अडतालीश घडीसुधीमां जन्म्यो होय तो अल्पायु थाय. ओगणपचाशथी एकावन घडीसुधीमां जन्म्यो होय तो सात दिवसनी अंदर मृत्यु पामी जाय. बावनथी चोपन घडीनी अंदर जन्म्यो होय तो घणो भाग्यशाली थाय तथा द्रव्यवान् बने. पंचावनथी साठ घडीनी अंदर जन्म्यो होय तो ते विदेशमां मुसाफरी करनार अने गुणवान थाय तेनुं यंत्र नीचे प्रमाणे छे.

मूल नक्षत्रमां जन्मेला माणसना फलनुं यंत्र.

जन्मघडी.	फल.
१ थी ५	बाप दादाओनी कृपा थाय.
६ थी ए	पीतानुं मृत्यु.
१० थी १७	पोतानी भुजावले द्रव्य मेलवे.
१ए थी २६	तुच्छ बुद्धिवालो थाय.
२७ थी २७	पांच महाहत्या करे.
२ए थी ३६	धर्मात्मा थाय.
३७ थी ४७	अल्पायुष्य थाय.
४ए थी ५१	सात दिवसनी अंदर मृत्यु पामे.
५२ थी ५४	भाग्यशाली अने द्रव्यवान् थाय.
६०	परदेशमांमुसाफरीकरेतथागुणवान थाय.

ज्येष्ठा नक्षत्रमां जन्मेला माणसना फलनुं यंत्र.

जन्मघडी	फल.
१ थी ७	राज्यनो मालिक थाय.
८ थी १५	तुरत मृत्यु पामे.
१६ थी २४	माता मृत्यु पामे.
२५ थी २९	भाइनुं मृत्यु थाय.
३० थी ३३	मामानुं मृत्यु थाय.
३४ थी ४३	भाग्यशाली थाय.
४४ थी ४८	रोगिष्ट तथा दुःखी थाय.
४९ थी ५६	सारुं फल भोगवे.
५७ थी ५८	चित्तभ्रम थाय.
५९ थी ६०	अल्पायुषी थाय.

अश्लेषा नक्षत्रमां जन्मेला माणसना फलनुं यंत्र

जन्मघडी	फल.
१ थी ५	हमेशां सुखी थाय.
६ थी ८	धननो विनाश थाय.
९ थी ११	कुलनो क्षय थाय.
१२ थी २१	मातापितानुं मृत्यु थाय.
२२ थी २९	धनवान् थाय.
३० थी ३५	बाहुबलथी द्रव्य उपार्जन करे.
३६ थी ४०	मामानुं मृत्यु थाय.
४१ थी ४२	अल्पायुषी थाय.
४३ थी ५०	राज्यनी प्राप्ति थाय.
५१ थी ५५	मातानुं मृत्यु थाय.
५६ थी ६०	तत्काल मृत्यु थाय.

उपर कहेला त्रणे नक्षत्रोमां पुत्र अथवा पुत्रीनो जन्म थाय तो जिनेश्वर प्रभुनी प्रतिमानुं शांतिस्नात्र अथवा इंद्रमहोत्सव करवाथी समस्त दोषोनो विनाश थाय छे.

अभुक्त मूल नक्षत्रना योगनुं फल.

ज्येष्ठा नक्षत्र संपूर्ण थतां छेवटनी एक अथवा बे घटिका अने मूल नक्षत्र बेठा पछीनी बे घटिका ते अभुक्त मूल योग कहेवाय छे. तेमां जो पुत्र अथवा पुत्रनो जन्म थाय तो तेनां मातापिता द्रव्यवान् होय तोपण महा दरिद्री थइ अत्यंत दुःखी थाय छे. पण तेवा बालकना जन्मसमये श्रीजिनेश्वर प्रभुनी (तेमां पण मुख्यत्वे करीने श्रीपार्श्व प्रभुनी) प्रतिमा भराववाथी तेनी शांति थइ जाय छे.

इति नैग्रंथिके भद्रबाहुके निमित्ते नक्षत्रवर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अध्याय ३ जो.

(सत्तावीशयोगनुं स्वरूप.)

श्रीभद्रबाहु स्वामी कहेछे–हे भिक्षुओ, हुं तमोने सत्तावीश प्रकारना योगोनुं स्वरूप कहीश.

दरेक योग साठ घडीमां त्रण पल ओछो होय छे.

योगोना नामनुं यंत्र.

(१)विषकुंभ	(८) धृति	(१५) वज्र	(२२) साध्य
(२)प्रीति	(९) शूल	(१६) सिद्धि	(२३) शुभ
(३)आयुष्मान्	(१०) गंड	(१७) व्यतिपात	(२४) शुक्ल
(४)सौभाग्य	(११) वृद्धि	(१८) वरीयान्	(२५) ब्रह्मा
(५)शोभन	(१२) ध्रुव	(१९) परिघ	(२६) इंद्र
(६)अतिगंड	(१३)व्याघात	(२०) शिव	(२७)वैधृत
(७)सुकर्मा	(१४) हर्षण	(२१) सिद्धि	

वैधृत अने व्यतिपातनुं फल.

उपर जणावेला योगोमांथी वैधृत अथवा व्यतिपात योगमां जे माणसनोजन्म थयो होय,ते दरिद्री, रोगिष्ट, निर्धन, अल्पायुषी,सर्व वस्तुओने नष्ट करनार अने पोतानां मातापिताने दारिद्र्य आपनार थायछे. तेवा माणसना जन्म वखतनी शांतिने माटे शांति स्नात्र तथा अठाइ महोत्सव करवाथी तेदोषो शांतथइजायछे.

सिद्धियोगनुं फल.

सिद्धि योगमां प्रारंभेलुं कार्य सिद्ध थाय छे. तेमज ते योगमां जन्मेलो माणस पुण्यशाली अने द्रव्यवान् थाय छे. इति नैग्रंथिके भद्रबाहुके निमित्ते योगवर्णनो नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३ ॥

अध्याय ४ थो.

(ग्रहोनुं स्वरूप तथा फल.)

श्रीजद्रबाहु स्वामी कहेछे—हे शिष्यो, हुं तमोने ग्रहोनुं स्वरूप कहीश.

कइ कइ राशिना कया ग्रहो स्वामी छे, तेनुं यंत्र.

ग्रहो	कइ राशिनो स्वामी
सूर्य	सिंह राशिनो स्वामी
चंद्र	कर्क राशिनो स्वामी
मंगल	मेष तथा वृश्चिक राशिनो स्वामी
बुध	मिथुन राशिनो स्वामी
गुरु	धन अने मीन राशिनो स्वामी
शुक्र	वृषज तथा तुला राशिनो स्वामी
शनि	मकर अने कुंज राशिनो स्वामी.

शुज, पाप, अने क्रूर ग्रहोनुं यंत्र.

शुजग्रहो	चंद्र, बुध, गुरु, अने शुक्र
पापग्रहो	मंगल, शनि, राहु, अने केतु
क्रूरग्रह	सूर्य.

शुजग्रह पण पापग्रह थाय छे.

उपरना यंत्रमां बुधने शुजग्रह कहेल छे पण जो

ते पापग्रहनी साथे होय तो पापग्रह थाय छे अने शुभग्रहनी साथे शुभ थाय छे अने एकलो ह ते शुभज छे.

चंद्रना त्रण प्रकार.

शुक्लपक्षना पडवाथी मांडी दशमसुधी चंद्र मध्यम बलवालो छे पण जो-तेनी उपर शुभग्रहनी दृष्टि पडेतो ते उत्तम बलवालो थाय छे त्यार पछीना दश दिवसोसुधी ते संपूर्ण बलि छे अने त्यारपछीना दश दिवसोसुधी ते हीन बलवालो छे पण जो तेना उपर शुभ ग्रहनी दृष्टि होय तो उत्तम गणाय छे.

चंद्रपण पापग्रह थाय छे.

शुक्लपक्षनी अष्टमीथी कृष्णपक्षनी अष्टमीसुधी चंद्र शुभ छे अने बाकीना दिवसोमां ते पापग्रह तरीके गणाय छे.

ग्रहोनुं राज्य.

ग्रहोनी अंदर चंद्र अने सूर्य राजा छे. मंगल सेनापति छे. बुध पाटवी कुमार छे, गुरु अने शुक्र मंत्रीओ छे अने शनि सेवक छे. जो शनि जन्म समये अथवा प्रश्न समये त्रीजे अथवा अग्यारमे स्थाने रह्यो होय तो सर्व प्रकारनु कार्य सिद्धकरे छे अने ते

शिवायनां स्थानोए रह्यो होय तो कार्यनी हानि करेछे.

ग्रहोना विविधगुणो.

त्रिशांश कुंडली जे ग्रहनी राशिमां सूर्य रह्यो होय ते ग्रहनां नीचे लखेला गुणो प्रमाणे ते माणसना गुणो जाणी लेवा.

सत्वगुणी ग्रहो.

सूर्य, चंद्र अने गुरु ए त्रणे ग्रहो सत्वगुणी छे. ते सत्वगुणवाला ग्रहोनो गुण दयालु, धैर्यतावालो, परोपकारी, धर्मपर श्रद्धालु, यशस्वी, सरल स्वभावी, न्यायमार्गे चालनारो तथा उत्तम बुद्धिवालो छे.

रजोगुणी ग्रहो.

बुध अने शुक्र ए बंने ग्रहो रजोगुणी छे. तेउ शौर्य, अभिमान, स्वेछाचारीपणुं, विद्वत्ता, अधिकारपर प्रीति, स्त्री तथा द्रव्यपर ममता, सांसारिक विषयोपर प्रीति. गांभीर्य, मध्यम प्रकारनी बुद्धि अने कीर्त्तिदान उपर लक्ष एवा गुणाने धरनारा छे.

तमोगुणी ग्रहो.

शनि अने मंगल ए बे ग्रहो तमोगुणी छे. तेउना गुणो कपट, क्लेश. क्रूरता, कृतघ्नीपणुं, कठोर वचन, निद्रा, आलस्य, पिशुनता (चुगली) निंदा, नास्ति-

कता, स्वार्थिपणुं, धर्मविरूद्ध वर्त्तन, अनीति, व्यसन, डुराचार अने क्रोध विगेरे छे.

ग्रहोना वर्णनुं यंत्र.

सूर्य	तेनोवर्ण जरारताश अनेजरा कालाशवालोछे
चंद्र	तेनो वर्ण गौर छे.
मंगल	तेनो वर्ण रक्त छे.
बुध	तेनो वर्ण लीलो छे.
गुरु	तेनो वर्ण पीलो छे.
शुक्र	गौर तथा श्याम वर्णनो छे.
शनि	श्याम वर्णनो छे.

कइ कइ दिशाना कया कया ग्रहो स्वामी छे, ते यंत्र.

सूर्य	पूर्व दिशानो स्वामी
चंद्र	वायव्य दिशानो स्वामी
मंगल	दक्षिण दिशानो स्वामी
बुध	उत्तर दिशानो स्वामी
गुरु	इशान दिशानो स्वामी
शुक्र	अग्नि दिशानो स्वामी
शनि	पश्चिम दिशानो स्वामी
राहु	नैरुत दिशानो स्वामी

उपर जणावेला ग्रहोनी दिशा जन्मकुंडलीमां जोवी तेमां जे ग्रह बलवान् होय अने तेनी जे दिशा होय ते दिशा तरफथी लाभ मले एम जाणवुं.

ग्रहोनां स्थान अने रसोनुं यंत्र.

ग्रह	स्थान	रस
सूर्य	देवस्थान	तीखो.
चंद्र	जलस्थान	खारो.
मंगल	अग्निस्थान	कडवो.
बुध	क्रीडास्थान	स्वाद रहित (लुखो)
गुरु	द्रव्यभंडारस्थान	मधुर.
शुक्र	शयनस्थान	खाटो.
शनी	मलीनस्थान	कसायलो.

उपर जणावेला ग्रहोनां स्थान अने रसो माटे एम जाणवानुं छे के, जन्मकुंडलीमा जे ग्रह सर्वथी बलवान् होय ते ग्रहना स्थानपर अने तेना रस उपर ते माणसनी प्रीति थाय छे. तेमज ते माणस ज्यारे गर्भमा होय त्यारे तेनी मातानेपण तेज स्थान अथवा ते रसनी प्रीति हती एम जाणवुं.

उच्चग्रहोनुं यंत्र.

ग्रह	सूर्य.	चंद्र.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनी.
राशि	०	१	९	५	३	११	६
अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०

नीच ग्रहोनुं यंत्र.

ग्रह	सूर्य	चंद्र.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनी.
राशि	६	७	३	११	९	१५	०
अंश.	१०	३	२८	१५	५	२७	२०

ग्रहोना शत्रु मित्र अने समनुं यंत्र.

ग्रहो	मित्र.	शत्रु	सम.
सूर्य.	चंद्र, मंगल, गुरु.	शुक्र, शनि, राहु.	बुध.
चंद्र.	सूर्य, बुध.	राहु.	मंगल,गुरु,शुक्र;श०
मंगल.	सूर्य, चंद्र, गुरु.	बुध, राहु.	शुक्र, शनि.
बुध.	सूर्य, शुक्र, राहु.	चंद्र.	मंगल, गुरु, शनि.
गुरु.	सूर्य, चंद्र, मंगल.	बुध, शुक्र.	शनि, राहु.
शुक्र.	बुध, शनी, राहु.	सूर्य, चंद्र.	मंगल, गुरु.
शनी.	बुध, शुक्र, राहु.	सूर्य, चंद्र, मंगल.	गुरु.
राहु.	बुध, शुक्र, शनी.	सूर्य, चंद्र, मंगल.	गुरु.

जन्मस्थानना मित्र ग्रहो.

जन्मकुंडलीमां तथा प्रश्नकुंडलीमां जेजे भुवनोमां ग्रह रह्या होय ते भुवनथी बे बाजु, तथा त्रण त्रण भुवन

एटले पोताथी बीजा, त्रीजा, चोथा, दशमा, अगीआरमा अने बारमा स्थाने आवेला ग्रहोने मित्र जाणवा.

जन्मस्थानना शत्रु ग्रहो.

पोताथी पेहेला, पांचमां, छठ्ठा, सातमा, आठमा अने नवमा स्थाने रहेला ग्रहोने शत्रु जाणवा.

जन्मस्थानना अधिमित्र तथा समग्रहो.

उपर जणावेला यंत्रमां मित्र होय अने ते बे, त्रण, चार, दश अगीआर अने बारमे स्थाने आवेला होय तो ते अधिमित्र जाणवा तेमज उपरना यंत्रमां शत्रु होय अने पोताथी बे, त्रण, चार, दश, अगीयार अने बारमे स्थाने आव्या होय तो ते सम जाणवा.

सम ग्रहो क्यारे मित्र अने अधिमित्र थाय.

उपर जणावेला यंत्रमां सम होय अने पोताथी बे, त्रण, चार, दश, अगीयार अने बारमे आव्या होय तो ते मित्ररूप थाय छे तेम शत्रु होय तोपण पोताथी पेहेले, पांचमे, छठे, सातमे, आठमे अने नवमे स्थानके होय तो ते अधिशत्रु थाय छे.

इति नैग्रंथिके जड्याहुके निमित्ते ग्रहस्वरूप वर्णनो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अध्याय ९ मो.

। ग्रहोनी महादशानुं स्वरूप. ।

श्रीभद्रबाहु स्वामी कहे छे–हे भिक्षुको, हुं तमोने ते ग्रहोनी महादशा कहुं ते सांभलो.

जे माणसनो जे नक्षत्रमां जन्म थयो होय ते नक्षत्र उपरथी तेनो जन्म कइ दशामां थयेलो छे, ते मालम पडे छे.

महादशाओनुं यंत्र.

सूर्य.	चंद्र.	मंगल.	बुध.	शनि.	गुरु.	राहु.	शुक्र.
१ आर्द्रा	१ मघा	१ हस्त	१ अनुराधा	१ पूर्वाषाढा	१ धनिष्टा	१ उत्तराभाद्रपदा	१ कृत्तिका
२ पुनर्वसु	२ पूर्वाफाल्गुनी	२ चित्रा	२ जेष्टा	२ उत्तराषाढा	२ शतभिषा	२ रेवती	२ रोहिणी
३ पुष्य	३ उत्तराफाल्गुनी	३ स्वाति	३ मूल	३ अभिजित	३ पूर्वाभाद्रपदा	३ अश्विनी	३ मृगशिर
४ अश्लेषा		४ विशाखा		४ श्रवण		४ भरणी	

दरेक ग्रहोनी महादशा केटला वर्षनी होय तेनुं यंत्र.

सूर्य.	चंद्र.	मंगल.	बुध.	शनि.	गुरु.	राहु.	शुक्र.
६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२१

उपरना यंत्रमां बतावेली महादशा अष्टोत्तरी कहेवाय छे.

सूर्यनी महादशामां अंतर्दशानुं यंत्र.

ग्रह.	सूर्य.	चंद्र.	मंगळ.	बुध.	शनि.	गुरु.	राहु.	शुक्र.
वर्ष.	०	०	०	०	०	१	०	१
मास.	४	१०	५	११	६	०	८	२
दिवस.	०	०	१०	१०	२०	२०	०	०
घडी.	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्रनी महादशामां अंतर्दशानुं यंत्र.

ग्रह.	चंद्र	मंगळ.	बुध.	शनि.	गुरु.	राहु.	शुक्र.	सूर्य.
वर्ष.	२	१	२	१	२	१	२	०
मास.	१	१	४	४	७	८	११	१०
दिवस.	०	१०	१०	२०	२०	०	०	०
घडी.	०	०	०	०	०	०	०	०

मंगलनी महादशामां अंतर्दशानुं यंत्र.

ग्रहो.	मंगळ.	बुध.	शनि.	गुरु.	राहु.	शुक्र.	सूर्य.	चंद्र.
वर्ष.	०	१	०	१	०	१	०	१
मास.	७	३	८	४	१०	६	५	१
दिवस.	३	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०
घडी.	२०	२०	४०	४०	०	०	०	०

बुधनी महादशामां अंतर्दशानुं यंत्र.

ग्रहो.	बुध.	शनि.	गुरु.	राहु.	शुक्र.	सूर्य.	चंद्र.	मंगळ.
वर्ष.	२	१	२	१	३	०	२	१
मास.	८	६	११	१०	३	११	४	३
दिवस.	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	३
घडी.	०	२०	४०	४०	०	०	०	२०

शनिनी महादशामां ... यंत्र.

ग्रह.	शनि.	गुरु.	राहु.	शुक्र.	सूर्य.	चंद्र.	मंगळ.	
वर्ष.	०	१	१	१	०	१	०	१
मास.	११	९	१	११	६	४	८	६
दिवस.	३	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६
घडी.	२०	२०	०	०	०	०	४०	४०

गुरुनी महादशामां अंतर्दशानुं यंत्र.

ग्रहो.	गुरु.	राहु.	शुक्र.	सूर्य.	चंद्र.	मंगळ.	बुध.	शनि.
वर्ष	३	२	३	१	२	१	२	१
मास.	४	१	८	०	७	४	११	९
दिवस	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	३
घडी.	२०	०	०	०	०	४०	४०	२०

राहुनी महादशामां अंतर्दशानुं यंत्र.

ग्रह.	राहु.	शुक्र.	सूर्य.	चंद्र.	मंगळ.	बुध.	शनि.	गुरु.
वर्ष.	१	२	०	१	०	१	१	२
मास.	४	४	८	८	१०	१०	१	१
दिवस.	०	०	०	०	२०	२०	१०	१०
घडी.	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रनी महादशामां अंतर्दशानुं यंत्र.

ग्रह.	शुक्र.	सूर्य.	चंद्र.	मंगळ.	बुध.	शनि.	गुरु.	राहु.
वर्ष.	४	१	२	१	३	१	३	२
मास.	१	२	११	६	३	११	८	४
दिवस.	०	०	०	२०	२०	१०	१०	०
घडी.	०	०	०	०	०	०	०	०

आ प्रमाणे एक महादशामां जेम आठ अंतर्दशा आवे छे, तेम दरेक अंतर्दशामां आठ उपदशाओ अने दरेक उपदशामां आठ आठ विदशाओ आवे छे. ते केटलाएक ग्रंथोमां आपी छे.

सूर्यनी महादशानुं फल.

सूर्यनी महादशा होयतो चिंता अने परिताप थाय. शरीरमां पीडा करे, धननो नाश थाय, कुटुंबमां कंकास थाय. देशाटन करावे, राज्य तरफथी अपमान थाय. नाश अने पुत्रनो वियोग थाय तेमज अनेक जातनो उद्वेग रह्या करे. (अहिं एटलो अपवाद के. जो जन्मग्रहमां सूर्य सबल होयतो सघली बाबतोमां उत्तम फल आपे.)

सूर्यनी महादशामां सूर्यनी अंतर्दशानुं फल.

सूर्यनी महादशामां सूर्यनी अंतरदशा होय तो राज्य तरफथी जय थाय. शरीरे पीडा थाय. मनमां चिंता रहे. अनेक प्रकारनुं दुःख उपजावे: कुटुंबमां क्लेश करावे तथा आवक करतां खर्च वधारे.

सूर्यनी महादशामां चंद्रनी अंतर्दशानुं फल.

सूर्यनी महादशामां चंद्रनी अंतर्दशा होय तो शत्रुओनो नाश थाय सुखनी वृद्धि थाय, द्रव्यनो

चंद्रनी महादशामां मंगलनी अंतर्दशानुं फल.

रुधिरनो विकार करे, पित्तविकार अने ताप उत्पन्न करे, अग्निनो भय उत्पन्न करे, द्रव्य अने यश अपावे, लोकोमां अविश्वास उपजावे, स्त्री साथे कंकास करावे अने उद्योगमां प्रवृत्ति करावे.

चंद्रनी महादशामां बुधनी अंतर्दशानुं फल.

ज्यां जाय त्यां लाभ, यश अने मित्रो मले, पशुउंनुं सुख आपे, शत्रुनो नाश थाय अने उद्योग वधारे.

चंद्रनी महादशामां शनिनी अंतर्दशानुं फल.

भाइउ तरफथी चिंता थाय, शत्रुनो वधारो थाय, शोक अने भय उपजावे, द्रव्यनो व्यय करावे, शरीरने अल्प पीडा करावे, सगानो वियोग करावे अने सर्व ठेकाणे अपमान थाय.

चंद्रनी महादशामां गुरुनी अंतर्दशानुं फल.

दान अने परोपकारनी वृद्धि करे, अनेक प्रकारना वैभव आपे, प्रत्येक स्थाने द्रव्यनो लाभ थाय, शत्रुउ उभा करे, पण छेवटे तेमनो नाश करी सुख अपावे.

चंद्रनी महादशामां राहुनी अंतर्दशानुं फल.

रोग अने शत्रुनो नाश करे, उद्वेग अने चिंता वधारे, कुटुंबी तथा मित्रवर्गनो नाश करे, द्रव्य

चंद्रनी महादशामां मंगलनी अंतर्दशानुं फल.

रुधिरनो विकार करे, पित्तविकार अने ताप उत्पन्न करे, अग्निनो भय उत्पन्न करे, द्रव्य अने यश अपावे, लोकोमां अविश्वास उपजावे, स्त्री साथे कंकास करावे अने उद्योगमां प्रवृत्ति करावे.

चंद्रनी महादशामां बुधनी अंतर्दशानुं फल.

ज्यां जाय त्यां लाभ, यश अने मित्रो मले, पशुओनुं सुख आपे, शत्रुनो नाश थाय अने उद्योग वधारे.

चंद्रनी महादशामां शनिनी अंतर्दशानुं फल.

जाउर्ड तरफथी चिंता थाय, शत्रुनो वधारो थाय, शोक अने भय उपजावे, द्रव्यनो व्यय करावे, शरीरने अल्प पीडा करावे, सगानो वियोग करावे अने सर्व ठेकाणे अपमान थाय.

चंद्रनी महादशामां गुरुनी अंतर्दशानुं फल.

दान अने परोपकारनी वृद्धि करे, अनेक प्रकारना वैभव आपे, प्रत्येक स्थाने द्रव्यनो लाभ थाय, शत्रुओ उभा करे, पण छेवटे तेमनो नाश करी सुख अपावे.

चंद्रनी महादशामां राहुनी अंतर्दशानुं फल.

रोग अने शत्रुनो नाश करे, उद्वेग अने चिंता वधारे, कुटुंबी तथा मित्रवर्गनो नाश करे, द्रव्य

तथा यशनी हानि करावे अने कोइ रीते सुखी रहेवादे नही.

चंद्रनी महादशामां शुक्रनी अंतर्दशानुं फल.

घणी स्त्रीओ साथे प्रीति करावे, घणी कन्याओनो जन्म थाय, मोती रत्न विगेरेनां आभूषणो प्राप्त करावे, सुखमां वधारो करे अने द्रव्यनी प्राप्ति करावे.

चंद्रनी महादशामां सूर्यनी अंतर्दशानुं फल.

राज्यथी लाभ थाय, सुख आपे, द्रव्य अने यशनो लाभ थाय, रोग तथा शत्रुनो नाश करावे, व्यापारमां लाभ थाय पण मनमां चिंता रह्या करे.

इति नैर्ग्रंथिके भद्रबाहुके निमित्ते चंद्र महादशांतर्गतांतर्दशाफलवर्णनो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

अध्याय ७ मो.

। मंगलनी महादशानुं फल. ।

श्री भद्रस्वामी कहे छे–हे शिष्यो हवे मंगलनी महादशानुं फल सांभलो–

मंगलनी महादशानुं फल.

मंगलनी महादशामां शत्रुनो जय थाय, बंधन आवी पडे, राज्यथी पीडा थाय. चिंता, ज्वर अने शोक थाय. शरीरमां विकार थाय, स्त्री संबंधी दुःख

थाय, गृहस्थपणामां संतोष न थाय, चोर, अग्नि अने शस्त्रथी द्रव्यनो नाश थाय. घत्र अने आबू-पणोनो विनाश थाय, व्यापार अने यशनो विनाश थइ जाय अने महादुःख जोगवे.

मंगलनी महादशामां मंगलनी अंतर्दशानुं फल.

रुधिरनो विकार अने पित्तनी पीमा थाय; द्रव्य अने कीर्त्तिनो विनाश थाय, व्याधिनी वृद्धि करावे, सगां अने मित्रो साथे वेर थाय, परस्त्रीनो जोग करावे अने गरीबाइ आवे.

मंगलनी महादशामां बुधनी अंतर्दशानुं फल.

शत्रु, चोर अने राजानो जय थाय, अत्यंत व्याधि थाय अने सुख तथा द्रव्यनो नाश थाय.

मंगलनी महादशामां शनिनी अंतर्दशानुं फल.

दुःख अने शोकनी वृद्धि थाय, द्रव्यनी हानि थाय, देशाटन करावे अने हंमेशा चिंता रखावे.

मंगलनी महादशामां गुरुनी अंतर्दशानुं फल.

दान अने तीर्थयात्रानी प्रीति थाय, देवगुरु पर श्रद्धा थाय, राजानो जय थाय.

मंगलनी महादशामां राहुनी अंतर्दशानुं फल.

शस्त्र, अग्नि, चोर अने वैरी तरफथी जय थाय,

द्रव्य अने आशाओनो विनाश थाय, व्याधि अने शोक थाय, तेमज अकस्मात् विघ्न आवी पडे.

मंगलनी महादशामां शुक्रनी अंतर्दशानुं फल.

शत्रुओनी वृद्धि थाय, व्याधि पीडा करे, द्रव्यनी हानि थाय, देशाटन करवुं पडे, उपद्रव थया करे अने घणी महेनते द्रव्य मलवा साथे कार्यनी सिद्धि थाय.

मंगलनी महादशामां सूर्यनी अंतर्दशानुं फल.

आनंद अने सुख आपे, शरीर पुष्ट करे, राजानुं मान मले, घणां लोकोनी प्रीति थाय अने कीर्त्ति तथा मित्रोनी वृद्धि थाय.

मंगलनी महादशामां चंद्रनी अंतर्दशानुं फल.

मित्रोनुं सुख थाय, वस्त्रो अने आभूषणोने धारे अने द्रव्य तथा यश मले.

इति नेत्रग्रंथिके जडवाहुके निमित्ते मंगल महादशांतर्गतांतर्दशा फल वर्णनो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अध्याय ८ मो.

(बुधनी महादशानुं फल.)

बुधनी महादशा होय तो उत्तम स्वरूपवती स्त्री

साथे विलास करे. द्रव्य, कीर्त्ति अने सुखनो लाज थाय. उत्तम प्रकारनां जोजन अने वस्त्रो मले, त्रण पुरुषार्थो (धर्म, अर्थ, काम) सधाय, रोग अने वेरीर्जनो विनाश थाय अने राज्यनो लाज थाय.

बुधनी महादशामां बुधनी अंतर्दशानुं फल.

बुद्धि अने धर्मनी वृद्धि करे, सगार्जनुं सुख मले, विद्या वधारे अने शरीरमां व्याधि थाय.

बुधनी महादशामां शनिनी अंतर्दशानुं फल.

शत्रुथी पीका थाय, द्रव्यनो नाश थाय, अग्निनो मोटो जय थाय अने शरीरे रोग थाय.

बुधनी महादशामां गुरुनी अंतर्दशानुं फल.

रत्नो अने सुवर्ण प्राप्त थाय, शरीरे निरोगी रहे, द्रव्यनी वृद्धि थाय अने आशार्ज सफल थाय.

बुधनी महादशामां राहुनी अंतर्दशानुं फल.

साहस काम करावे, कृपण होय तोपण धर्म, अर्थ, कामने जोगवे अने सर्व कार्यो शोक सहित सिद्ध थाय.

बुधनी महादशामां शुक्रनी अंतर्दशानुं फल.

देवगुरु पर श्रद्धा थाय, विद्यामां प्रीति वधे अने वस्त्रो तथा उत्तम आजूषणो जोगवाय.

बुधनी महादशामां सूर्यनी अंतर्दशानुं फल.

रोग अने वैरी तरफथी भय थाय. राज्यनुं मान थाय धर्म उपर आस्ता थाय, पुत्रजन्मनुं सुख थाय अने यश तथा द्रव्यनी वृद्धि थाय.

बुधनी महादशामां चंद्रनी अंतर्दशानुं फल.

कुष्टादि रोगोथी दुःख थाय, शत्रुनो जय थाय, हस्ती विगेरे वाहनो मले पण द्रव्यनी चिंता रह्या करे

इति नैमेत्तिके जडभद्रकृत निमित्ते बुध महादशां तर्गतांतर्दशा वर्णनो नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अध्याय ९ मो.

(शनिनी महादशा)

श्रीजडभद्र स्वामी कहे छे—हे शिष्यो, हुं तमोने शनिनी महादशानुं फल कहीश.

शनिनी महादशानुं फल.

मिथ्या अपवाद आवे. ताडन अने बंधन थाय, मित्रो तथा भाइओ साथे क्लेश थाय, मनोरथो निष्फल थाय, द्रव्यनी हानि थाय, शरीरे कष्ट आपे. (अहीं अपवाद एटलो के, तेमां जो शनि बलवान् होय तो ते सघलानुं शुभ फल आपे)

शनिनी महादशामां शनिनी अंतर्दशानुं फल.

शरीरमां दुःख थाय, स्त्री पुत्रनो वियोग थाय, देशाटन करवुं पडे अने सर्व कार्योनी हानि थाय.

शनिनी महादशामां गुरुनी अंतर्दशा.

देवगुरुपर श्रद्धा थाय, घणुं द्रव्य मले अने सर्व कार्यो सिद्ध थाय.

शनिनी महादशामां राहुनी अंतर्दशानुं फल.

शत्रुनो उपद्रव थाय. ताव अने अतिसार थाय; द्रव्यनी हानि थाय अने देशाटन करावे.

शनिनी महादशामां शुक्रनी अंतर्दशानुं फल.

सर्व ठेकाणे सुख मले. नाहउपर प्रीति थाय, स्त्री अने संतानतुं सुख थाय अने राजा तरफथी लाभ थाय.

शनिनी महादशामां सूर्यनी अंतर्दशा.

स्त्री संतान अने द्रव्यनुं दुःख थाय. मोटो भय उत्पन्न थाय. व्याधि अने वैरीथी वध. स्वजनसाज शरीरे पीडा थाय अने कांइ पण कार्य सिद्ध न थाय.

शनिनी महादशामां चंद्रनी अंतर्दशानुं फल.

स्त्रीनो लाभ थाय. शत्रु साथे विजय थाय. सुख अने धनधान्यनी वृद्धि थाय कन्यानो जन्म थाय अने शरीर सुखी रहे.

शनिनी महादशामां मंगलनी अंतर्दशानुं फल.

सौजाग्य अने स्वरूप आपे- सुखी करे, शत्रुनो पराजव थाय, देवगुरुपर जक्ति थाय तथा जाइ-उंनुं सुख मले.

इति नैमंथिके जद्रबाहुके, निमित्ते शनि महादशा-नजतांतर्दशावर्णनो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ए ॥

अध्याय १० मो.

(गुरुनी महादशानुं स्वरूप.)

श्रीजद्रबाहु स्वामी कहे छे- हे जुक्कुर्ल, हुं हमोने गुरुनी महादशानुं स्वरूप कहीश.

गुरुनी महादशानुं फल.

राजा तरफथी मान अने लाज थाय, विनय आवे, चिंता नष्ट थाय, द्रव्य तथा सुखनो लाज थाय, धान्यनो संग्रह करावे, व्याधि तथा वैरी नष्ट थाय, सर्व कार्योनी सिद्धि थाय अने शरीर निरोगी रहे.

गुरुनी महादशामां गुरुनी अंतर्दशानुं फल.

स्त्री तथा संताननी वृद्धि थाय, मान वधारे. द्रव्य अने सुख आपे अने वस्त्राजूपणो अपावे.

गुरुनी महादशामां राहुनी अंतर्दशानुं फल.

रोग अने वैरीनो वधारो करे, मनमां चिंता थाय, द्रव्य गुमावे, मोटो भय थाय, स्त्री पुत्र साथे वियोग थाय अने कोइ पण कार्यनी सिद्धि न थाय.

गुरुनी महादशामां सूर्यनी अंतर्दशानुं फल.

रोग अने वैरीनो नाश थाय, लडाइमां जय मले, राजा तरफथी आदर मान थाय अने अधिकारीउ साथे प्रीति करावे.

गुरुनी महादशामां चंद्रनी अंतर्दशानुं फल.

कोइ अधिकारीनी स्त्री तरफथी सुख मले, द्रव्यनुं सुख थाय, व्याधि अने वैरीउ विनाश पामे, राजानी प्रीति थाय अने महान् भाग्योदय थाय.

गुरुनी महादशामां मंगलनी अंतर्दशानुं फल.

व्याधि अने शत्रुउ नष्ट थाय, सुखनी वृद्धि थाय अने शरीरे निरोगी राखे.

गुरुनी महादशामां बुधनी अंतर्दशानुं फल.

विद्वत्ता आपे, बुद्धि तथा कलाउ प्राप्त थाय, भाइउ अने मित्रोथी सुख थाय, देवगुरु उपर श्रद्धा करावे, द्रव्य तथा यशनो वधारो करे.

गुरुनी महादशामां शनिनी अंतर्दशानुं फल.

धन धान्यनो विनाश थाय, वैश्य अथवा शूद्र जातिनी स्त्री साथे प्रीति थाय अने धर्मकार्यमां उत्सुकता करावे.

इति नैमंधिके जडवाहुके निमित्ते गुरु महादशा तदंतर्तांतर्दशा फल निरूपणं नाम दशमोऽध्यायः

अध्याय ११ मो.

(राहुनी महादशानुं स्वरूप.)

श्रीजड स्वामी कहे छे—हे शिष्यो, हुं तमोने राहुनी महादशानुं स्वरूप कहीश.

राहुनी महादशानुं फल.

बुद्धिनो नाश थाय, मननां भ्रम रह्या करे, सर्वे कार्यों निरर्थक थाय, शरीर उपर कोइ जातनी घात थाय, व्याधि लागु पडे, सर्पादिक झेरी प्राणीओथी अथवा झेरी पदार्थोथी भय उत्पन्न करे, अकस्मात् आपत्ति आवे, धनधान्यनो विनाश थाय. कुटुंबी अथवा मित्रोनो विरह थाय.

राहुनी महादशामां राहुनी अंतर्दशानुं फल.

देवगुरु उपर भक्ति थाय. द्रव्यनो लाभ थइ जाय,

मननी इच्छाओ पूर्ण थाय,वस्त्राभूषणो प्राप्त थाय, दरेक कार्य सिद्ध थाय अने उद्यम तरफ मनने दोरावे.

राहुनी महादशामां सूर्यनी अंतर्दशानुं फल.

व्याधि अने वैरीओनो जय थाय, राजा तरफथी दंड थाय, द्रव्यनो विनाश थाय तथा अग्नि अने चोर तरफथी नुकशान थाय.

राहुनी महादशामां चंद्रनी अंतर्दशानुं फल.

स्त्रीनो विनाश थाय, कंकास थया करे, द्रव्य गुमावे, शत्रु तरफथी जय थाय, अने भाईओ साथे अप्रीति थाय.

राहुनी महादशामां मंगलनी अंतर्दशानुं फल.

विष अग्नि अने चोर तरफथी जय थाय, द्रव्य अने यशनो नाश थाय तथा व्याधि अने अपमान थाय.

राहुनी महादशामां बुधनी अंतर्दशानुं फल.

मित्रो साथे स्नेह थाय, विद्या वुद्धि अने द्रव्यनी प्राप्ति थाय, शरीरमां रोग थाय अने मनमां चिंता थया करे.

राहुनी महादशामां शनिनी अंतर्दशानुं फल.

त्रिदोषनी पीडा थाय, माणसो साथे क्लेश थाय,

व्यापारनी हानि करे. देशाटन करावे, द्रव्य अने यशनो नाश थाय अने कांइ पण कार्यनी सिद्धि थाय नहीं.

राहुनी महादशामां गुरुनी अंतर्दशानुं फल.

रोग अने शत्रुओनो नाश थाय, देव गुरुनी भक्ति पर प्रीति थाय, द्रव्यनी वृद्धि थाय, मननी इच्छाओ परिपूर्ण थाय, यश अने सुखमां वधारो थाय.

इति नेत्रंथिके भड्डलादुके निमित्ते राहुमहादशा तदंतांतर्दशा फलवर्णनो नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अध्याय १२ मो.

शुक्रनी महादशा.

श्रीभद्रस्वामी कहेछे– हे शिष्यो, हुं तमोने शुक्रनी महादशानुं स्वरूप कहीश.

शुक्रनी महादशानुं फल.

सुख अने आवरु वधारे, प्रत्येक स्थाने सन्मान थाय, पुत्रनो लाभ थाय, द्रव्य मले, मननी इच्छाओ पूर्ण थाय, धर्मालूपणोनी वृद्धि थाय, धर्म, ज्ञान अने कीर्त्ति प्राप्त थाय.

शुक्रनी महादशामां सूर्यनी अंतर्दशानुं फल.

प्रथम व्याधि अने शत्रु तरफनो जय थाय पण पछी तेओनो विनाश करावे, मनमां चिंता थया करे, द्रव्यनी प्राप्ति थाय, राजा तरफथी द्रव्य तथा सन्माननो लाभ थाय अने राज्यना अधिकारीओ साथे स्नेह करावे.

शुक्रनी महादशामाां चंद्रनी अंतर्दशानुं फल.

शरीरे सुखी राखे, दरके कार्यथी कीर्त्तिनी वृद्धि थाय, शत्रुओ अने मित्रोनी पण वृद्धि थाय. देव गुरु पर प्रीति वधे.

शुक्रनी महादशामां मंगलनी अंतर्दशानुं फल.

व्याधि अने वैरीओनो नाश थाय, द्रव्य अने कीर्त्तिनो वधारो थाय, शरीरे निरोगीपणुं रहे अने संताननो लाभ थाय.

शुक्रनी महादशामां बुधनी अंतर्दशानुं फल.

नेत्र अने मस्तकमां व्याधि थाय, दरेक कार्यमां बेदरकारी तथा आलस थाय, मनमां चिंता थया करे, घणुं द्रव्य न मलवाथी हंमेशां फिकर रखावे.

शुक्रनी महादशामां शनिनी अंतर्दशानुं फल,

घरू स्त्री साथे प्रीति थाय, द्रव्य अने वैजवनो वधारो थाय, व्याधि अने वैर वीस्नकुल थाय नहीं, दरेक कार्यमां सिद्धि मले अने मननी सर्व इच्छाओ पूर्ण करावे.

शुक्रनी महादशामां गुरुनी अंतर्दशानुं फल.

द्रव्य अने सुखनो वधारो करावे, विद्वत्ता आपे, धर्म उपर प्रीति करावे, प्रजानी आगेवानी मले, मनमां चिंता रखावे, शत्रुओनी उत्पति थाय अने जलमार्गे देशाटन करावे.

शुक्रनी महादशामां राहुनी अंतर्दशानुं फल.

कुटुंब तथा मित्र साथे विरोध करावे, द्रव्यनो नाश करावे, जाइओ साथे क्लेश थाय, शरीरे व्याधि उत्पन्न थाय तथा अचानक जय आपे.

इति नैमित्तिके जद्रबाहुके निमित्ते शुक्रमहादशातरुतांतर्दशा फलनिरूपणो नाम द्वादशो ध्यायः

अध्याय १३ मो.

(राजयोगनुं स्वरूप.)

श्रीजद्रबाहु स्वामी कहेछे–हे शिष्यो, हुं तमोने राजयोगनुं स्वरूप कहुं ते सांजलो.

जे माणसनी जन्म कुंडलीमां सूर्य, मंगल, गुरु अने शनि ए चार ग्रहो अथवा ए चारमांथी त्रण ग्रहो जो उच्चना होय अने तेमांहेलो एक ग्रह जो लग्नमां रहेलो होय तो राजयोग थाय छे. उपर कहेला चारे ग्रहोमांथी वे अगर एक ग्रह उच्चनो होय अने चंद्र स्वगृही होय तथा तेमांनो एक ग्रह जो लग्नमां वेठो होय तोपण राजयोग थाय छे. पांच अथवा तेथी वधारे ग्रहो जो उच्च राशिना होय, अथवा पोतानी राशिमां के मूल त्रिकोण राशिना होय तो गमे तेवा नीच कुलमां जन्मेलो माणसपण खरेखर राजा थाय छे, तेमां संशय नथी. तेमां एटलुं याद राखवुं के, उपर कहेला ग्रहो संपूर्ण रीते बलवान् अथवा उपर जणावेला अधिकारवाला होवा जोइए तेम ते ग्रहो अस्तना अथवा युद्धमां पराजय पामेला होवा न जोइए.

हवे जे कुंडलीमां राजयोग होय, ते योगमां दशमा भावे जे ग्रहो वेठा होय, तेनी महादशा अने अंतर्दशामां तेनुं फल मले अने जो दशमे कोइ ग्रह नहोय तो लग्नमां जे ग्रह वेठो होय तेनी महादशामां अथवा अंतर्दशामां तेनुं फल मले. वली लग्नमां अने

दशामें के ग्रहो पैदा होय. तेमां के विशेष बलवान् होय, तेनी महादशा वा अंतर्दशामां राजयोगनुं फल मळे. शुभ अथवा दशमे पण पंक्तिमांथी कोइपण स्थाने जो कोइपण ग्रह पैदो न होय, तो जन्मकुंडलीमांना सर्व ग्रहोमां जे ग्रहनुं वधारे प्राबल्य होय तेनी महादशामां के अंतर्दशामां राजयोगनुं फल (राज्य) अवश्य प्राप्त थाय जो वळी जिंदगी पर्यंत ते ग्रहनी महादशा आवी शके तेम न होय तो ते ग्रहना मित्र ग्रहनी महादशामां, ज्यारे ते ग्रहनी अंतर्दशा आवे त्यारे राज्यनी प्राप्ति थाय.

राजयोगनो भंग.

उपर जणाव्या प्रमाणे राजयोगथी राज्य मळतां छतां पण जन्मकुंडलीमां जे नीचनो ग्रह होय, अथवा वैरी ग्रहनी राशिनो होय, तो तेनी महादशा अंतर्दशामां ते माणस राज्यथी भ्रष्ट थाय.

शुभ ग्रहनी राशिए बलिष्ट ग्रहने जो केंद्रमां आवेली होय अने पापग्रहनी राशिमां पापग्रहो जो जन्मकुंडलीमां होय तो ते माणस लुंटाराओनो स्वामी थाय अने द्रव्यवान थाय.

(आविषे अमारा भाइ वराहमिहिरनो एवो मत

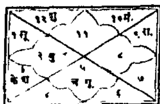
छे के, जेनी जन्मकुंडलीमां शुभग्रहो केंद्रमां बल-
वान् होय तेने आ जोग थाय छे पण ते अमुक

रामचंद्रजीनी जन्मकुंडली.



आ कुंडलीमां पांच ग्रहो उंचना छे, चंद्र पोतानी राशिनो छे अने बुध दशमे छे, एटले ७ ग्रहो केंद्रमां छे अने एक त्रिकोणमां छे, माटे रामचंद्रजीने रा-जयोग थयो छे.

युधिष्ठिर राजानी जन्मकुंडली.



आ कुंडलीमां उंचनो सूर्य बलिष्ट थइने त्रीजे बेठो छे. नवमा अने दशमा भावना स्वामीउ उंचना छे.

बीजा भावनो स्वामी गुरु चंद्रनी साथे सातमे छे. माटे युधिष्ठिरने उत्तम राजयोग थयो छे.

इति नैमंथिके जद्रबाहुके निमित्ते राजयोग वर्णनो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अध्याय १४ मो.

(दीक्षायोगनो अधिकार.)

श्रीजद्रबाहु स्वामी कहेछे–हे शिष्य, हुं तमोने दीक्षायोग संबंधी अधिकार कहीश.

आर्या वृत्तानि.

आदित्याद्यैर्बलिजिर्जवंति पुंसां यथाक्रमं दीक्षा॥
तापसकपालिसौगत,जागवतयतिचरक जैनानाम्॥१॥

जावार्थः–जो सूर्य बलवान् होय तो तापसी दीक्षा थाय, चंद्र बलवान् होय तो कापालिक दीक्षा थाय, मंगल बलवान् होय तो बुद्धनी दीक्षा थाय, बुध बलवान् होय तो जागवत (वैष्णव–शैव) दीक्षा थाय, बृहस्पति बलवान् होय तो यतिदीक्षा थाय, शुक्र बलवान् होय तो चरकनी दीक्षा थाय अने शनि बलवान् होय तो जैनदीक्षा थाय. ॥ १ ॥

दीक्षायोगनुं यंत्र.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	बलवान् ग्रहो.
तापस	कापालिक	बौध	नाग.	यति	चरक	जैन	कयामतनी दीक्षा.

अनुष्टुप्.

प्रव्रज्येशे विनष्टेतु व्रतं त्यजति मानवः ॥
दीक्षेशे राहुयुक्तेतु व्रतगंधोऽपि नो भवेत् ॥२॥

अर्थ– जो दीक्षानो स्वामी एवो ग्रह नष्ट थायतो माणस लीधेली दीक्षा छोडी देछे अने जो दीक्षानो स्वामी राहुनी साथे मलेलो होय तो व्रतनो गंध पण रहेतो नथी. ॥ २ ॥

सबले सौम्य दृष्टे च गुरु भक्तिदृढा मता ।
नीचेऽत्र क्रूर दृष्टे तु व्रतेन सह नश्यति ॥३॥

अर्थ–जो दीक्षानो ग्रह बलवान् अने सौम्य ग्रहोए जोएलो होय तो ते गुरुभक्तिमां निश्चल थाय अने नीच तथा क्रूर ग्रहोए जोयेलो होय तो ते व्रतनी साथे नष्ट थइ जाय छे. ॥ ३ ॥

जन्मराशिपतिर्मंददृष्टः शेषैर्नवीक्षितः ॥
अबलो यस्य संजातो रोगे दीक्षां दधाति सः॥४॥

अर्थः– जेनी जन्मराशिनो स्वामीग्रह मंद ग्र-

हाथी ओळखातो होय अने बीजा ग्रहोथी ओळखातो न होय अने पोते निर्बळ थयो होय तो ते रोगमां दीक्षा ले छे. ४

आर्या— चंद्रं शुभांशकस्थं बलिनं स्वोच्चस्थितं तथा शेषान्। पश्यति बलिनि शनौ स्याज्जगदीशो दीक्षितः शांतः ॥ ५ ॥

भावार्थः—शुभ अंशमां रहेला बळिष्ट अने पोताथी उच्चमां रहेला एवा चंद्रने अने बीजा ग्रहोने जो बलवान् शनि जोतो होय तो दीक्षा लेनार माणस शांत अने जगतनो स्वामी थाय. ५

एकगेहे गतैः सर्वैर्जन्मेशो यत्र वीक्षितः ॥
तस्यावश्यं भवे दीक्षा त्वेवमुक्तं जिनेश्वरैः ॥ ६ ॥

भावार्थः—जो एक स्थानमां रहेला सर्व ग्रहो जन्मस्थानना स्वामी ग्रहने जुवे तो ते माणस अवश्य दीक्षा ग्रहण करे—एम श्री सर्वज्ञ प्रभुए कहेलुं छे. ६

मालिनी वृत्तम्.

प्रकटित मुनियोगे राजयोगो यदिस्यात्
अशुभ फल विपाकं सर्वमुन्मूल्य पश्चात्।
जनयति पृथिवीशं दीक्षितं साधुशीलं
प्रणतनृपशिरोभिर्घृष्टपादारविंदम् ॥ ७ ॥

स्वामीने कोइ ग्रहो देखता नहोय पण ..
लीमां जो शनिने जन्मनो स्वामी देखतो होय
तेने दीक्षायोग थाय छे, पण तेमां जो शनि बलवान्
होय तो तेनी महादशा के अंतर्दशामां ते माणस
अवश्य जैनदीक्षा ग्रहण करेछे.

बलवान् शनि जो निर्बल एवा जन्म स्वामीने देखतो होय तोपण ते शनिज दीक्षायोग उत्पन्न करेछे अने जाणवुं के ते जरूर दीक्षा अपावशे. जन्मकुंडलीमां चंद्र गमे ते राशिनो होय पण दृष्काण कुंडलीमां जो ते मकरराशि अथवा कुंभराशिनो होय तेमज नवमांश कुंडलीमां जेम चंद्र मेष, वृश्चिक, मकर अथवा कुंभराशिनो होय अने ते चंद्रने जो बीजा कोइपण ग्रह देखता नहोय पण मात्र एकलो शनि देखतो होय तोपण तेने जैन दीक्षानो योग थायछे.

धर्मग्रंथकार थवानो योग.

जेनी जन्मकुंडलीमां कोइपण राजयोग उत्पन्न थयो होय ते कुंडलीमां जो गुरु नवमा जावे बेठो होय अने ते गुरुने, चंद्रने के लग्नने जो शनि देखतो होय तो ते माणस घणो तीर्थाटन करे तथा उत्तम प्रकारना धर्मशास्त्रना ग्रंथो रचे छे.

राजयोग साथे दीक्षायोग.

जेनी जन्मकुंडलीमां कोइपण जातनो राजयोग उत्पन्न थयेलो होय, ते कुंडलीमां जो नवमा भावे शनि रहेलो होय अने ते शनिने जो बाकीना ग्रहो देखता होय तो ते माणस राजा छतां पण दीक्षा ग्रहण करशे.

इति नैग्रंथिक भद्रबाहुके निमित्ते प्रव्रज्यायोगवर्णनो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अध्याय १५ मो.

सूर्यना बारे भावनुं स्वरूप.

श्री भद्रबाहु स्वामी कहेछे—हे शिष्यो, हुं तमोने सूर्यना बारे भावोनुं स्वरूप कहुंछुं.

पहेला भावना सूर्यनुं फल.

पेहेला भावमां (लग्नमां) जो सूर्य उंचनो अथवा पोतानी राशिमां बेठो होय तो ते माणस कीर्त्तिवान्, बलवान् अने बुद्धिवान् थाय छे अने जो नीचनो होय तो प्रतापवालो होय, पण विद्यानो अनादर करे तेमज द्रव्यहीन तथा चक्षुसंबंधी पीडा थाय. जो कर्कराशिमां बेठो होय तोपण नेत्रपीडा थाय अने जो शनिना घरमां एटले मकरराशि अ-

थवा कुंजराशिमां होय तो हृदयमां पीडा थाय. जो गुरुना स्थानमां एटले धनराशि अथवा मीनराशिमां होय तो स्त्रीनी सेवा करे. जो बुधना स्थानमां एटले मिथुनराशि के कन्याराशिनो होय तो घणी शोकरीउं थाय, पण स्त्री तरफथी सुख मळे नहीं. जो शुक्रना स्थानमां अर्थात् वृषन्न अथवा तुलाराशिनो होय तो करेला उपकारने नष्ट करनारो तथा स्त्रीहीन थाय. मंगलना स्थानमां एटले मेष अथवा वृश्चिकराशिनो होय तो प्रतापवालो, विद्वान्, व्यापारमां चित्तवालो तथा शरीरमां जरा रोगी थाय.

वीजे जावे रहेला सूर्यनुं फल.

जो सूर्य वीजा जावे होय तो ते माणसने क्षुधानो व्याधि थाय, राजा तरफथी दंड थाय, पण जो ते उंचनो अथवा पोतानी राशिनो होय तो द्रव्य मेलवे. विद्या संपादन करे; व्यापारमां लाज थाय अने पोताना वलथी द्रव्य मेलवे. जो ते गुरुना स्थानमां होय तो द्रव्यवान्, कुटुंबनो सुखी, तथा मित्रना अन्युदयवालो थाय. जो बुधना स्थानमां होय तो विद्वान् थाय, पण कुटुंवमां क्लेश अने खर्च प्रमाणेज द्रव्य मळे. जो शुक्रना स्थानमां होय तो कुटुंब-

साथे क्लेश थाय तथा द्रव्यनो विनाश करे. जो शनिना स्थानमां होय तो दरिद्री थाय अने सगाई साथे विरोध थाय. जो चंद्रना स्थानमां होय तो कुटुंबनो उपरी थाय. जो मंगलना स्थानमां होय तो पोताना भुजबलथी द्रव्य मेलवे तथा विद्वान् थाय.

त्रीजे जावे रहेला सूर्यनुं फल.

जो सूर्य त्रीजे जावे पोतानी राशिनो अथवा उंच नो होय तो बुद्धिवान्, जाईउना सुखवालो तथा जाग्यशाली थाय. जो शुक्रना स्थानमां होय तो कुटुंबसाथे क्लेशवालो तथा दुःखी थाय. चंद्रना स्थानमां होय तो कुटुंबनुं सुख मले, उद्योगी थाय, शुद्ध आचारवालो, धर्मात्मा अने यशस्वी थाय. जो बुधना स्थानमां होय तो शौर्यथी यश मेलवे, बुद्धिवान् थाय अने परिवार स्वल्प होय. जो मंगलना घरमां होय तो तेने वीलकुल जाई वेहेन न होय, जो गुरुना स्थानमां होय तो जाईउतरफथी सुख मले, तथा पोतानुं द्रव्य जोगवे. जो शनिना स्थानमां होय तो जाईउनो विनाश थाय, चाकरोनुं सुख मले नहीं अने धर्मपर श्रद्धा न थाय.

चोथे भावे रहेला सूर्यनुं फल.

जो सूर्य चोथा भावे पोतानी राशिनो अथवा उंच नो होय तो बेसवाने अश्वआदि उत्तम वाहनो मले. सुख थाय तथा भाग्योदयवालो थाय. वली मित्र, खेतर, वाडी, वाहन, कुंवा विगेरेनुं सुख मले. जो शुक्रना स्थानमां होय तो मातापितातरफथी कांइपण द्रव्य न मले, हिंसकप्राणीथी घात थाय अने रहेवाने घर न मले. जो बुधना स्थाननो होय तो मातापितातरफथी सुख मले, हंमेशा मस्तकनी पीडा रहे, मानी थाय अने गुप्तरीते द्रव्य खरचनारो थाय. जो चंद्रना स्थाननो होय तो खेतरवाडी विगेरेनुं सुख मले. जो मंगलना स्थाननो होय तो मित्रोतरफथी लाभ मले; अग्निनो भय थाय तथा अहंकार आवे. जो गुरुना स्थाननो होय तो घणांसाथे मित्राई थाय पण तेने मित्रोतरफथी ज नुकशान थाय. जो शनिना स्थाननो होय तो लंगडो, शरीरे कांइ पण खोडवालो, अहंकारी, वेवधारनारो तथा आतपी होय.

पांचमां भावे रहेला सूर्यनुं फल.

जो सूर्य पांचमा भावे पोतानी राशिनो अथवा उं

चनो होय तो ते माणस सुखी थाय. बुद्धि, विद्या, लोकता, विवेक, पराक्रम तथा नीतिसंबंधी लाभ मळे. जो शुक्रना स्थाननो होय तो संतानविनानो गांडो, क्रोधवाळो तथा मूर्ख थाय. जो बुधना स्थाननो होय तो मूर्ख तथा संतानसाथे विरोधवाळो थाय. जो चंद्रना स्थानमां होय तो तीक्ष्ण बुद्धिवाळो अने घणी दीकरीओने जन्म आपनारो थाय. जो मंगळना स्थानमां होय तो एकाद पुत्र थाय पण ते पुत्र घणो बुद्धिवान थाय. जो शनिना स्थानमां होय तो एक अथवा बे संतान थाय तथा बुद्धिवान् पुत्रसाथे क्लेश करनारो अने परविद्यार्थी द्रव्य मेळवे. जो गुरुना स्थानमां होय तो संतान न थाय बुद्धि उत्तम प्रकारनी थाय विद्वान् तथा धर्मात्मा थाय.

छठा जाये रहेला सूर्यनुं फल.

जो सूर्य छठा जाये पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो मोशाळसंबंधी सारुं सुख मळे, रोग अने वैरीओनो विनाश थाय. जो शुक्रना स्थानमां होय तो रोगिष्ट थाय. शत्रुओतरफथी दुःख मळे अने मोशाळतरफथी बीलकुल दुःख न मळे. जो

बुधना स्थानमां होय तो शत्रुर्उनो विनाश करे अने गातीमां व्याधि थाय. जो गुरुना स्थानमां होय तो रोग अने वेरिर्उनो विनाश करे. मोशाल पक्षनुं सुख आपे तथा शांतस्वनावी, शरीरे निरोगी अने सुखी थाय. जो शनिना स्थानमां होय तो व्याधि अने वेरिर्उनी वृद्धि थाय अने मोशालपक्षनुं सुख मले नहीं. जो मंगलना स्थानमां होय तो व्याधि अने शत्रुर्उनो उपद्रव थाय अने मोशालपक्षनुं सुख मले.

सातमा नावे रहेला सूर्यनुं फल.

जो सूर्य सातमा नावे पोतानी राशिनो अथवा जो उंचनो होय तो स्त्रीनुं सुख मले, देशाटनथी लान थाय अने व्यापारमां द्रव्यनी प्राप्ति थाय. जो शुक्रना स्थानमां होय तो वृद्धावस्थामां स्त्री मले, परस्त्री लंपट थाय अने पोतानी स्त्रीसाथे बने नहीं. जो मंगलना स्थानमां होय तो बे स्त्री थाय अने देशाटन करवुं पडे. जो बुधना स्थानमां होय तो अनक्ष्य वस्तुनुं नक्षण थाय अने हंमेशा आनंदमां रहे, जो चंद्रना स्थानमां होय तो शरीरे रोग थाय. जो शनिना स्थानमां होय तो स्त्रीसंबं-

धी सुख मले नहीं, देशाटनमां जय थाय अने व्यापारमां लाज न मले. जो गुरुना स्थानमां होय तो व्यापारमां लाज थाय.

आठमे जावे रहेला सूर्यनुं फल.

जो सूर्य आठमा जावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो लांबु आयुष्य थाय, तथा सुख जोगवे. जो शुक्रना घरमां होय तो पुत्रोनुं सुख न थाय निर्धन थाय तथा अर्शनो व्याधि थाय जो मंगलना स्थानमां होय तो नेत्रमां व्याधि थाय, शरीरे गरमी थाय अने पशु तरफथी हानि थाय जो गुरुना स्थानमां होय तो शरीरे किंचित् व्याधि थाय अने घणुं ड्रव्य मले नहीं. जो शनिना स्थानमां होय तो स्वल्प आयुष्यवालो तथा निर्धन थाय. जो चंड्रना स्थानमां होय तो गतीना रोगवालो थाय.

नवमे जावे रहेला सूर्यनुं फल.

जो सूर्य नवमा जावे स्वराशिनो अथवा उंचनो होय तो जाग्यवान्, ड्रव्यवान् तथा संतानना सुखवालो थाय. जो शुक्रना स्थानमां होय तो स्वल्प जाग्यवालो तथा मातापितासाथे विरोधवालो थाय. जो बुधना स्थानमां होय तो संताननुं सुख मले

अने स्त्रीनुं पण सुख मले. जो गुरुना स्थानमां होय तो मातापिताना सुखवालो तथा देशाटन करनारो थाय. जो शनिना स्थानमां बेठो होय तो मंदभाग्यवालो थाय, तथा धर्मपर बीलकुल श्रद्धा नहीं राखनारो थाय. जो मंगलना गृहमां होय तो पापबुद्धिवालो तथा नीच कार्यमां आसक्त थाय. जो चंद्रना स्थानमां होय तो भाग्यवालो तथा देशाटन करनारो थाय.

दशमां भावे रहेला सूर्यनुं फल.

जो सूर्य दशमा भावे स्वराशिनो तथा उंचनो होय तो राजदरबारथी सुख मले. पितातरफथी द्रव्य मले, सन्मान प्राप्त थाय यश वधे अने ते राजयोगनुं फल भोगवे. जो शुक्रना घरमां होय तो पितानुं सुख न मले. राजातरफथी अपयश मले तथा माननी हानी थाय. जो चंद्रना स्थानमां बेठो होय तो यशवालो थाय. जो बुधना घरमां रह्यो होय तो राजातरफथी सुख तथा द्रव्य मले. जो गुरुना स्थानमां होय तो पण राजातरफथी सुख मले तथा राजकार्यमां कुशल थाय. जो मंगलना स्थानमां होय तो क्षत्रिय अथवा राजाथी लाभ

अने स्त्रीनुं पण सुख मले. जो गुरुना स्थानमां होय तो मातापिताना सुखवालो तथा देशाटन करनारो थाय. जो शनिना स्थानमां बेठो होय तो मंदभाग्यवालो थाय, तथा धर्मपर बीलकुल श्रद्धा नहीं राखनारो थाय. जो मंगलना गृहमां होय तो पापबुद्धिवालो तथा नीच कार्यमां आसक्त थाय. जो चंद्रना स्थानमां होय तो भाग्यवालो तथा देशाटन करनारो थाय.

दशमां भावे रहेला सूर्यनुं फल.

जो सूर्य दशमा भावे स्वराशिनो तथा उंचनो होय तो राजदरबारथी सुख मले. पितातरफथी द्रव्य मले, सन्मान प्राप्त थाय यश वधे अने ते राजयोगनुं फल भोगवे. जो शुक्रना घरमां होय तो पितानुं सुख न मले. राजातरफथी अपयश मले तथा माननी हानी थाय. जो चंद्रना स्थानमां बेठो होय तो यशवालो थाय. जो बुधना घरमां रह्यो होय तो राजातरफथी सुख तथा द्रव्य मले. जो गुरुना स्थानमां होय तो पण राजातरफथी सुख मले तथा राजकार्यमां कुशल थाय. जो मंगलना स्थानमां होय तो क्षत्रिय अथवा राजाथी लाभ

मले अने यशनी वृद्धि थाय. जो शनिना स्थानमां होय तो मातापिताना सुखनो विनाश थाय अने राजातरफथी अपमान तथा यशनो नाश थाय.

अग्यारमे नावे आवेला सूर्यनुं फल.

जो सूर्य अग्यारमा नावे स्वराशिनो तथा उंचनो होय तो अनेक प्रकारे डव्यनो लाज थाय, अने वस्त्राजूषणोनो घणो लाज थाय. जो शुक्रना स्थाने बेठो होय तो चीलकुल लाज थाय नहीं, गरीबाई मले अने संतान थाय नहीं. जो शनिना घरमां होय तो नीच, प्रजातरफथी नुकशानि थाय, पुत्र न थाय अने जो थाय तो मूर्ख थाय. जो मंगलना घरमां बेठो होय तो बुद्धिनो विनाश थाय पुत्रोनी उत्पत्ति न थाय, पण डव्यनो लाज थाय जो गुरुना स्थानमां बेठो होय तो बुद्धिनो वधारो करे संतानतरफथी सुख मले अने अनेक प्रकारना लाज थाय. जो चंडना घरमां बेठो होय तो घणा वस्त्रो तथा आजूषणो मेलवे, अने संतानसंबंधी सुख आपे. जो बुधना घरमां होय तो यशनी वृद्धि थाय अने घणुं डव्य मले.

बारमा भावे रहेला सूर्यनुं फल.

सूर्य जो बारमा भावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो पुण्यशाली थाय तथा उत्तम कार्यो करे पण पोते लोभी होय. जो शुक्रना स्थानमां वेगे होय तो पापकार्यमां द्रव्यनो व्यय करे अने शरीरमां पीडा रहे. जो मंगलना स्थानमां होय तो अभक्ष्यथी ज्ञातिभ्रष्ट थाय. जीवहिंसा करे अने देशांतर जई निवास करे. जो बुधना घरमां होय तो स्वल्प द्रव्यवालो तथा स्वल्प सुखवालो होय. जो गुरुना स्थानमां होय तो सारा कार्यमां द्रव्य खरचे. पोतानीपासे अल्प द्रव्य राखे तथा सुखी थाय. जो चंद्रना स्थानमां होय तो शुभ मार्गे तथा धर्ममार्गे द्रव्य खरचे अने परोपकारार्थे नवाणो बंधावे.

इति नैर्ग्रंथिके भद्रबाहुके निमित्ते सूर्यद्वादश भावनिरूपणोनाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

अध्याय १६ मो.

(चंद्रना बारे भावनुं स्वरूप.)

श्री भद्रबाहुस्वामी कहेछे—हे भिक्षुओ, हुं तमो-चंद्रना बारे भावनुं स्वरूप कहीश.

पेहेला जावे रहेला चंद्रनुं फल.

जो चंद्र प्रथम जावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो अथवा संपूर्ण कलावालो थईने वेठो होय तो शरीरे नीरोगी रहे, रूपनी वृद्धि थाय अने विद्या अने चपलपणुं आपे. जो मंगलना स्थानमां होय तो दरिद्री थाय. जो शुक्रना स्थानमां होय तो दाडना रोगवालो थाय. जो बुधना स्थानमां होय तो द्रव्यवान तथा सुखी रहे, पोताना कुलमां ऊपरीपणुं जोगवे, राज्यमां अधिकारी थाय अने मधुर वचन वोलनारो थाय. जो गुरुनी राशिमां होय तो ते माणस महान् बुद्धिवान् थाय. जो शनिना घरमां होय तो शरीर कद्रूप थाय तथा हंमेशा शरीरे रोगी रहे. जो सूर्यनी राशिमां होय तो नेत्रमां व्याधि थाय.

वीजे जावे रहेला चंद्रनुं फल.

जो चंद्र वीजे जावे पोतानी राशिनो अथवा ऊंचनो थईने वेठो होय तो धननु सुख मले, परिवारनी वृद्धि थाय अने मिष्ट वचनो वोलनार थाय. जो मंगलना स्थानमां होय तथा क्षीण कलानो होय तो निर्धन तथा कुटुंबसाथे क्लेश करनारो थाय.

जो बुधना स्थानमां होय तो धनवान्, वैभववालो अने सुखी थाय. जो गुरुना स्थाने होय तो प्रतापी अने महान् प्रतापी थाय. जो शनिनी राशिमां होय तो संतोषविनानो अने लोभी थाय. जो सूर्यनी राशिमां होय तो क्षयरोगी, जीने तोतलो अने सगाईसाथे क्लेश करनारो थाय. जो शुक्रनी राशिमां रहेलो होय तो द्रव्यवान् तथा मोटा परिवारवालो थाय.

त्रीजे भावे रहेला चंद्रनुं फल.

जो चंद्र त्रीजे भावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो महापराक्रमी, व्यापारमां कुशल अने भाईतरफथी सुख मेलवे. जो ते मंगलना घरमां होय तो अल्प पराक्रमी, आलसु तथा कुटुंबना सुखविनानो होय. जो बुधना स्थानमां होय तो शरीरमां वायुनो रोग थाय. द्रव्यनुं सुख थाय पण सौभाग्यपणुं मले नहीं. जो शुक्रना स्थाननो होय तो अल्प पराक्रमी तथा उद्योगी थाय. जो सूर्यना स्थानमां होय तो चाडीओ थाय. तथा राजातरफथी द्रव्यनो दंड थाय. जो ते गुरुना स्थानमां होय तो पशुओनो स्वामी थाय, द्रव्य उपार्जन करे,

शुरूवालो थाय तथा कुटुंबनो सुखी थाय, पराक्रमथी द्रव्य मेलवे, विद्वान् अने विवेकी थाय. जो शनिना घरमां होय तो कुटुंबनुं अल्प सुख मले, पण पराक्रमी अने सारा उद्यमवालो थाय.

चोथा जावे रहेला चंद्रनुं फल.

जो चंद्र चोथा जावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो मातानुं सुख मले, क्षेत्रादिकथी लाज थाय, मित्रोनीसाथे स्नेह थाय अने रथादि वाहनोनो लाज थाय. जो मंगलना स्थानमां होय तो शरीरे रोगी रहे, मातातरफथी थोडुं सुख मले अने हंमेशा शरीरे थोकी थोकी पीका रहे. जो शुक्रना घरमां होय तो मातानुं मृत्यु थाय. जो बुधना स्थानमां होय तो माताने धावबाथी रोगी थाय गुरूना स्थानमां होय तो मिष्टान्ननो जोक्ता थाय तथा अनेक प्रकारना सुख जोगवे. जो शनिना घरमां होय तो परस्त्री लंपट थाय, पण मातापितानुं सुख मले, वाहनोनो योग थाय, नवा खेतरवामीथी लाज थाय अने शरीरे निरोगी रहे. जो सूर्यना स्थाननो होय तो रोगी रह्या करे.

पांचमे जावे आवेला चंद्रनुं फल.

जो चंद्र पांचमे जावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो घणी कंन्याउ थाय, स्त्री गुणवाली होय, विद्वान् थाय अने हंमेशा द्रव्य मल्या करे. जो ते मंगलना स्थाननो होय तो मूर्ख थाय अने संतान न थाय, कदि थाय तो पुत्री थाय. जो शुक्रना स्थानमां होय तो घणी मेहेनते अल्प द्रव्य मेलवे अने बुद्धिवान् होय. जो बुधना घरनो होय तो फक्त एकज पुत्रनुं सुख मले. जो गुरुना स्थाननो होय तो द्रव्यवान् थाय. जो शनिना स्थाननो होय तो मूर्ख अने नीच कार्यमां रक्त थाय. जो सूर्यना स्थाननो होय तो राजकार्यमां कुशल थाय अने संतति सारी थाय.

छठे जावे रहेला चंद्रनुं फल.

जो चंद्र छठा जावे पोतानी राशिनो के उंचनो होय तो मोशालपक्षनुं सुख मले, व्याधि अने वैरीउनो नाश थाय. जो मंगलना स्थाननो होय तो हंमेशा शरीरे रोगी रहे, शत्रु तरफथी जय थाय, मोशालनुं सुख मले नहीं तथा निर्धन रहे. जो शुक्रना घरनो होय तो विधवागमन करे अने नीच

कार्यो करे. जो बुधना स्थाननो होय तो जयंकर कार्य करे अने सर्वेनी साथे क्लेश करे. जो गुरुना स्थाननो होय तो हंमेशा रोगी रहे अने मोशालथी दुःखी थाय. जो शनिना घरनो होय तो रोग अने वैरीउनो विनाश करे, सारी बुद्धि थाय, सुख मेलवे मोशालथी सुखी थाय, उत्तम मार्गे चाले अने मित्रोसाथे स्नेह राखे. जो सूर्यना घरनो होय तो हंमेशा व्याधिवालो रहे.

सातमे जावे रहेला चंद्रनु फल.

जो चंद्र सातमे जावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो मिष्ट वचनो बोले, स्त्रीनो सुखी थाय, देशांतरमांथी द्रव्यनो लाज थाय तथा व्यापारमां कुशल थाय. जो मंगलना स्थाननो होय तो दुराचारी स्त्री मले, घरनुं कार्य करनारो थाय अने देशाटन करवुं पडे. जो शुक्रना घरनो होय तो स्त्री साथे बने नहीं. जो बुधना स्थानमां होय तो स्त्रीथी मृत्यु थाय. जो गुरुना स्थानमां होय तो राजा तरफथी द्रव्य मले. जो शनिना घरमां होय तो दुष्ट स्त्री मले. जो सूर्यना घरमां होय तो हंमेशा स्त्रीसाथे क्लेश थाय.

आठमे स्थाने रहेला चंद्रनुं फल.

चंद्र जो आठमा स्थाने पोतानी राशिनो के उचनो होय तो दीर्घायुषी थाय, शरीरे रोग विनानो देह गुरुपर प्रेम राखे तथा धर्मात्मा थाय. जो मंगळनी राशिमां होय तो अल्पायुषी, हंमेशा रोगी रहे अने नीचकर्मो कर्या करे. जो शुक्रना स्थानमां होय तो थोडा आयुष्यवाळो थाय. बुधना स्थानमां होय तो क्षयना रोगथी मृत्यु पामे. जो सूर्यना घरनो होय तो बाळपणाथीज बिमार थाय. जो गुरुना स्थानमां होय तो मध्यम प्रकारना आयुष्यवाळो थाय. जो शनिना स्थानमां होय तो शरीरे रोगी थाय अने निर्धन थाय

नवमा स्थाने रहेला चंद्रनुं फल

तो पिता माता तुरत मृत्यु पामे. जो गुरुना स्थानमां होय तो जाग्यशाली थाय तथा देशाटनथी ड्रव्य मेलवे. जो शनिना घरमां होय तो निर्धन तथा क्रोधी थाय.

दशमा जावे रहेला चंड्रनुं फल.

जो चंड्र दशमा जावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो ते माणसने राजाथी लाज मले, पितातरफथी घणुं ड्रव्य मले, प्रत्येक स्थाने कीर्ति वधे, व्यापारथी घणुं ड्रव्य संपादन करे तथा उत्तम कार्यो करावे. जो मंगलना स्थानमां होय तो पिता तरफथी ड्रव्य न मले, राजा तरफथी दंम थाय, पण बुद्धिवान् होय. जो शुक्रना घरनो होय तो व्यजिचारी थाय. जो बुधना स्थाननो होय तो उत्तम कार्यो करे. जो सूर्यना स्थानमां होय तो यश मेलवे. जो गुरुना स्थानमां होय तो दयालु थाय. जो शनिना स्थानमां होय तो तेनापर पितानो क्रोप थाय तथा राज्य तरफथी हानि थाय.

अग्यारमा जावे रहेला चंड्रनुं फल.

जो चंड्र अग्यारमा जावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो ते माणस विद्वान् थाय. तेने अनेक प्रकारनो लाज थाय, वस्त्राजूषणो प्राप्त थाय अने

चपल स्वभावनो तथा द्रव्यवान् थाय अने कलाकौशल्य वधारे. जो गुरुना स्थानमां होय तो विद्या अने द्रव्य मले. जो शनिना घरमां होय तो स्वल्पायुषी तथा थोडा पुत्रवालो थाय अने शरीरमां रोग रहे.

बीजे भावे रहेला मंगलनुं फल.

जो मंगल बीजे भावे पोताना स्थानमां रह्यो होय अथवा उंचनो होय तो विद्वान्, द्रव्यवान् तथा घणा परिवारवालो थाय. जो शुक्रना स्थानमां होय तो धनवान थाय, रोगी रह्या करे, शुभ कार्यमां द्रव्य खर्चे, अनदय वस्तुनुं नक्षण करे अने कुटुंब साथे विरोध थाय. जो बुधना स्थानमां होय तो अपंग थाय, द्रव्यनो व्यय करे अने तेथी पीडित थाय तथा कुटुंबथी दुःखी थाय. जो चंद्रनी राशिनो होय तो नेत्रमां पीडा थाय, द्रव्य तथा परिवारनो विनाश करे, शरीरे व्याधित थाय अने दुष्कार्य करवामां तत्पर थाय. जो सूर्यना स्थानमां होय तो प्रमेहादिक रोग थाय अने उन्माद थाय. जो गुरुना स्थानमां होय तो राजानी कृपा थाय अने देशाटनमांथी द्रव्य मेलवे. जो शनिना घरनो होय तो द्रव्यहीन थइ परिवारनो विनाश थाय.

त्रीजा जावे रहेला मंगलनुं फल.

मंगल जो त्रीजे जावे पोताना स्थाननो के उंच-नो होय तो बहु पराक्रमी, व्यापारमां कुशल अने घणा परिवारवालो थाय. जो चंद्रना स्थानमां होय तो बहोलुं कुटुंब थाय, पण सर्वनी साथे क्लेश घणा करे, व्यापारमां द्रव्य मेलवे पण स्त्री दुराचारी मले. जो शुक्रना घरमां होय तो कुटुंबविनानो पण द्रव्य-वान थाय. जो बुधनी राशिमां होय तो कुटुंबीउं साथे क्लेश थाय अने धर्मथी भ्रष्ट थाय. जो सूर्यनी राशिमां होय तो पोताना भाइउं साथे बने नहीं. जो गुरुना स्थानमां बेठो होय तो धर्म कार्य करे. जो शनिनी राशिमां होय तो आलसु, दरिद्री, दुष्कार्य करनारो थाय तथा धर्मथी भ्रष्ट थाय, अने संतानो जीवे नहीं.

चोथा जावे रहेला मंगलनुं फल.

जो मंगल चोथा जावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो माता तरफथी सुख मले, खेतीथी लाभ थाय अने पशुउंथी धन मले. जो ते चंद्रना स्थानमां होय तो माता तुरत मृत्यु पामे, निर्धन थइ जाय अने मित्रो साथे क्लेश थाय. जो बुधना घरमां होय तो घरमां कंकास थाय अने पारके घेर गुज-

रान करवुं पडे. जो शुक्रना स्थानमां होय तो मा रोगी थाय, पितानुं मृत्यु थाय अने वाहननी हान थाय. जो सूर्यना घरमां होय तो स्थानविनानो तथा कुटुंबके मित्रो साथे विरोध करे. जो गुरुनी राशिमां होय तो द्रव्य संबंधी चिंता न थाय अने मित्रो तरफथीलाज थाय. जो शनिना स्थानमां होय तो अग्निथी घरनुं नुकसान थाय, पिता तथा स्त्रीसाथे क्लेश करे. अथवा माता पिता अने स्त्रीनो वध करे, जाइर्ड साथे द्वेष करे परदेशमां जटके तथा द्रव्यहीन थाय.

पांचमा जावे रहेला मंगलनुं फल.

जो मंगल पांचमा जावे पोतानी राशिमां अथवा उंचनो होय तो सूक्ष्म बुद्धिवालो, क्रोधी, विद्वान् तथा पुत्रो तरफथी सुखी थाय. कलाउथी द्रव्य मेलवे तथा वस्त्राजूषणोनी प्राप्ति थाय. जो ते चंद्रना स्थानमां होय तो मूर्ख, पुत्रविनानो अने निर्धन थाय. जो शुक्रना घरमां होय तो क्रोधी तथा दुर्बुद्धिवालो थाय. जो बुधनी राशिमां होय तो दुष्कार्य करे, व्यसनमां लंपट थाय राजानो कोप मेलवे अने शरीरपर शस्त्रोथी ताडन थाय. जो शनिना घ-

रमां होय तो पुत्रादिक संतति जीवे नहीं, कदाच वृद्धावस्थामां एकाद पुत्रनुं सुख मले, तोपण मूर्ख रहे. जो गुरुना घरमां होय तो राजकलामां प्रवीण, सूक्ष्म बुद्धिवालो, गुणी, जराक्रोधी तथा पुत्र सुखथी रहित थाय. जो सूर्यनी राशिमां होय तो एक संतानज थाय अने राजानी कृपा मेलवे.

छठ्ठा जावे रहेला मंगलनुं फल.

जो मंगल छठ्ठा जावे पोताना स्थानमां अथवा उंचनो होय तो मोशालनुं सुख न मले. व्याधि अने वैरीउनो विनाश थाय, पण जो चंद्रनी राशिमां होय तो व्याधि अने वैरीउ घणां थाय, तेमज मोशालथी सुख मले. जो सूर्यना स्थानमां होय तो लोकोपर उपकारी थाय, यश मेलवे, संताननुं स्वल्प सुख मले. जो गुरुना घरमां होय तो शत्रुउने दूर करे, पुत्रोनो लाभ थाय तथा द्रव्य संपादन थाय. जो बुधना स्थानमां होय तो वृद्धावस्थामां कुष्टनो रोग थाय. जो शुक्रना स्थानमां होय तो रोगिष्ट स्त्री मले अने मोशाल तरफथी अपमान थाय. जो शनिनी राशिमां होय तो मोशाल पक्षनो विनाश थाय तथा रोग अने शत्रुथी जय थाय.

सातमा जावे रहेला मंगलनुं फल.

जो मंगल पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो स्त्रीनुं सुख मले, देशाटनथी लाभ थाय, व्यापारमां द्रव्य मले पण जो ते नींचनो होय तो बे स्त्री थाय पण तेनुं सुख मले नहीं अने देशाटनमां जय थाय. जो बुधना स्थानमां होय तो बेस्त्रीउ थाय, पण रोगथी ते स्त्रीउ नाश पामी जाय. जो शुक्रनी राशिमां होय तो देशांतरमां जइ निवास करे. जो सूर्यना स्थानमां होय तो स्त्री दुराचारी मले. जो गुरुना घरमां बेठो होय तो हस्त मैथुनी थाय. जो शनिना घरमां होय तो पशु साथे मैथुन सेवनारो तथा दुराचारी थाय.

आठमा जावे रहेला मंगलनुं फल.

जो मंगल आठमा जावे पोताना स्थाननो अथवा उंचनो होय तो लांबु आयुष्य जोगवे, शरीरे निरोगी रहे, पण जो नींचनो होय तो अल्प आयुष्य जोगवे तथा शरीरे रोगी थाय. जो शुक्रना स्थाननो होय तो रोगी, अल्पायुषी तथा द्रव्यहीन थाय. जो बुधनी राशिमां होय तो पितातरफथी कष्ट मले, एकज पुत्र थाय अने रोगिष्ट थाय. जो शुक्रना स्थान-

मां होय तो स्त्रीथी दुःख थाय अने व्यापारमां नुकसानी थाय. जो गुरुना स्थानमां होय तो व्यापारथी लाभ थाय, राजातरफथी द्रव्य मले अने शरीरे दुर्बल रहे. जो शनिना घरनो होय तो स्त्री क्रोधी मले तथा स्वल्पायुषी थाय.

नवमा भावे रहेला मंगलनुं फल.

जो मंगल नवमे भावे पोताना स्थाननो के उंचनो होय तो भाग्योदय थाय, पुत्रो प्राप्त थाय, देशाटनथी द्रव्यनो घणो लाभ थाय, धर्मपर श्रद्धालु थाय अने महात्माओनी भक्ति करे पण जो नींचनो होय तो देवगुरुपर द्वेष करनारो, संततिविनानो तथा देशाटनथी दुःखी थाय. जो शुक्रना स्थानमां बेठो होय तो पितानुं तत्काल मृत्यु करे. पोते द्रव्य गुमावे तथा परस्त्री साथे गमन करे जो बुधना स्थानमां होय तो नास्तिक थाय. जो सूर्यना घरमां होय तो परिवारविनानो थाय. जो गुरुनी राशिमां होय तो तीर्थोनी यात्रा करे. जो शनिना स्थानमां होय तो देवगुरुपर द्वेष करे.

दशमा भावे रहेला मंगलनुं फल.

जो मंगल दशमा भावे पोतानी राशिनो अथवा

उंचनो होय तो राजा तरफथी घणो लाज मले, पितातरफथी सुख प्राप्त थाय, यश मले, शुज कार्यो करे तथा व्यापारमां घणो लाज मेलवे पण जो ते नींचनो होय तो राजानो जय थाय, पिता पासेथी ऽव्य मले नहीं अने व्यापारमां धन नष्ट थाय तथा लोकमां अपकीर्त्ति थाय. जो शुक्रना स्थानमां होय तो पराक्रमी अने मातापिताना घणां स्नेहवालो थाय. जो बुधनी राशिमां होय तो पिताने ऽुःख देनारो तथा संतानना सुखविनानो थाय. जो सूर्यना स्थानमां वेठो होय तो सौजाग्यवालो तथा सदाचारी होय जो गुरुना घरमां होय तो देवगुरुनी जक्ति करे. जो शनिनी राशिमां होय तो कपटी थाय.

अग्यारमा जावे रहेला मंगलनुं फल.

जो मंगल अग्यारमा जावे पोताना स्थाननो होय के उंचनो होय तो अनेक प्रकारनो लाज थाय, वस्त्राजूपणो मले, संतान थाय अने बुद्धिवान् थाय पण जो ते नींचनो होय तो लाजने वदले नुकशान थाय, संततिनुं सुख न मले. जो सूर्यनो स्थानमां होय तो यशवालो थाय तथा राजा तरफथी ऽव्य मले. जो शुक्रनी राशिमां होय तो धनवान् थाय. जो

बुधना स्थानमां होय तो विद्या आवे नहीं. जो गुरुना स्थानमां रह्यो होय तो राजातरफथी स्वल्प द्रव्य मळे. जो शनिनी राशिमां होय तो खर्च जेटलुंज द्रव्य मळे.

बारमा जावे रहेला मंगलनुं फल.

जो मंगल बारमा जावे पोताना स्थाननो अथवा उंचनो होय तो लोभी तथा करकसरवालो थाय अने उत्तम मार्गे चाले अने जो नींचना घरनो होय तो कुमार्गे द्रव्यनो खर्च करे, अग्निनी घात आवे अने शरीरे पीडा थाय. जो शुक्रना स्थानमां होय तो निर्धन थाय. जो बुधना स्थानमां होय तो अभिमानी थाय. जो गुरुनी राशिमां होय तो घणुं खर्च करे तथा घणां माणसो साथे विरोध करे. जो शनिना स्थानमां होय तो भिक्षाहारी थाय तथा निर्धन थइ जाय. जो सूर्यना घरमां होय तो राजा तरफथी दंड थाय.

इति नैमेंथिके भद्रबाहुके निमित्ते मंगलद्वादशभाव निरुपणो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अध्याय १८ मो.

(बुधना वारेभावनुं स्वरूप.)

श्रीभद्रबाहुस्वामी कहेछे—हे भिक्षुओ हुं तमोने बुधना वारे भावनु स्वरूप कहीश.

पेहेला भावमां रहेला बुधनुं फल.

जो बुध प्रथम भावे (लग्नमां) पोतानी राशिनो के उंचनो होय तो शरीरे नीरोगी रहे तथा लांबा आयुष्यवालो, धर्मी, तथा विद्वान् थाय. जो गुरुना स्थानमां होय तो शरीरे रोगी, नास्तिक अने विद्याहीन थाय. मंगलना घरमां होय तो विद्वान्, ज्योतिष तथा मंत्र विद्या जाणनार अने उत्तम कार्य करनार थाय. जो शुक्रना स्थानमां होय तो सदाचारी थाय. जो चंद्रना स्थानमां होय तो तीर्थोनी यात्रा करे, शरीरे सेहेज रोगी थाय जो मंगलना घरमां होय तो महा स्वरूपवान् थाय. जो सूर्यना स्थानमां होय तो बेहेरो अथवा लंगडो थाय. सज्जनोपर अप्रीति करे तथा शरीरे रोगी थाय.

बीजे भावे रहेला बुधनुं फल.

जो बुध बीजे भावे पोताना स्थाननो अथवा उंचनो होय तो द्रव्यवान् तथा कुटुंबवालो थाय, संताननी समृद्धि थाय तथा धर्म उपर श्रद्धालु थाय अने पूर्ण रीते सुखी थाय. जो गुरुनी राशिमां होय तो निर्धन थाय तथा सगाओ साथे क्लेश करे. जो मंगलनी राशिमां होय तो विद्वान् अने द्रव्यवान् थाय. जो

शुक्रनी राशिमां होय तो उत्तम लेखक, गणित शास्त्रनो पारगामी तथा कवीश्वर थाय. जो चंद्रना स्थानमां होय तो शरीरे वात प्रकृति थाय. सूर्यना स्थानमां होय तो उद्वेगवालो, चपल, क्रोधी तथा लांबा आयुष्यवालो थाय. जो शनिना घरमां होय तो दुःखी अने मध्यम आयुष्यवालो थाय.

त्रीजे जावे रहेला बुधनुं फल.

जो बुध त्रीजे जावे पोतानी राशिनो के उंचनो होय तो जाग्यशाली. कुटुंबना सुखवालो तथा धर्मात्मा थाय. जो गुरुना स्थानमां होय तो आलसु, पुत्रवान् अने निर्धन थाय. जो मंगलना घरमां होय तो जाइ वेहेनना सुखवालो तथा सदाचारी थाय. जो शुक्रनी राशिमां होय तो ऊच्यवान् तथा देवगुरुनी जक्तिवालो थाय. जो चंद्रना स्थानमां होय तो धैर्यवान् थाय. जो सूर्यना घरमां होय तो कुटुंबसाथे रूपी थाय. जो शनिनी राशिमां होय तो जयवालो अने स्वल्पायुषी थाय.

चोथा जावे रहेला बुधनुं फल.

जो बुध चोथा जावे स्वराशिनो अथवा उंचनो होय तो मातातरफथी सुख मले, वधी मीलकतनो

मालेक थाय तथा मित्रोतरफथी लाभ थाय. रुना स्थानमां होय अने ते जो निर्बल होय माताने दुःख आपे तथा मित्रोतरफथी द्रव्यनी हानि थाय. जो मंगलना स्थानमां होय तो कलामां प्रवीण थाय तथा राजा पासेथी द्रव्य मेलवे. जो शुक्रना स्थाननो होय तो पितातरफथी सुख मेलवे. जो चंद्रनी राशिनो होय तो माता उपर अप्रीति करे तथा मूर्ख रहे. जो सूर्यना स्थानमां होय तो व्यापारथी लाभ मेलवे. जो शनिना घरमां होय तो हस्ती विगेरे वाहन उपर बेसे पण तेथी घात थाय, करज करी द्रव्य खर्ची नाखे अने मित्र साथे प्रपंच करी द्रव्य मेलवे.

पांचमा भावे रहेला बुधनुं फल.

जो बुध पांचमा भावे पोताना स्थाननो वा उंचनो होय तो बुद्धिनुं अने पुत्रो तरफनुं सुख मले. जो गुरुनी राशिमां अथवा नीचनो होय तो मूर्ख अने पुत्ररहित थाय. जो मंगलना स्थानमां होय तो अहंकारी थाय तथा पुत्र तरफथी दुःखी थाय. जो शुक्रना घरनो होय तो बुद्धिवान् थाय. जो चंद्रना स्थाननो होय तो पुत्र उपर द्वेष करे. जो सूर्य-

ना घरमां होय तो कुरूपवाळी अने वैद्दमी थाय. जो शनिनी राशिनो होय तो अल्प संपत्तिवाळो, सुखी तथा राजानी अल्प कृपानो पात्र थाय, तेमज दे-शाटन करे.

छठा जावे रहेला बुधनुं फळ.

जो बुध छठा जावे पोतानी राशिनो अथवा उच्च-नो होय तो रोग अने शत्रुनो विनाश करे, मोशाळ पक्षथी द्रव्य मेळवे. जो गुरुना स्थाननो होय अने जो निर्बळ होय तो रोग अने शत्रुथी जय थाय तथा निर्धन थाय. जो मंगळना स्थानमां होय तो राजानो अधिकारी थाय पण घणी विद्या मेळवे नहीं अने शूरवीर थाय. शुक्रना स्थानमां होय तो राजा साथे मैत्री थाय अने गायन कळा शीखे. चंद्रना स्थानमां होय तो क्षयरोग थाय जो शनिनी राशिमां होय तो स्वजनो साथे विरोध थाय अने शत्रुता घणी थाय. जो सूर्यनी राशिमां होय तो मोशाळ तरफथी एक कोडी पण मळे नहीं.

सातमे जावे रहेला बुधनुं फळ.

जो बुध सातमे जावे पोतानी राशिनो के उंचनो होय तो सुंदर स्त्री मळे, व्यापारमां सुख थाय, देशा-

टननथी द्रव्य संपादन करे. जो गुरुनी राशिमां निर्बल होय तो स्त्री दुराचारी मले, देशाटन करतां मृत्यु थाय, व्यापारमां नुकशानी थाय. जो मंगलना स्थानमां होय तो मातानी घणी प्रीति थाय तथा धर्म उपर आस्तावधे. जो शुक्रना घरमां होय तो उदार, परोपकारी तथा यशस्वी थाय. चंद्रना स्थानमां होय तो स्त्रीसाथे कलह करे अने व्यापारमां नुकसान थाय. जो सूर्यनी राशिमां होय तो राजा तरफथी मान मले पण स्त्री व्यभिचारिणी मले. जो शनिना स्थानमां होय तो अजक्ष्य वस्तुउनुं जोजन करे अने स्त्रीसाथे क्लेश थया करे.

आठमे जावे रहेला बुधनुं फल.

बुध जो आठमा जावे पोताना स्थाननो अथवा उंचनो होय तो आयुष्य लावुं थाय तथा शरीरे निरोगी रहे. जो गुरुना स्थाननो होय अने ते निर्बल होय तो स्वल्पायुषी थाय अने शरीरे रोगी रह्या करे. जो मंगलना स्थानमां होय तो दीर्घायुषी थाय अने खेतीथी लाज मेलवे. जो शुक्रना स्थानमां बेठो होय तो यशस्वी अने द्रव्यवान् थाय. चंद्रना स्थानमां होय तो रोगिष्ट तथा अल्पायुषी थाय. जो सूर्यना

स्थानमां होय तो दरिद्री थाय. जो शनिना स्थानमां होय तो कल्याणपुणी तथा देशाटन करनारो थाय.

नवमा जावे रहेला बुधनुं फळ.

जो बुध नवमा जावे पोताना स्थानमां अथवा उंचनो होय तो घणो सौभाग्यवान, देवगुरुनी भक्ति करनार तथा पुत्रना सुखवालो थाय. जो गुरुनी राशिमां होय अने ते निर्बल होय तो निर्धन अने नास्तिक थाय. जो मंगलना स्थानमां होयतो घणो शोकवालो, विद्वान् तथा पापात्र थाय. जो शुक्रना घरमां बेठो होय तो चतुर, तीर्थाटन करनार अने तपस्वी थाय. जो सूर्यना स्थानमां होय तो आस्तिक, द्रव्य उपार्जन करनार तथा पिताने सुख आपनार थाय. जो शनिना स्थानमां होय तो पिता अने धर्म उपर क्रूर करनार थाय. जो चंद्रना स्थानमां होय तो द्रव्यवान् थाय.

दशमा जावे रहेला बुधनुं फळ.

बुध जो दशमे जावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो पिता तरफथी द्रव्य मळे, राजानी कृपा थाय, व्यापारथी द्रव्य मेळवे तथा लोकोमां स-

न्मान थाय. जो गुरुना घरनो निर्बल होय तो पिता तरफथी संकट पडे, व्यापारमां नुकशान थाय अने अपकीर्त्ति फेलाय. जो मंगलनी राशिनो होय तो धर्म संबंधी कार्यो करे, द्रव्य मेलवे तथा राजानो अधिकारी थाय. जो शुक्रना स्थाननो होय तो मित्रोतरफथी लाज मेलवे, द्रव्यवान् तथा पुत्रना सुखवालो थाय. जो चंद्रना स्थानमां होय तो पितासाथे द्वेष करे. जो सूर्यना घरनो होय तो कृपालु, राजाना अधिकारवालो तथा द्रव्यवान् थाय. जो शनिना घरमां होय तो म्लेच्छो तरफथी सन्मान थाय तथा द्रव्यनो लाज थाय.

अगीयारमे जावे रहेला बुधनुं फल.

जो बुध अगीयारमे जावे पोतानी राशिनो चे उंचनो होय तो अनेक प्रकारथी द्रव्य संपादन थाय अने वस्त्राजूषणो घणां मेलवे. जो गुरुना स्थाननो निर्बल होय तो बहु प्रकारे नुकशानी थाय तथा निर्धनपणुं प्राप्त थाय. जो मंगलना स्थानमां होय तो क्रोधी अने राजाना सन्मानथी द्रव्य संपादन करे जो शुक्रनी राशिमां होय तो घणी कंन्याउनो जन्म

थाय. जो चंद्रना स्थानमां होय तो व्यापारथी द्रव्य मेलवे अने रत्नोनो संग्रह करे. जो सूर्यना स्थाननो होय तो क्षत्रीयोनी कृपा थाय तथा द्रव्य मेलवे. जो शनिनी राशिमां होय तो नीच जातो तरफथी द्रव्य मेलवे.

बारमा जावे रहेला बुधनुं फल.

जो बुध बारमा जावे पोताना स्थाननो के उच्चनो होय तो धर्म मार्गे द्रव्य खर्चे अने शरीरे निरोगी रहे. जो गुरुना घरनो निर्बल होय तो घणुं द्रव्य गुमावे, शरीरे रोगी थाय. जो मंगलना स्थानमां होय तो राजकलामां कुशल थाय, चंचल तथा लोलिप्ट थाय. जो शुक्रनी राशिमां होय तो शुज मार्गे द्रव्यनो व्यय करे, विद्या तथा व्यापारथी द्रव्य मेलवे अने देवगुरुपर श्रद्धा राखे. जो चंद्रना स्थानमां होय तो मोशाल पक्षनो द्वेप करे अने शत्रुर्ज घणां थाय. जो सूर्यनी राशिमां होय तो राजानो सेवक थाय. जो शनिना स्थानमां होय तो नींच जातिनी सेवा करे तथा दुराचारी थाय.

इतिनैर्ग्रंथिके चद्रबाहुके निमित्ते बुध द्वादश भाव निरूपणो नामाष्टादशोऽध्यायः॥१८॥

अध्याय १९ मो.

(गुरुना वारे भावनुं स्वरूप.)

श्री भद्रबाहु स्वामी कहे छे-हे शिष्यों, हुं तमोने गुरुना वारे भावनुं स्वरूप कहीश.

पेहेला भावे रहेला गुरुनुं फल.

जो गुरु पेहेला भावे पोतानी राशिनो होय अथवाउंचनो होय तो ते माणस विद्वान्, पुत्रना सुखवालो, द्रव्यवान् अने राजानी कृपावालो थाय. जो मंगलना स्थानमां होय तो चलित मनवालो थाय. जो शुक्रना स्थानमां होय तो गंभीर मनवालो, अल्प प्रजावान् अने जगतमां कीर्त्तिमान थाय जो बुधना स्थानमां होयतो, स्त्रीतरफथी सुखमले अने व्यापारथी द्रव्य उपार्जन करे. जो सूर्यनी राशिमां होय तो स्वल्पायुषी थाय. जो शनिना घरमां होयतो कुटुंबसाथे क्लेश करनार, संताननां सुखेवर्जित, करेला उपकारने नष्ट करनार, देशाटन करनार, कपटी अने हंमेशा दिलगीर रहेनार तथा निर्धन थाय.

बीजाभावे रहेला गुरुनुं फल.

जोगुरु बीजे भावे पोतानी राशिनो के उंचनो होयतो धनवान्, सुखी, बुद्धिवान्, धर्मात्मा अने

दीर्घायुषी थाय. जो कुंभराशिमां होयतो निर्धन अने कुटुंबसाथे द्वेष करनारो थाय. जो मंगलना स्थाननो होयतो धैर्यवान् अने बलवान् थाय पण लोभी थाय. जो शुक्रना स्थाननो होयतो विद्वान् थाय पण कुटुंबसाथे बने नहीं. जो बुधना घरनो होयतो द्रव्यवान् थाय पण चोरी करे. अने असत्यवादी थाय. जो सूर्यना स्थानमां होय तो राजानी कृपाथी द्रव्य मेलवे पण जो नीचना स्थानमां होयतो मदिरापान करे अने कुटुंब तथा द्रव्यनो विनाश करे. तेमज पुत्ररहित थाय.

बीजाजावे रहेला गुरुनुं फल.

जो गुरु बीजाजावे पोतानी राशिनो के उंचनो होयतो कुटुंबीनुं सुखमले. उद्यमी थाय तथा पुण्यशाली थाय. जो शनिना स्थानमां होयतो कुटुंबसाथे क्लेश करे तथा आलसु थाय. जो मंगलना स्थाननो होयतो व्यापारथी लाज मेलवे तथा पुण्यशाली थाय. जो शुक्रना स्थानमां होयतो भाइओ साथे अणबनाव थाय. सूर्यना घरमां होयतो पापिष्ट अने बुद्धिवान् थाय. बुधना स्थानमां होयतो तीर्थाटन करे तथा द्रव्यवान थाय.

व्यापारमां नुकशान थाय, परदेशमां अपकीर्त्ति अने निर्धनता प्राप्त थाय. जो मंगलना स्थनमां यतो विद्वान् तथा, द्रव्यवान् थाय तथा न्य. कथी लाज मेलवे. जो शुक्रना घरमां होयतो स्त्री साये बने नही तथा द्रव्यसंबंधी चितारहे. जो बुधना स्थानमां होयतो विद्वान् तथा धर्मात्मा स्त्री मले पण तेणीनापर ते पुरुषनी अप्रीति थाय. जो सूर्यना स्थानमां होयतो व्यापारथी द्रव्यवान् थाय, देशाटन तथा खेतीथी लाज थाय.

आठमा जावे रहेला गुरुनुं फल.

जो गुरु आठमा जावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होयतो दीर्घायुषी, शरीरे निरोगी तथा द्रव्यवान् थाय अने पुनर्जवमां देवयोनिमां उत्पन्न थाय. जो शनिना स्थानमां होयतो स्वल्पायुषी तथा रोगी थाय. जो मंगलना घरमां होयतो मननो विकारी थाय. जो शुक्रना घरमां होयतो विद्वान् पण ज्ञातिथी भ्रष्ट थाय. जो बुधना स्थानमां होयतो वेश्यागामी अने शरीरे रोगी थाय. जो सूर्यना स्थानमां होयतो निर्जागी थाय.

नवमे रहेला गुरुनुं फल.

जो गुरु नवमा जावे पोतानी राशिनो के उंचनो होयतो भाग्यशाली थाय, देशाटनथी लाभ मेलवे तथा धर्मकार्य करनार अने आस्तिक थाय. जो शनिना घरमां होयतो देवगुरुनो द्वेष करे. अने निर्धन थाय. जो मंगलना घरनो होयतो पिता तरफथी द्रव्यनो लाभमले. जो शुक्रना स्थानमां होयतो पितासाथे द्वेष करे तथा देशाटन करे जो बुधना स्थानमां होयतो यशस्वी थाय. जो सूर्यना घरमां बेठो होयतो द्रव्यवान् थइ परोपकारी थाय.

दशमा जावे रहेला गुरुनुं फल.

जो गुरु दशमां जावे पोतानी राशिनो के उंचनो होयतो द्रव्यनो निधान मले, पिता तथा राजा तरफथी अने व्यापारथी द्रव्य मेलवे वली जगतमां कीर्त्ति थाय. जो शनिना घरमां होयतो पिता तरफथी दुःख थाय, राजा तथा व्यापार तरफथी नुकशान थाय अने जगतमां अपयश थाय. जो मंगलना घरमां होयतो धर्मकार्य करे, गायननो शोखीन थाय तथा यशस्वी थाय. जो शुक्रना स्थानमां होयतो घणां लोकोथी सन्मान मेलवे. बुधना स्थानमां

होयतो विद्वान् तथा कवि थाय. जो सूर्यना नमां होयतो राज्यमां अधिकारी थाय.

अगीयारमे जावे रहेला गुरुनुं फल.

गुरु अगीयारमां जावे पोताना स्थाननो के उंचन होयतो व्यापारादिकथी द्रव्य मेलवे, वस्त्रो तथ आभूषणो मेलवे, यशस्वी थाय पण जो शनिना घ रमां बेठो होयतो निर्धन थाय. जो मंगलना घरम होयतो पुत्रो तरफथी दुःख मले पण ते विद्वान अने धनवान् थाय. जो सूर्यना स्थानमां होयत अश्वादि वाहनोनुं सुखमले. जो शुक्रना घरमां हो यतो व्यापारमां लाभ अने नुकशान बन्ने थाय जो बुधना स्थानमां होयतो अपकीर्त्ति थाय.

बारमा जावे रहेला गुरुनुं फल.

जो गुरु बारमा जावे पोताना स्थाननो के उंचनो होयतो शरीरे नीरोगी रहे तथा व्यापारथी द्रव्य मेलवी धर्मकार्यमां खर्चे, रोग अने शत्रुओनो विनाश करे. जो शनिना स्थानमां होयतो शरीरे रोगथी दुःखी थाय अने शत्रुनो जय रहे. जो शुक्रना स्थानमां होयतो निर्धन तथा स्वल्प संतानवालो थाय. बुधना घरमां होयतो कामी तथा शरीरे रोगी थाय.

अने मूर्खता प्राप्त थाय. जो सूर्यना घरमां होयतो व्यभिचारी तथा उन्माद थाय. जो मंगलना घरमां होयतो व्यभिचारी थाय, शरीरे रोगी रहे अने शत्रु तरफथी जय प्राप्त थाय.

इति नैर्ग्रंथिके भद्रबाहुके निमित्ते गुरुछाद-
शभावनिरुपणो नामैकोनविंशति
तमोऽध्यायः ॥ १९ ॥

अध्याय २० मो.

शुक्रना बारे भावनुं स्वरूप.

श्री भद्रबाहु स्वामी कहेछे—हे शिष्यो, हुं तमोने शुक्रना बारे भावोनुं स्वरूप कहीश.

पेहेला भावे रहेला शुक्रनुं फल.

जो शुक्र पेहेला भावे पोताना स्थाननो के उंचनो होयतो निरोगी, विवेकी, द्रव्यवान् अने दीर्घायुषी थाय वली देशाटन करी द्रव्य मेलवे अने स्त्रीनुं घणुं सुख संपादन करे. जो बुधना घरमां होयतो कपटी, मूर्ख, रोगी तथा अपयशवालो थाय. जो मंगलना स्थानमां होयतो दीर्घायुषी, निरोगी, चतुर, रुपवान् अने पराक्रमी थाय. जो चंद्रना घरमां होयतो मध्यम प्रकारना सुखवालो तथा कामी

थाय अने वस्त्राभूषणो उपर प्रीतिवालो थाय. जो सूर्यनी राशिमां होयतो कोपी तथा कपटी थाय. शनिना स्थानमां होयतो नम्रतावालो, यशस्वी द्रव्यवान् थाय. जो गुरुना स्थानमां होयतो वान् कपटी अने शरीरे वात प्रकृतिवालो थाय.

बीजे भावे रहेला शुक्रनुं फल.

जो शुक्र बीजे भावे पोतानी राशिनो उंचनो होयतो द्रव्यवान् अने कुटुंबथी सुखी थाय, जो ते नीचनो होयतो निर्धन थाय. जो मंगलना स्थानमां होयतो लोभी तथा नम्र थाय. जो मिथुन ।। होयतो लोकोमां अप्रिय, चंचल तथा द्रव्यवान् थाय. जो चंद्रना घरमां होयतो सुखी अने स्वार्थी थाय. जो सूर्यना घरमां होयतो राज्यनी कृपाथी धन मेलवे तथा कुटुंब साथे क्लेश करे जो गुरुना स्थानमां होयतो दयालु, परोपकारी, तथा पतिव्रता स्त्रीप्राप्त थाय. जो शनिना घरमां होयतो भाइओ साथे स्नेह राखे तथा द्रव्यवान् थाय.

त्रीजे भावे रहेला शुक्रनुं फल.

शुक्र त्रीजा भावे पोतानी राशिनो के उंचनो होयतो भाइओ तरफथी सुखमले, उद्यमी थाय तथा द्र

व्यवान् थाय. जो बुधना घरमां होयतो राजाथी तरफथी दुःखी, आलसु तथा निर्धन थाय. जो मंगलना घरमां बेठो होयतो लोभी अने बुद्धिमान् थाय तथा इच्छित कार्य सिद्ध थाय. जो गुरुना स्थानमां होयतो अपमान पामे तथा राजा साथे क्लेश करे. जो चंद्रना घरमां होयतो द्रव्यवान् थाय. जो सूर्यना स्थानमां होयतो भाग्यशाली अने उद्यमी थाय. जो शनिना स्थानमां होयतो नीच माणसो पासेथी द्रव्य मेलवे.

चोथे भावे रहेला शुक्रनुं फल.

जो शुक्र चोथा भावे पोतानी राशिनो के उंचनो होयतो माताना सुखवालो थाय अने खेतीथी द्रव्ये मेलवे अने मित्रतरफथी लाभमले. जो बुधना स्थानमां थाय तो मातासाथे क्लेश करे, देशाटन करे अने मध्यम प्रकारे धनमेलवे. जो मंगलना घरमां होय तो कुटुंबनी उन्नति करे तथा विद्वान् अने द्रव्यवान् थाय. जो चंद्रनास्थानमां होय तो कीर्त्तिमान् तथा क्षमावान् थाय. जो सूर्यना घरमां होय तो बुद्धिवान् तथा पशुना व्यापारथी धन मेलवे. जो शनिनास्थानमां होय तो शूद्रोनी सेवाथी द्रव्य मेलवे.

पांचमे जावे रहेला शुक्रनुं फल.

शुक्र जो पांचमे जावे पोताना स्थाननो के उंचनो होय तो बुद्धिमान् तथा पुत्रोथी सुखी थाय. बुधना घरमां होय तो मूर्ख तथा पुत्रोथी दुःखी थाय. जो मंगलना स्थानमां होय तो राजकलामां कुशल थइ प्रधान थाय अने विद्वान् थाय. जो चंद्रना घरमां होय तो घणी पुत्रीओ थाय. जो सूर्यना घरमां होय तो घणां पुत्रो थाय तथा राजातरफथी द्रव्य मेलवे. जो गुरुना स्थानमां होय तो विद्वान्, बुद्धिवान् थाय पण पुत्रविनानो रहे. जो शनिना घरमां होय तो मूर्ख कपटी अने निर्धन थाय.

छठाजावे रहेला शुक्रनुं फल.

जो शुक्र छठाजावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो मोशाल पक्षथी सुखी थाय, शरीरे रोगी रहे तथा वेरीओ तरफथी थोडो उपद्रव थाय. जो बुधना घरमां होय तो निर्धन अने रोगी थाय. जो मंगलना घरमां होय तो कुटुंब तथा ज्ञातिमां मान पामे. जो चंद्रना घरनो होय तो शुभमार्गे द्रव्यनो व्यय करावे पण शत्रुओथी उपद्रव थाय. जो सूर्यना स्थानमां होय तो व्यसनी थइ द्रव्य गुमावे तथा

राजा तरफथी दंड थाय. जो गुरुना स्थाननो होय तो वेहेमी थाय तथा निर्धन रहे पण पुत्रो तरफथी द्रव्य मले. जो शनिनास्थानमां होय तो झेरी प्राणीथी अथवा झेरवाला पदार्थथी घात थाय.

सातमे जावे रहेला शुक्रनुं फल.

शुक्र जो सातमा जावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो व्यापारथी द्रव्य मेलवे, देशाटन करे, कीर्त्तिवालो थाय तथा कुलवान् स्त्रीमले. जो बुधना घरमां होय तो कुलटा स्त्रीमले, देशाटन करे पण निर्धन रहे. जो मंगलना घरमां होय तो शस्त्रना व्यापारथी आजीविका चलावे पण द्रव्यहीन थाय. जो गुरुना स्थानमां होय तो व्यभिचारी, द्रव्यवान् अने बुद्धिमान् थाय. जो चंद्रना स्थानमां होय तो बुद्धिवान् स्त्री मले पण ते स्त्री कुलटा होय अने राजाना कारभारीउ साथे स्नेह करावे. जो सूर्यना स्थानमां होय तो स्त्रीसाथे स्नेह न राखे. जो शनिना स्थानमां होय तो दुराचारी स्त्री मले.

आठमा जावे रहेला शुक्रनुं फल.

शुक्र जो आठमा जावे पोताना स्थाननो के उंचनो होय तो दीर्घायुषी, निरोगी अने द्रव्यवान्

थाय पण शरीरे कद्रूपो होय. जो बुधना स्थानमां होय तो अल्पायुषी, निर्धन अने शरीरे रोगी थाय. जो मंगलना स्थानमां होय तो असंतोषी तथा शरीरे रोगिष्ट होय अने मध्यम आयुष्य जोगवे. जो चंद्रना स्थानमां होय तो रोगिष्ट स्त्री मले. जो सूर्यना स्थानमां होय तो शरीरे तेजरोग थाय तथा अल्पायुषी थाय. जो गुरुना घरमां होय तो व्यभिचारी थतां पण द्रव्यवान् थाय. जो शनिना घरमां होय तो अल्पायुषी थाय.

नवमां स्थाने रहेला शुक्रनुं फल.

जो शुक्र नवमा जावे पोताना स्थाननो के अंशनो होयतो जाग्यशाली थाय, देशाटनथी द्रव्य तथा यश मेलवे, तीर्थाटन करनारो तथा पुत्रना सुखवालो थाय. जो बुधना स्थानमां होयतो निर्जागी, देशाटनमां दुःखी थनारो तथा नीच कार्य करनारो थाय. जो मंगलना स्थानमां होयतो पुत्रवान् अने स्त्रीना सुखवालो तथा दीर्घायुषी थाय. जो चंद्रना घरमां होय तो देशाटनथी द्रव्य मेलवे. जो सूर्यना स्थानमां होयतो जाग्यशाली थाय. जो गुरुना घरमां होयतो निर्जागी थाय. जो शनिना स्थानमां होयतो

परस्त्रीलंपट थाय तथा शूद्रनी सहायताथी अल्प द्रव्य मळे.

दशमे जावे रहेला शुक्रनुं फल.

शुक जो दशमे जावे पोतानी राशिनोके उंचनो होयतो राज्यतरफथी द्रव्य मळे तथा यशवालो थाय. जो बुधना घरनो होयतो पिता तरफथी दुःख मळे, चाकरी करी आजीविका चलावे. जो मंगलना स्थानमां होयतो इछित कार्य सिद्ध थाय. जो चंद्रना स्थानमां होयतो धर्मी तथा सुखी थाय. जो सूर्यना स्थानमां होय तो राजानी स्वल्प कृपा थाय, पण छेवटे तेनाथी विघ्न थाय. जो गुरुना घरमां होय तो कुलने तारनार तथा यशस्वी थाय. जो शनिना घरमां होय तो बहु द्रव्यवान् थइ राजानी कृपा मेलवे.

अग्यारमे जावे रहेला शुक्रनुं फल.

जो शुक्र अग्यारमे जावे पोतानी राशिनोके उंचनो होयतो बुद्धिवान् तथा पुत्रना सुखवालो थाय. जो बुधना स्थाननो होयतो निर्धन थाय. मंगलना स्थाननो होयतो राजकलामां कुशल तथा द्रव्यवान् थाय. जो चंद्रना स्थानमां होयतो दयालु थाय. जो सूर्यना स्थानमां होय तो वाहनोनुं सुख थाय. जो

गुरुना घरमां होयतो पुत्रवान् तथा द्रव्यवान् थाय. शनिना घरमां होयतो म्लेच्छोथी द्रव्य मळे.

वारमे भावेरहेला शुक्रनुं फल.

शुक्र वारमा भावे पोतानी राशिनोके उंचनो होयतो मोशालथी लाभ मळे तथा द्रव्यवान् थाय. जो मंगलना स्थानननो होय तो निर्धन अने व्यसनी थाय. जो चंद्रना घरमां होय तो व्यभिचारमां सर्व द्रव्य गुमावे. जो बुधना स्थानमां होयतो उडाउ थाय. जो गुरुना घरमां होयतो पुनर्भवमां देवगति मेलवे तथा शुभमार्गे घणुं द्रव्य वापरे. जो शनिना स्थानमां होयतो चोरथी अथवा अग्निथी द्रव्यनो नाश थाय. जो सूर्यनी राशिमां होय तो निर्धन थाय.

इति नैर्ग्रथिके भद्रबाहुके निमित्ते शुक्रद्वादश भाव निरुपणो नाम विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

अध्याय २१ मो.

(शनिनावारे भावनुं स्वरूप)

श्रीभद्रबाहुस्वामी कहेछे–हे भिक्षुओ, हुं तमोने शनिना वारे भावनुं स्वरूप कहीश.

प्रथम भावे (लग्ने) रहेला शनिनुं फल.

जो शनि प्रथम भावे पोताना स्थानोके उंचनो

होय तो ते पुरुष स्वरूपवान् थाय तथा नगरनो स्वामी, द्रव्यवान् अने पितानी कृपावालो थाय. जो मंगलना स्थानमां होय तो कद्रुपो, तथा निर्धन अने रोगी थाय. जो शुक्रनास्थाने होयतो वायुना रोगवालो थाय पण ते शुभ कृत्यो कर्या करे. जो बुधना स्थानमां होयतो पुत्र उपर द्वेषी थाय. जो चंद्रना घरमां होयतो मातानो द्वेष करे. जो सूर्यना स्थानमां होयतो पितापर क्रोध करे. जो गुरुना घरमां होय तो सज्जानो उपर क्रोध राखे तथा निद्राहारी थाय.

बीजा भावे रहेला शनिनुं फल.

शनि जो बीजे भावे पोतानी राशिनोके उंचनो होयतो द्रव्यवान् थाय. जो मंगलना घरनो होयतो कुटुंबसाथे द्वेष करे. जो शुक्रना स्थानमां होयतो दरिद्री थाय. जो गुरुना स्थानमां होय तो लोची थाय तथा दीर्घ आयुष्य जोगवे. जो बुधना घरमां होय तो निर्धन थाय. जो चंद्रना घरमां होयतो कुटुंबनो द्वेषी थाय. जो सूर्यनी राशिमां होय तो रोगिष्ट अने दरिद्री थाय.

त्रीजे भावे रहेला शनिनुं फल.

शनि जो त्रीजे भावे पोताना स्थाननोके उंचनो

होयतो उद्यमी तथा द्रव्यवान् थाय. जो मंगलना स्थानमां होयतो कुटुंबरहित तथा निर्धन थाय. जो शुक्रना घरमां होयतो पराक्रमी थाय, जो बुधना घरमां होयतो वेहेनोथी लाभ मले. जो गुरुना स्थानमां होयतो भाइओ साथे द्वेप करे. जो चंद्रनी राशिमां होय तो उद्योगी तथा संतापी थाय. जो सूर्यना घरमां होयतो कुटुंबसाथे द्वेप करे अने मजुरी करी आजीविका चलावे.

चोथा भावे रहेला शनिनुं फल.

जो शनि चोथाभावे पोतानी राशिनोके उंचनो होय तो माताना सुखवालो तथा खेतीथी द्रव्य उपार्जन करे. जो मंगलना स्थानना होय तो निरुद्योगी तथा मित्रो साथे क्लेश करनारो थाय. जोशुक्रना घरमां होय तो माताथी दुःख थाय. जो बुधना स्थानमां होयतो निर्धन थाय. चंद्रना घरमां होयतो माता तथा मित्रथी सुखमले. सूर्यना स्थानमां होयतो मातापितानो घात करे. जो गुरुना घरमां होयतो भाग्यशाली थाय, खेतीथी द्रव्य मेलवे,देशाटन करे तथा मातानुं सुखमले.

पांचमाभावे रहेला शनिनुं फल.

शनि जो पांचमा भावे पोताना स्थाननोके उंचनो

होयतो उत्तम बुद्धिवालो तथा पुत्रना सुखवालो थाय. जो मंगलना स्थाननो होयतो मूर्ख तथा पुत्रविनानो थाय. जो शुक्रना स्थानमां होयतो निर्धन थाय अने दत्तकपुत्रथी सुखमले. जो बुधना घरमां होयतो घणी पुत्रीउं थाय. जो चंद्रना स्थानमां होयतो कपटी थाय. जो सूर्यना घरमां होयतो राजकला शीखे. जो गुरुना घरमां होयतो पुत्री तथा द्रव्यनी चिंताथाय.

छठे भावे रहेला शनिनुं फल.

शनि छठे भावे पोतानी राशिनोके उंचनो होय तो निरोगी थाय. मंगलनाघरमां होय तो रोगिष्ट तथा शत्रुवालो थाय. जो शुक्रना स्थानमां होयतो द्रव्यवान् थाय पण ज्ञातिनो द्वेष थाय. जो बुधना घरमां होयतो निर्भागी स्त्रीमले पण राजानी प्रीति थाय. जो चंद्रना स्थानमां होयतो रोगी थाय. जो सूर्यना घरमां होयतो मोशालपक्ष साथे द्वेष थाय. जो गुरुना घरमां होयतो राजानो अधिकारी थाय पण तेथी अल्प द्रव्य मले.

सातमा भावे रहेला शनिनुं फल.

जो शनि सातमा भावे पोतानी राशिनोके उंचनो होयतो स्त्रीनुं सुख मले, व्यापारथी द्रव्य मेलवे. जो

मंगलना घरमां होयतो कुलटा स्त्रीमले, देशाटनथी द्रव्यनी हानि थाय. जो शुक्रना स्थाननो होयतो शरीरे रोगी रहे तथा स्त्री कद्रूपी मले. जो बुधना घरमां होयतो स्त्रीवेश्या जेवीमले. जो चंद्रना स्थानमां होयतो पोते तथा स्त्रीवंने व्यभिचारी थाय जो सूर्यना घरमां होयतो दरिद्री थाय. जो गुरुना घरमां होयतो कामी थाय.

आठमाभावे रहेला शनिनुं फल.

शनि जो आठमाभावे पोतानी राशिनोके उंचनो होयतो दीर्घायुषी थाय. मंगलना घरनो होयतो स्वल्पायुषी तथा रोगी थाय. जो शुक्रना स्थानमां होयतो थोडु आयुष्य भोगवे तथा निर्धन थाय. जो बुधना घरनो होयतो वेश्यागामी थाय. जो चंद्रना घरमां होयतो घणां प्रयत्नथी दुःखे करी गुजरान चलावे. जो सूर्यना घरमां होयतो गुप्त रोगी थाय जो गुरुना घरमां होयतो भिक्षाहारी थाय.

नवमे भावे रहेला शनिनुं फल.

जो शनि नवमे भावे स्वस्थाननोके उंचनो होयतो भाग्यशाली थाय. जो मंगलना घरमां होयतो निर्भागी थाय तथा देशाटन करे. जो शुक्रना घर

तो होय तो धर्मथी भ्रष्ट थाय पण परोपकारी थाय. बुधना घरनो होयतो पिताथी सुख न मले. जो चंद्रना घरनो होयतो मंदभाग्यवालो थाय. जो सूर्यना घरमां होयतो पापी थाय.

दशमाभावे रहेला शनिनुं फल.

शनि दशमाभावे पोतानी राशिनोके उंचनो होय तो मातापितानुं सुख मले, राजाथी तथा व्यापारथी द्रव्य मले. जो मंगलना घरनो होय तो राजानो दंड थाय. जो शुक्रना घरनो होय तो तीर्थाटन करे तथा लोभी थाय. जो बुधना घरनो होय तो पित्तविकार थाय. जो चंद्रना घरनो होय तो माताने रोग थाय. जो सूर्यना घरनो होय तो पिताथी दुःख थाय. जो गुरुना घरनो होय तो राजापासेथी घणुं द्रव्य मले.

अग्यारमा भावे रहेला शनिनुं फल.

शनि जो अग्यारमां भावे पोतानी राशिनो अथवा उंचनो होय तो व्यापारथी द्रव्यवान् थाय, संतान अल्प थाय. जो मंगलना घरनो होय तो सर्व प्रकारे निर्धन थाय. जो शुक्रना घरनो होय तो धनवान् थाय पण पुत्रने विघ्न थाय. जो बुधना घरनो

होय तो खेतीथी लाभ थाय. चंद्रना स्थाननो होय तो मोटो व्यापारी थाय. गुरुना घरनो होय तो विद्वान् अने द्रव्यवान् थाय.

बारमा भावे रहेला शनिनुं फल.

शनि जो बारमा भावे पोतानी राशिनो के उच्चनो होय तो निरोगी तथा द्रव्यवान् थाय पण क्रोधी होय. जो मंगलना घरनो होय तो उडाउ तथा रोगी थाय अने अकस्मात् नुकशानी थाय, जो शुक्रना घरमां होय तो ग्रहिल (घेलो) थाय, तथा रोगी थाय. जो बुधना स्थानमां होय तो शरीरे खोटवालो थाय. जो चंद्रना घरमां होय तो नेत्रमां रोग थाय तथा चिंतातुर रहे. जो सूर्यना घरमां होय तो व्यसनमां द्रव्य गुमावे. गुरुना स्थानमां होय तो शुभमार्गे द्रव्यनो व्यय करे, मोशाल तरफथी सुख मले अने शरीरे रोगी थाय.

इति नैर्ग्रंथिके भद्रबाहुके निमित्ते शनि द्वादश भाव निरूपणो नाम एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

अध्याय २२ मो.

(राहु अने केतुना बार भावनुं स्वरूप.)

श्री भद्रबाहु स्वामी कहेछे– हे भिक्षुओ, हुं तम-

ने राहु अने केतुना थाने जाणोतुं स्वरूप कहीश. ते राहु अने केतुनुं तुल्य फल जाणवुं.

पहेला भावे रहेला राहु अने केतुनुं फल.

राहु या केतु जो प्रथम भावे पोतानी राशिनो के उंचनो होय अथवा मेष, वृषभ के कर्कराशिनो होय तो दयालु थाय तथा सुखी थाय. जो राहु गुरुना स्थाननो अने केतु जो बुधना स्थाननो होय तथा ते बंने तुला, वृश्चिक, मकर के कुंभराशिना होय तो पोते मृत्यु पामे अथवा रोगी थाय. जो तेम न थाय तो संतानो मृत्यु पामे. जो सूर्यना स्थाननो होय तो मुखना उपांगोनुं छेदन थाय.

बीजे भावे रहेला राहु तथा केतुनुं फल.

बीजे भावे राहु या केतु पोतानी राशिनो के उंचनो होय तो द्रव्यवान् अने कुटुंबवालो थाय. जो राहु गुरुना स्थाननो अने केतु बुधना स्थाननो होय तो निर्धन अने पुत्रहीन थाय. जो मंगल, शनि के सूर्यना स्थाननो होय तो संताननुं दुःख थाय तथा चिंतातुर रहे. अने स्त्री ये मले. जो चंद्र के शुक्रना घरमां होय तो शरीरे छेदनभेदन थाय.

त्रीजे भावे रहेला राहु तथा केतुनुं फल.

जो राहु के केतु त्रीजे भावें पोतानी राशिनो के उंचनो होय तो भाइर्नुं सुख मले तथा द्रव्यवान् थाय. जो राहु गुरूना घरमां अने केतु बुधना घरमां होय तो भाइर्नो नाश करे तथा आलसु थाय. जो मंगल, सूर्य अने शनिना घरमां बेठो होय तो कुटुंबनुं सुख नष्ट थाय, शरीरे रोगी थाय. जो शुक्रके चंद्रना स्थानमां होय तो उद्यमी तथा द्रव्यवान् थाय.

चोथा भावे रहेला राहु तथा केतुनुं फल.

जो राहु वा केतु चोथा भावे पोतानी राशिनो के उंचनो होय तो घणां आभूषणो मले. जो गुरूना घरनो राहु अने बुधना घरनो केतु होय तो निर्धन थाय. जो मंगल, शनि के सूर्यना घरमां होय तो मातानु सुख मले, स्त्रीथी सुखी थाय तथा राजापासेथी घणुं द्रव्य मले. जो शुक्र के चंद्रना घरमां होय तो मित्रोथी नुकशानी थाय.

पांचमा भावे रहेला राहु तथा केतुनुं फल.

जो पांचमा भावे राहु तथा केतु पोतानी राशिनो के उंचनो होय तो दुष्ट बुद्धिवालो पण पुत्रोना सुखवालो थाय. जो गुरूना घरनो राहु अने बुधना

घरनो केतु होय तो मूर्ख थाय तथा संतानथी दुःखी थाय. जो मंगल, सूर्य के शनिना स्थानमो होय तो स्वल्प संतानवालो, देशाटन करनारो तथा राजानी सेवा करनारो थाय पण सर्पथी पुत्रने उपद्रव थाय. जो शुक्रचंद्रना घरनो होय तो गरमीना रोगवालो, कपटी अने अपुत्र थाय.

छठे जावे रहेला राहु तथा केतुनुं फल.

राहु वा केतु जो पोतानी राशिनो के उंचनो होयतो रोगनो नाश थाय. जो गुरुना घरनो राहु अने बुधना घरनो केतु होयतो शत्रुनो नाश करे. जो मंगल, शनि के सूर्यना घरनो होयतो मोशाल पक्षथी सुखी अने धरिद्री थाय. जो शुक्र अने चंद्रना घरनो होयतो धैर्यवालो, सुखी तथा सदाचारी थाय.

सातमे जावे रहेला राहु तथा केतुनुं फल.

राहु तथा केतु जो पोतानी राशिनो के उंचनो होयतो स्त्रीनुं सुख मले तथा देशाटनथी द्रव्य मले. जो गुरुना स्थाननो राहु अने बुधना स्थाननो केतु होयतो स्त्रीना सुखरहित तथा देशाटन करनारो थाय. जो मंगल, शनिके सूर्यना घरमां होयतो

वे स्त्रीउं मलता उतां पण सुख न मले. जो शुक्र अने चंद्रना घरनो होयतो स्त्री रोगी मले.

आठमा नावे रहेला राहु तथा केतुनुं फल.

जो राहु तथा केतु पोतानी राशिनो के उंचनो होयतो मध्यम आयुष्यनो अने निरोगी थाय. जो गुरुना घरनो राहु अने बुधना घरनो केतु होयतो स्वल्पायुषी तथा रोगी थाय. जो मंगल, सूर्य अने शनिना घरमां होयतो बहु रोगी तथा दरिद्री थाय. जो शुक्र अने चंद्रना घरमां होयतो घणे कष्टे आजीविका चलावे.

नवमा नावे रहेला राहु तथा केतुनुं फल.

जो राहु तथा केतु नवमा नावे पोतानी राशिनो के उंचनो होयतो नाग्यशाली थाय. जो गुरुनो राहु अने बुधना घरनो केतु होयतो निर्नागी, देवगुरुपर द्वेष करनारो अने देशाटन करनारो थाय. जो मंगल, शनि, अने सूर्यना घरमां होयतो नीचस्त्रीनो संग करे जो शुक्रके चंद्रना घरमां होयतो स्वल्पः प्रजावालो थाय तथा धर्मी अने व्यापारथी द्रव्य मेलवे.

दशमा भावे रहेला राहु तथा केतुनुं फल.

दशमे भावे जो राहु तथा केतु पोतानी राशिनो के उंचनो होयतो राजानी कृपा थाय अने कीर्त्ति संपादन करे. जो राहु गुरुना घरनो अने केतु बुधना घरनो होयतो शत्रुविनानो थाय पण पितापर द्वेष राखे. जो शुक्र अने चंद्रना घरनो होयतो राजानी कृपा थाय, मातापितातरफथी द्रव्य मले. जो मंगल, शनि अने सूर्यनी राशिनो होयतो राजातरफथी सुखी थाय.

अग्यारमा भावे रहेला राहु तथा केतुनुं फल.

राहु तथा केतु पोतानी राशिनो के उंचनो होयतो बुद्धिवान् अने पुत्रवान् थाय, व्यापारमां द्रव्य मेलवे. जो गुरुना घरनो राहु अने बुधना घरनो केतु होयतो मूर्ख, अपुत्र अने निर्धन थाय. जो मंगल, शनि अने सूर्यना घरमां होयतो कपटी, मूर्ख तथा निर्धन थाय. जो शुक्र अने चंद्रना घरनो होयतो अल्प संतानवालो तथा द्रव्यथी पूर्ण रीते सुखी थाय.

बारमे भावे रहेला राहु तथा केतुनुं फल.

जो राहु तथा केतु पोतानी राशिनो के उंचनो

होयतो लोभी, द्रव्यवान् तथा नीरोगी थाय. बुधना घरनो केतु अने गुरुना घरनो जो राहु होयतो करजदार, निर्धन अने रोगी थाय. जो मंगल शनि अने सूर्यना घरमां बेठो होयतो शत्रुरहित अल्प पुत्रवालो अने आरोग्यतावालो थाय. शुक्र अने चंद्रना घरमां होयतो नेत्रनी व्याधिथी पीडित, पापी तथा कपटी थाय तेमज रोगी तथा अल्पायुषी थाय.

इति नैमित्तिके भद्रबाहुके निमित्ते राहु केतु द्वादश भाव निरूपणो नाम द्वाविंशोऽध्यायः॥२२॥

समाप्तेयं श्रीभद्रबाहु संहिता भाषांतरसहिता.

अध्याय २३ मो.

श्रीभद्रबाहु स्वामिनाबंधु वराहमिहिरकृत–वृहत्संहिता उपरथी.

(द्रव्य निश्चयनुं स्वरूप.)

जे द्रव्यनी जे राशिओ अने जे अधिपतिओ कहेला छे, ते उपरथी ते ते द्रव्य सोंघु के मोंघु जाणीशकाय छे तेथी ते जाणवाने माटे आ अध्याय कहेवामां आवशे.

मेष राशिना द्रव्यो.

वस्त्रो, कांबलाओ, ऊण, मसूर, गोधुम, गुंद, जव,

स्थलउपर थनारी औषधीओ अने सुवर्ण–आ पदार्थो नो अधिपति मेष राशिछे.

वृषभ राशिना द्रव्यो.

वस्त्रो, पुष्पो, गोधूम, शालि, जव, पाणीओ, अने बलदो,ए पदार्थोनो स्वामी वृषभ राशिछे.

मिथुन राशिना द्रव्यो.

धान्यो, शरद ऋतुमां थनारा वृक्ष विगेरे, कन्द-मूल, अने कपास–ए द्रव्योनो स्वामी मिथुन राशिछे.

कर्क राशिना द्रव्यो.

कोदरा, केला, द्रो, जाइफल विगेरे फलो, कंद-मूल, सुगंध पत्र (तमालपत्रादि) अने नालियेर ए पदार्थोनो स्वामी कर्क राशिछे.

सिंह राशिना द्रव्यो.

वाला उतरे तेवा धान्यो–शालि विगेरे मधुर विगेरे छ रसो, सिंह विगेरे प्राणीओना चर्म अने गोल ए द्रव्योनो स्वामी सिंह राशिछे.

कन्या राशिना द्रव्यो.

अलसी, कलाय (वटाणा) कलथी गोधूम, मग, वाल–फालर अथवा शींगवाला धान्यो–ए द्रव्योनो स्वामी कन्या राशिछे.

तुलाराशिना द्रव्यो.

अडद, जव, गोधूम, अने सर्षव–ए पदार्थोनो स्वामी तुला राशिछे.

वृश्चिक राशिना द्रव्यो.

शेलडी, जल छांटवाथी उतरे तेवी वेलना इत्यादि, लोहखंड, कांसु, मेंढा, वकरा, अने ते संबंधी पदार्थोनो स्वामी वृश्चिक राशिछे.

धनु राशिना पदार्थो.

अश्व, लवण, वस्त्रो, शस्त्रो, तल, धान्य अने मूली आ–ए द्रव्योनो स्वामी धनु राशिछे.

मकर राशिना पदार्थो.

वृक्षो, गुछो, (अवसर वगर फुटेले) लताओ, वल्लीओ, पाणी पाइ ने उछेराय तेवा, शेलडी, सुवर्ण, काला लोढाना पदार्थो-ए द्रव्योनो स्वामी मकर राशिछे

कुंभराशिना द्रव्यो.

जलमांथी थयेला सर्व पदार्थो, सर्वजातना फलो, पुष्पो, अने जातजातना रत्नो–एसर्व द्रव्योनो स्वामी कुंभराशिछे.

मीनराशिना द्रव्यो.

कपालमांथी उत्पन्न थयेला रत्नो, (मुक्ताफल)

द्वीपमांथी उत्पन्न थयेला रत्नो, (मोती) हीराउ, घणी जातना तेल विगेरे स्निग्ध पदार्थो अने मत्स्यमांथी उत्पन्न थतां मोति वगेरे ए—सर्व पदार्थोनो स्वामी मीन राशिछे.

उपर कहेला द्रव्योनुं शुभाशुभ ज्ञान.

जो कोइ राशिने चोथे, दशमे, बीजे, अग्यारमे, सातमे, नवमे अने पांचमे—ए स्थानोमांथी कोइपण स्थाने जो बृहस्पति रह्यो होय तो ते उपर कहेला पदार्थोनी वृद्धि करेछे अने बीजे, अग्यारमे, दशमे, पांचमे अने आठमे—ए स्थानोमांथी गमे ते स्थाने जो बुध रह्यो होय तो पण ते ते राशिना पदार्थोनी वृद्धि करेछे जे राशिने रवि. मंगल, शनि—ए क्रूरग्रहो, जो उपचय स्थानोमां एटले त्रीजे छठे दशमे अने अग्यारमे रह्या होय अने ते बलवान् होय तेमज तेमनी उपर शुभग्रहोनी दृष्टि होयनो ते राशिना जे पदार्थो कह्याछे. ते घणां मोंघा थाय अने मेलववा दुर्लभ थाय.

जे राशिउने सौम्यग्रहो जेवाके बुध. गुरु अने शुक्र इष्ट स्थानमां रह्या होय एटले गुरु चोथा विगेरे स्थानमां, बुध बीजा विगेरे स्थानोमां अने शुक्र छठा सातमा शिवायना स्थानोमां रह्या होय अने तेउ बलवान् होयनो ते ते राशिना पदार्थो घणां मोंघा

थाय. ते अने सर्वने प्रिय थायछे. गुरु विगेरे ग्रहो चोथा विगेरे जे इष्ट स्थानो कह्याछे, ते शिवायना बीजा स्थानोमां जो रह्या होयतो तेविषे पीडा थायछे. तेम छतां पण जो तेराशि शुभग्रहोथी जोवामां आवे तो पीडा न थाय, अर्थात् ते राशिना द्रव्यो अति सोंघा के अति मोंघा न थाय. जो ते राशि क्रूरग्रहोथी जोवामां आवे तो उपर कहेलाथी विपरीत फल थाय.

इति श्रीभद्रबाहु स्वामि बंधु श्रीवाराह मिहिर कृतौ द्रव्यनिश्चयो नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥२३॥

अध्याय २४ मो.

अर्घकांडाध्याय एटले वस्तुओना भाव जाणवा विषे.

अतिवृष्टि, उल्कापात, परिवेष, सूर्यचंद्रनुं ग्रहण, सूर्य चंद्रनी सामे थतुं परिधिनुं मंगल, रजनुं उडवुं, काकल पडवी, दिशाओमां दाह थवो अने गंधर्व नगर विगेरे उत्पातो प्रत्येक मासे अमावास्या अने पूर्णिमाने दिवसे अवलोकन करवा, ते जोइने सूर्यने विषे राशिओने आधारे दरेकमासे ते ते वस्तुओना सोंघा के मोंघा पणाना भाव जाणीलेवा. पूर्णिमा अने अमावास्या शिवायनी तिथिमां जो ते उत्पातो जोवामां आवे तो तेथी राजाने शस्त्र संबंधी पीडा थायछे.

मेष राशिना सूर्यमां थयेला उत्पातनुं फल.

जे मासमां सूर्य मेष राशिनो होय तेमासनी अमावास्या के पूर्णिमाने दिवसे जो उपर कहेला उत्पातमांथी कोइपण उत्पात जोवामां आवे तो ग्रीष्मऋतुमां उत्पन्न थाय तेवा धान्यनो संग्रह करी राखवो, तेने त्यार पछी चोथे मासे वेचवाथी अवश्य लाभ थायछे.

वृषभ राशिना सूर्यमां थयेला उत्पातनुं फल.

जे मासमां सूर्य वृषराशिनो होय ते मासनी अमास के पूर्णिमाए जो उपरना उत्पातमांथी कोइ उत्पात जोवामां आवे तोपण ग्रीष्म ऋतुना उत्पन्न थाय तेवा धान्यपाकनो संग्रह करवो. त्यारथी चोथेमासे तेने वेचवाथी अवश्य लाभ थायछे.

मिथुन राशिना सूर्यमां थयेला उत्पातनुं फल.

जे मासमां सूर्य मिथुन राशिनो होय, तेमासनी अमासके पूर्णिमाए जो उत्पात जोवामां आवे तो मधुर विगेरे छरस, अने शाल विगेरे धान्योनो संग्रह करी ते पछी छठे मासे वेचाण करे तो घणोलाभ आवे.

कर्क राशिना सूर्यमां थयेला उत्पातनुं फल.

जे मासमां सूर्य कर्क राशिनो होय ते मासनी

अमासके पूर्णिमाए जो उत्पात जोवामां आवे तो मध, सुगंधी द्रव्यो, तेल, घी, हलको गोल, विगेरे पदार्थोनो संग्रह करवो अने ते बीजेज मासे वेचवाथी बमणो लाभ थाय. जो तेथी ठंडे के वधारे वखत राखी वेचाण करे तो नुकशानी थायछे.

सिंह राशिना सूर्यमां थयेला उत्पातनुं फल.

जे मासमां सूर्य सिंह राशिनो होय ते मासनी अमास के पूर्णिमाए जो उत्पात जोवामां आवे तो सुवर्ण, मणि, चर्म, बखतर, शस्त्र, मोती, अने रुपानो संग्रह करवो. ते पछी पांचमे मासे वेचवाथी लाभ थाय छे. तेटला वखतनी पेहेला के पछी वेचवाथी हानि थाय छे.

कन्या राशिना सूर्यमां थयेला उत्पातनुं फल.

जे मासमां सूर्य कन्या राशिनो होय ते मासनी अमावास्या के पूर्णिमा ए जो उत्पात जोवामां आवे तो चारम, गधेडा, ऊंट अने घोडाने खरीद करी राखे तो ते पछी छठे मासे बमणो लाभ थाय.

तुला राशिना सूर्यमां थयेला उत्पातनुं फल.

जे मासमां तुला राशिनो सूर्य होय ते मासनी अमावास्या के पूर्णिमाए जो उत्पात जोवामां आवे

तो तंतु-सणना बनेला पदार्थो, मणिओ, कोचलाओ, काच अने पीला रंगना पुष्पो खरीद करवा, जो ते-ओनुं छमासे वेचाण करे तो घमणो लाभ आवे.

वृश्चिक राशिना सूर्यमां थयेला उत्पातनुं फल.

जे मासमां वृश्चिक राशिनो सूर्य होय ते मासनी अमावास्या के पूर्णिमाए जो उत्पात जोवामां आवे तो फल, कंदमूल, अने विविध आकारनारलो-नो संग्रह करवो. छमास पछी जो ते वेचोतो घमणो लाभ आवे.

धनराशिना सूर्यमां थयेला उत्पातनुं फल.

जे मासमां सूर्य धनराशिनो होय ते मासनी अमासे के पूर्णिमाये जो उत्पात जोवामां आवे तो केशर, शंख, प्रवाल, काच, अने मोती खरीद करी राखवा. छमास पछी तेमांथी घमणो लाभप्राप्त थायछे.

मकर तथा कुंभराशिना सूर्यमां थयेला उत्पातोनुं फल.

जे मासमां सूर्य मकर तथा कुंभ राशिनो होय ते मासनी अमास के पूर्णिमाए जो उत्पात जोवामां आवे तो लोखंडना पात्रो अने धान्योनो संग्रह करवो. ते पछी एक मासे वेचाण करवाथी घमणो लाभ आवेछे.

मीनराशिना सूर्यमां थयेला उत्पातनुं फल.

जे मासमां सूर्य मीनराशिनो होय ते मासनी

अमास के पूर्णिमाए जो उत्पात जोवामां आवे तो मूल, फल, जातजातना करीयाणा अने रत्नोने खरीदी लेवा. ते पछी छमासे तेने वेचवाथी घमणो लाभ प्राप्त थायछे.

इति श्रीभद्रबाहुस्वामिबंधु श्रीवाराह मिहिरि कृतो अर्घ कांडोनाम चतुर्विंशोऽध्यायः

अध्याय २५ मो.

ग्रहचारादिक उपरथी शुभाशुभ फल.

श्रीभद्रबाहु स्वामीना बंधु वराहमिहिरना मत उपरथी.

ग्रहचारनु फल.

खगोलनी जुदी वीथि (सेरी) ओ कल्पेली छे. तेमां उत्तर वीथि (नाग गज ऐरावत नामनी)मां मंगल विगेरे सर्व ग्रहो आव्या होय ते जो तेजस्वी लागे तो सर्व जगतनुं कुशल थाय,सुभिक्ष वर्ष आवे अने कल्याण थाय अने जो ते ग्रहो दक्षिणवीथि (मृग अज दहन नामनी)मां आव्या होय अनेतेजथी रहित देखाता होय तो सर्व जगतमां क्षुधा, भय, तस्कर अने मृत्युनो प्रकोप थाय छे. अने जो मध्यवीथि (मध्य मार्ग)मां रह्या होय तो मध्यम फल आपनार थाय छे.

मघा नक्षत्रमां शुक्र अने बृहस्पति पुष्य नक्षत्रमां आव्यो होय तो राजाउं रूप वगरना अनेसुखी थाय. लोको रूपवान्, निरोगी अने स्वस्थ थायछे.

बीजा चंद्र विगेरे ग्रहो जो कृत्तिका, मघा, रोहिणी, श्रवण, ज्येष्ठा ए नक्षत्रोने दक्षिणमार्गे गमन करीने अथवा ते नक्षत्रोना ताराने आच्छादन करी वा भेदीने पीका करे तो तेपश्चिम दिशानी प्रजा अन्यायथी पीकायछे. जो ते चंद्र विगेरे ग्रहो सूर्यास्त वखते पूर्वदिशामां ध्वजा पताकानी जेम रहे तो ते पूर्व दिशाना राजाउने परस्पर विग्रह-रूप थाय छे. जो ते झांखायइ आकाशना मध्यभागे ध्वजानी जेम रहे तो मध्यदेशना राजाउने पीडा थाय छे पण जो ते तेजस्वी देखायतो पीडा थाय नहीं.

ते ग्रहो जो दक्षिण दिशा तरफ देखाया होय तो दक्षिण दिशाना मेघनो क्षय थाय छे पण जोते तेजस्वी होय तो शुभ फल थाय अने निस्तेज होय तो अशुभ फल थाय. ते ग्रहो जो उत्तर दिशा तरफ देखाया होय अने अति तेजस्वी होय तो उत्तर दिशाना राजाउने शांति करनारा थाय छे अने निस्तेज देखाय तो ते राजाउने दोष उत्पन्नकरनारा थाय छे.

धूम्र, तणखा अने ज्वालाउं वाला तारार्डनुं फल.

जो ग्रह अने नक्षत्रोना ताराउंमांथी धुमाडा, ज्वालाउं अने तणखा नीकलता देखाय अथवा रज, काकल अने मेघना निमित्त शिवाय ते ताराउं जोवामां न आवे तो राजा साथे सर्वलोक नाशने पामेठे.

बे चंद्र के सूर्य देखाय तेनुं फल.

जो आकाशमां बे चंद्र जोवामां आवे तो ते काले ब्राह्मण लोकोनी वृद्धि थाय ठे. अने जो बे सूर्य जोवामां आवे तो क्षत्रिय लोकोनो मोटो संग्राम थाय.

बेथी वधारे सूर्य देखाय तेनुं फल.

जो त्रण चार विगेरे सूर्य जोवामां आवे तो आ जगतनो प्रलय थाय ठे.

केतु ग्रहना तारानुं फल.

केतुनो तारो जो सप्तर्षि, अभिजित् ध्रुव अने ज्येष्ठा नक्षत्रना ताराने स्पर्श करे तो वरसादनो नाश थाय ठे अने जो अश्लेषाना तारानो स्पर्श करे तो अनावृष्टि थाय अने लोको बालकोथी आकुल व्याकुल थइ विनाश पामी जाय.

वक्र थयेला शनिनुं फल.

कृत्तिका विगेरे सात नक्षत्रोमां जो शनि वक्र ग-

ष्टिथी चाले तो मोटो डुकाल पडे अने लिकोमां परस्पर कप उत्पन्न थाय तथा अनावृष्टि थाय. जे देशमां नक्षत्रो होय ते देशमां आ फल जाणवुं.

रोहिणीना तारने जेदनारा शनि, मंगल अने केतुनुं फल.

शनि, मंगल अने केतुनो तारो जो शकट (गाडा) जेवी आकृतिवाला रोहिणीना तारने जेदे तो अवश्य करीने आ सर्व जगत् अनिष्ट सागरमां विनाश पामी जाय.

केतुनो तारो जो हंमेशा देखाय तो तेनुं फल.

जो केतुनो तारो हंमेशा उदय पामे अथवा सर्व नक्षत्र चक्रने जेद्या करे तो आ स्थावर जंगमात्मक जगत् पूर्वे करेला अशुज फलने जोगव्या करे छे.

चंद्रना चारनुं फल.

जो चंद्र धनराशिमां होय अने ते श्यामवर्णनो अथवा लालवर्णनो देखाय तो डुकालनो जय थाय अथवा मोटुं युद्ध थाय. ते चंद्रनो गुण जे दिशामां जणाय ते दिशाउंना राजाउंने जय थाय. जो ते गायना शीगडा जेवो देखायतो गायोनो अने धान्यनो नाश करे अने जो ज्वालाथी प्रज्वलित अथवा धूंमाडा वालो देखाय तो राजानुं मृत्यु थाय.

द्वितीय (बीज) ना चंद्रनी आकृति उपरथी नीपजतुं फल.

जो बीजनो चंद्र निर्मल, स्थूल, सरखाशींगडावालो, विशाल, उंचो, उत्तर तरफ उंचा शिंगडावालो, सौम्यग्रह—बुध गुरु शुक्रोए जोयेलो अने पापग्रह सूर्य, मंगल शनिए वर्जित एवो होय अने ते नागवीथीना मार्गमां विचरतो जोवामां आवे तो लोकोने घणो आनंद आपे छे.

जो चंद्र मघा, अनुराधा, ज्येष्टा, विशाखा, अने चित्रा नक्षत्रोमां आवी दक्षिण भागनी साथे संयोग करे तो ते चंद्र अनिष्ट फलने आपे छे. जो उत्तरमार्गे संयोग करे अने उपर कहेला नक्षत्रोनी मध्यमां आवे तो ते शुभ फल आपे छे.

परिघनुं लक्षण.

सूर्यना उदय अने अस्त वखते जो आडी प्रसरती मेघ रेखा जोवामां आवे ते परिघ कहेवायछे.

परिधिनुं लक्षण.

सूर्यनी सामे जे आभास जणाय ते परिधि कहेवायछे.

दंडनुं लक्षण.

इंद्र धनुष जेवो जे सरल देखाय थाय छे ते दंड कहेवायछे.

अमोघनुं लक्षण.

सूर्यना उदय अने अस्त समये जे लांबा प्रसरतां कीरणो जणाय ते अमोघरश्मि कहेवायछे.

रोहित अने ऐरावतनुं लक्षण.

जे इंद्र धनुष्य सरल रीते स्पष्ट जणाय ते रोहित कहेवाय अने जो घणुं लांबु जणायतो ते ऐरावत कहेवायछे.

बंन्ने संध्यानुं लक्षण.

सूर्यना अर्धा अस्त समयथी आरंभी ज्यांसुधी आकाशमां ताराओ स्फुटरीते जणाय नहीं त्यांसुधी अपरसंध्या कहेवाय छे. ताराउना तेजनी निवृत्तिथी मांडी ज्यांसुधी सूर्यनो अर्ध उदय थाय, त्यांसुधी पूर्व संध्या कहेवाय छे.

उपरना चिन्हो उपरथी वृष्टिनुं ज्ञान.

आबन्ने प्रकारनी संध्याना समयमां उपर कहेला परिघ विगेरे चिन्हो जो स्निग्ध देखाय तो तत्काल तेज दिवसे वृष्टि थाय छे अने जो ते चिन्हो लुखा (झांखा) देखायतो तत्काल भय उत्पन्नथायछे.

सद्यः वृष्टि थवाना चिन्हो.

जो परिघनुं चिन्ह अखंडित होय, आकाश निर्मल देखातुं होय, सूर्यना कीरणो श्यामरंगी होय, इंद्र धनुष्य श्वेतरंगनुं देखाय, ईशानमां विजली थाय, वृक्षना जेवी आकृतीवाला मेघ–वादलां स्निग्ध–निर्मल देखाता होय अथवा ते मेघ–वादलांरुपी वृक्ष सूर्यना कीरणोथी व्याप्त होय अने सूर्यना अस्तसमये जो मेघ सूर्यने आच्छादन करे तो तत्काल चारे तरफ वृष्टि थाय.

सूर्यना चारनुं फल.

जे देशमां सूर्य खंडित थयेलो, वांको, लांबो, कृष्णवर्णनो, अल्पबिंबवालो, काकादिचिन्होथी वींधाएलोअने लुखो, (कांखो) जोवामां आवे, ते देशना राजानो घणुं करीने अवश्य नाश थाय अथवा ते देशनी प्रजामां उपद्रव आवी पडे.

इति श्रीजद्रवाहुस्वामी बंधु श्रीवाराहमिहिरकृतौ ग्रहचार (मयूर चित्रक) नामा पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

समाप्तोऽयं परिशिष्टजागः ॥